ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २५६ म अंक १५ अगस्त २०१८ (वर्ष ११ मास १२८ अंक २५६)

वि दे ह *विदेह Videha ৱিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।*

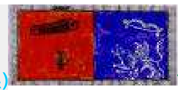
ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश



३.३.राकेश प्रेमचन्द्र‘पीसी’-हाइकू

३.४.१.अनुवादक डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु अनुदित काव्य (मूल रजनी छाबड़ा- हिन्दी) २.कवि डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु कविता

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

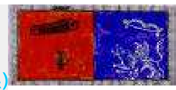
Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

२. गद्य

२.१.डॉ. योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’-उपन्यास- हमर गाम (आगाँ)

२.२.१.नारायण यादव- नसीहत २. डॉ. बचेश्वर झाक २ टा आलेख



२.३.रबीन्द्र नारायण मिश्र- तीनटा आलेख, दूटा लघुकथा आ उपन्यास नमस्तस्यै (आगाँ)

२.४.जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु (उपन्यास)- आगाँ आ दूटा लघुकथा

डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

उपन्यास- हमर गाम (आगाँ)

10. झलकी देवी

मूल नाम: अज्ञात, सब दिन लोक ओकरा एही नामसँ जनैत छैक।

पिताक नाम : रतन सदाए

जन्म तिथि: ठीकसँ नहि बूझल मुदा हमर समवयस्के अछि झलकी।

उपलब्धि: झलकी अपन माए-बापक एकमात्र सन्तान। बच्चेसँ कने गौरवाह। कहियो कोनो समवयस्क छौंड़ाकेँ गुदानलक नहि। बियाह भेलाक बाद एतहि रहि गेल। पति घर-जमाए बनि गेलखिन।

झलकी सुन्नरि अछि एखनहु। जखन ओ यौवनक देहरिपर डेग देलक तखन गाममे बहुतोकेँ मोन डोललै। कसल देह, सुगठित बाँहि आ यौवनक अन्य सब लक्षणसँ युक्त जखन ओ अल्हर भावें बाध दिस जाइत छल तखन हमरा उमेरक छौंड़ा सब ओकर पछोड़ धऽलैत छल। ओकरा लेल धन सन। एक बेर चौरमे रहमतबा कने नजदीक आबि गेलै, झलकी पाछू घूमि ओकरा तेहन चाट मारलकै जे ओ ठामहि खसि पड़ल, दाँती लागि गेलै। तकर बादसँ हमरो सबकेँ बूझल भऽगेल आ झलकी अपनहुँ आश्वस्त भेल जे कियो ओकरा देहमे भिरबाक साहस नहिए करतै।

हम जखन दिल्ली चलि गेलहुँ तखनुक घटना थिक। झलकी एकसरिये छल घरमे। एहि बातक फाएदा उठा मटिकोरबा गामक भूतपूर्व मुखियाक बेटा अपन एकटा उद्दंड संगीक संग ओकरा घरमे प्रवेश केलक बलात्कारक उद्येश्यसँ। मुदा चल गेल यमलोक। झलकी कचिया हाँसूसँ दूनूकेँ दू टुकड़ी कऽदेलकै आ घरेमे गारि देलकै। ओतबे नहि, शोणित लगले कपड़ामे रातिएमे हाँसू हाथमे लेनहि सौंसे टोलमे चिकरि कए कहि देलकै जे कियो यदि गवाही देतै तऽओकरो यमलोक जाए पड़तैक। तकर बाद पोखरिमे नहा लेलक, हाँसू धोलक आ आबि कए निश्चिन्त भऽकए सूति रहल।

ओकर एहि धमकीसँ कानूनक काज तऽरुकितै नहि। अगिला दिन थाना पुलिस ओकरा ओहि ठाम पहुँचि गेलै। झलकी घरसँ बहराएल तऽगरदनिमे सातटा कचिया हाँसूक माला पहिरने। एहन रौद्र रूप

तऽपुलिसो कहियो नहि देखने छल। दूनू पुलिस दरोगाक पाछू सुटकि गेल जेना मरखाहा साँढ़कैं अबैत देखि छोट बच्चा माएक पाछू सुटकि जाइत अछि।

ककरो हिम्मते नहि होइ ओकरा लग जेतै, आ कि घरमे किछु सर्च करतै। दरोगा ओकरा पुछलकै-

"तों रातिमे ककरो खून केलही?"

झलकी निडर भावें उत्तर देलक-

"एखन तऽदुइएटा कें कटलइयैए, जँ छौंड़ा सब आबहु नहि सीखत तऽदू सैइयोकें काटि देबै एही कचिया हाँसूसँ। जकरा जे करबाक छैक से कऽलिअए। हम ने कतहु जेबै आ ने ककरो अपना देहमे हाथ लगबए देबइ।"

दरोगा मुश्किलमे पड़ि गेल। ओ दूटा सिपाही लेने आएल छल जे खूनीकें हथकड़ी लगा कए घिचने आओत थाना, जेना ओ सब दिनसँ करैत आएल छल। एहन काली माइसँ भेंट हेतै तकर सपनोमे कोनो अन्दाज नहि छलै। एकेटा उपाय छलै जे महिला पुलिस बजाओल जाए नहि तऽई मौगी की कऽबैसत से नहि जानि।

दरोगा हेडक्वार्टरकें फोन लगेलक आ ओतहि बैसल रहल, झलकी चल गेल आङ्गन अपन काज करै लेल। ककरो हिम्मत नहि भेलै ओकरा आङ्गन ढुकै के। करीब तीन घंटाक बाद मधुबनीसँ जीपपर सवार चारिटा महिला पुलिस एलै। ओ सब जखन झलकीकें हथकड़ी लगा पकड़ै लेल गेलै, झलकी ओकरो सबकें डाँटि देलकै आ हाथ तेना ने झटकि देलकै जे एकटा महिला पुलिस खसिए पड़ल। ओ बेपरवाहि ओहि चारूसँ पुछलकै-

"तों सब मौगी छें ने। कह जे यदि रातिमे कियो तोहर इज्जत लूटै लेल तोरा लग पहुँचतौ तऽकी करबही? अपन बचाव करमे, ओकरा पाठ पढ़ेमे कि उतान भऽकए पड़ि रहमे?"

सब सकदम। ककरो कोनो जबाबे नहि फुरा रहल छलै झलकीक प्रश्नक। जबाब फुरेबो करतै तऽकोन भाषामे झलकीकें उत्तर देतै? बड़ी कालक नाटक के बाद झलकी अपनहि मोने थाना विदा भेल। कियो ओकरा देहमे नहिए भिड़लै। आगू आगू झलकी, ओहिना सातो कचिया हाँसूक हँसुली पहिरने, केश खूजल, उड़ियाइत, आ पाछू दरोगा सिपाही आ किछु गौआँ सब। जिनकर बेटा कटलनि तिनका लोक एखन तक कतहु नहि देखलक।

झलकी हाजतमे बन्द भेल, फेर मधुबनी पठा देल गेल। मोकदमा चललै मुदा सरकारी ओकील कोनो तरहक साक्ष्य जुटेबामे असमर्थ रहलाह। पूरा गाम झलकीक समर्थनमे जुटि गेल। छओ मासक बाद झलकी बरी भेल आ गाम घुरि आएल।

पछिला पंचायत चुनावमे झलकी निर्विरोध सरपंच चूनल गेल। आब ओ ब्लॉकपर आ इलाकामे झलकी देवी नामे प्रसिद्धि पाबि रहल अछि। एखन गामक पंचैतीपर ओकर रौद्र रूपक प्रभाव झलकैत रहैत छैक। फल ई जे अपराधो कम भेलैए।

हम सब लागि गेल छी प्रयास मे जे अगिला विधान सभा चुनाव मे झलकी कें एमएलए बना पटना पठाबी । हमरा सबहक विधानसभा क्षेत्र अनुसूचित जाति लेल आरक्षित छैके । ब्लॉक पर ओकर लोकप्रियता

देखैत ई लक्ष्य असम्भव नहि बुझाइत अछि । ओ अपनहुँ एहि दिस ध्यान देलक अछि आ किछु पढ़ब लीखब शुरू केलक अछि।

गामक लोकक कहब छैक जे झलकी साधारण महिला नहि, कालीक अवतार अछि। जखन ई मरत तखन एकरा सारापर काली मंदिर बनाओल जाएत।

०

जारी....

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१. नारायण यादव- नसीहत २. डॉ. बचेश्वर झाक २ टा आलेख

१

नारायण यादव

नसीहत

राधाक बेटाक वियाह बड़ धूम-धामसँ भेल छल। राधाक छोट वेटा मनीष पढ़ऽ लिखऽमे बड़ तेज छल। मैट्रीकक परीक्षामे सर्वोच्च स्थान प्राप्त कयने छल। क्रमागत इन्टर, वैचलमे सेहो नीक स्थान प्राप्त कयलैन्ह। मनीषकेँ नीक नौकरी भेट गेलैन्ह। आब हुनक माय राधा देवी व्याकुल रहय लगलीह। जे कखन मनीष्झक शादी करावी। मनीष विवाह समीपेक गाँवक गिरधारी बाबू जे शहरमे रहैत छलाह। गिरधारी बाबूक पत्नी सुमित्रा देवी पैघ विचारवान महिला छलीह। कहियो सुमित्रा वाणीसँ केकरो कष्ट नहि भेल हेतन्हि। हिनक सिद्धान्त छलैन्ह जे कम खाऊ, गम खाऊ, कम बाजू, जे बाजू नापि-तौलि कऽ बाजू। हिनका कवीर साहेव ओ वाणी हमशा दिमागमे नचैत रहैत छल जे वाणी 'ऐसी बोलिए मन का आपा खोय। औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।'

सुमित्राजीक कथन छल जे खुशी बाटनैसँ दू गुना वापस अबैत अछि आओर कनेक त्याग कयलासँ बहुकेँ पूरा घरपर राज भय जाइत अछि। एहि प्रकारक विचार सदिखन सुमित्राक मानस पटलपर नचैत रहैत छल। तँ मुहल्लावासीपर ओकर राज चलैत छल। सभक विचारी सुमित्रे छल। सुमित्रा देवीकेँ एकटा बेटी छल। जेकर नाम रूपम छलैक। रूपम सभ दिन शहरे-वाजारमे रहल कियैक तँ हुनक पिताजी शहरेमे नौकरी करैत छल। रूपम पढऽ लिखऽमे तेज छलीह। शहरक हवा-पानि लागल छल। मुदा मायक नसिहतकेँ सदिखन याद रखने छल।

रूपम जखन 20-22 वर्षक भेलीह तखन सुमित्रा देवीकेँ वियाहक लेल उड़ी-विरी लागि गेलैन्ह। जखन तखन यपमक बापकेँ खोधियबै लगलीह। लड़का वाला सभ लड़की देखवाक लेल आबय लागल। वियाहक दरम्यान कतेको लड़का वाला लड़की देखक वास्ते आयल। कतेककेँ लड़की नहि पसिन भेलैन्ह तँ कतेककेँ

घर नहि पसिन भेलैन्ह। एक-दू साल बहुतो खोज-बीन कैल गेल। तखन एकटा संभ्रान्त परिवारक लड़का जे सरकारी नौकरी करैत छल। तकरा संग वियाह ठीक भेल आ वियाह शहरेमे भेल। बाराती वाला गामक छल। वियाह राधाक बेटा मनीषक संग सम्पन्न भेल। रूपम जे शहरक वातावरणमे पलैल-पोसैल छल। रूपम जे कॉलेजमे नाना प्रकारक प्रतियोगितामे भाग लैत छल आ प्राइज प्राप्त करैत छल। अखवारक कूपन काटि ओकरा पेपरक फार्मेटपर साटि, अखवार वालाकेँ भेटैत छल। अहूमे ओकरा वं श्रेष्ट पुरस्कार भेटलैक। आब ओ सोचय लागल जे एहेने-एहने कम्पेटिशनमे प्राइज जितलहुँ। अभिनय कय पुरस्कार हॉसिल कय ली। जे शहरमे रहय वाली ओ आब गाम-घरक आबो हवामे रहय लगलीह।

रूपम धीरे-धीरे अपनाकेँ गामक रंगमे धुलय लगलीह। ओकरा अपन मायक नसिहत याद छलैक जे 'खुशी वॉटि तँ दुगुना वापस होइत अछि' आ जँ सासुरमे कनेक त्याग करी तँ पूरे घरपर राज कय ली। ओ सोचैत छलीह जे जेहेन बहय बयार पठी ओम्हरे ओरी। तँ ने वियाहमे 51 पल्ला साड़ी जे मैके मे भेटल छल। ताहिमे सँ नीक-नीक साड़ी आधासँ अधिक सासु, ननदि निकालि लेलक मुदा ओ किछु नहि बजलीह। कयैक तँ ओकरा माय सुमित्रा देवी ओकर बाजऽ सँ रोकलक। ससुरारिक रंगमे रंगा गेल। से आब ओकरो एहि बातक पता नहि चलल।

रूपमक तुरियाक एकटा ओकर ननदि रहथिन्ह। जकर शादी-वियाह नहि भेल छल। ओकरा संग हंसी-मजाक करैत, घरक सभ काम करैत समय गुजैर रहैत छल। ननदि सेहो भाउजकेँ सभ काममे भरपुर मददमे लागल रहैत छलीह। सासुक सेवा सर्वोपरि छल। सासु राधा अपन काम-धाममे मग्न रहैत छलीह। परिवारक वातावरण स्वर्गोसँ बढ़ि कऽ भय गेलैक। परिवारक हालत एहेन भय गेल जे कोन काज कोना भय जाइत छल से ककरो पता नहि लगैत छल। राधा देवी बेटी आ पुतहुक संग खूब नीक जकाँ घुलि मिली गेल छलीह। ओकरा सभक संग ओहो दैत छलीह। सभ कियो खूब हसि मजाक करैत रहैत छल आ खूब जोड़-जोड़सँ ठहक्का दय हसैत छलीह। रूपमक ससुर पुरान विचारधाराक छलाह। तँ ठहाका सुनि दरबाजापर सँ खराम पटपटबैत आंगन अबैत छलाह। तँ सभ ठहाका बन्द भय जाइत छल। अंगना अबैत देरी दुनू ननदि-भौज नि:शब्द भय जाइत छलीह। ओ ससुरकेँ अवितहिदेरी रूपम माथापर नुआ लय चटदय पैर छूबि गोर लागि लैत छलथिन्ह। एहिपर ससुर महराजक तामस, सहानुभूतिमे बदैल जाइत छल। आ पुन: चाह पीब दरवाजापर आबि जाइत छलाह। घरमे पुतोहु अयलापर हरसठे आंगन जायव उचित नहि बुझना जाइत छल। बुढ़-पुरानकेँ दिक्कत भय जाइत छैक। गप्पो-शप्पो करत तँ ककरा संग जँ पत्नी जीवित रहैत छन्हि तँ ओकरा संग सुख-दुख बॉटि लैत छथि। जिनका पत्नी नहि छन्हि ओकर जीवन तँ पहाड़ भय जाइत छैक। महिला अपन बेटी-पुतोहु संग जीवन नीक जकाँ विता लैत छथि। मुदा बुड़हाक जीवन पहाड़ भय जाइत अछि। जँ बेसी घर-आंगन कयलक तँ नाना प्रकारक अवलट लागय लगैत छैक।

एहि प्रकारे रूपम अपन नसिहतसँ पूरा परिवारकेँ अपना कब्जामे कय लेलक। किछु दिनक वाद रूपमक पति जे सरकारी नौकरी शहरमे करैत छलाह, ओ रूपमकेँ शहर लय जेवाक जोगारमे छलाह। घरक सभ परिवारकेँ एहि बातक जानकारी भय गेलैक। सासु मॉं राधा देवी, ननदि पिंकीआ प्रिया सेहो उदास भय गेलीह। रूपम ओकरा सभकेँ उदास देखि ओकरो सभकेँ अपना साथ चलवाक आग्रह केलकन्हि। सभक मन भीतरसँ छेबे छल। सभ कियो शहर आवि गेलीह। मनीष समयसँ ऑफिस जाइत छलाह आ ऑफिससँ

समयपर अबैत छलाह। आब हुनका ने कोनो खाइक चिन्ता आ ने रिफिन चिन्ता रहैत छलैन्ह। समयसँ सभ किछु भेटि जाइत छलैन्ह। मनीषकेँ ऑफिस जेवाक बाद सासु-बहु आ ननद-भौजाईक प्रेम देखि अरोसिया-परोसिया आश्चर्य चकित रहैत छलीह। अरोस-परोसक महिला सभ रूपमक खूब प्रसंशा करय लागल। रूपम अपन प्रशंसा सुनि आर अधिक प्रेमसँ सासु-ननदिकेँ मान-दान करय लगैत छलीह। रूपकेँ अपन मायक नसीहत हर हमेशा याद रहैत छल जे खुशी बाँटलासँ दुगुना भय जाइत अछि आ कनेक त्याग कयलासँ पूरा घरपर राज भय जाइत अछि। तेँ केनो ड्रेस जे रूपमक ननदिकेँ पहिरा दैत छलथिन्ह या खरीद दैत छलथिन्ह। सासु माँकेँ अपन नीक साड़ी पहिरऽ लेल दैत छलथिन्ह आ बाजार घुमा दैत छलथिन्ह। सासु ननद अति प्रसन्न रहैत छलथिन्ह। सास-ननदिक मन मुताविक स्वादिष्ट भोजन वनबैत छलीह। विना-सासुसँ पुछने ओ कोनो काज नहि करैत छलीह। कहियो कहियो रूपमक प्रति मनीष अपन माय आ बहिनकेँ चिढ़बैत बाजैत छलाह कि माय ई रूपम जादूगरनी छौ। तोरो सभपर जादू ने कऽ दौ से संभरि कऽ रहियै। जादूक चक्करमे नहि पड़ि जइयैह। ई कहैत सभ कियो हसै लगैत दल। एहि तरहेँ रूपम सभक दिल जीति नेने छल। एहि प्रकारे सभक दिन खुशी पूर्वक वितय लागल।

आब रूपमक ननदक वियाहक चर्चा होमय लागल। पिंकीक शादी एकटा संभ्रान्त परिवारमे ठीक भेल। दुलहा कोनो नीक पदपर पदस्थापित छलाह। पिंकीक शदीमे रूपमक भूमिका बढ़िया रहल। राधा देवी रूपमकेँ अपना गलासँ लगबैत बजलीह जे बेटी भगवानक घरमे पूर्व जन्ममे नीक कर्म कयने छलहु जाहि कारणे अहाँ सन पुतहु भेटल। ईश्वर सभकेँ एहेने बहु देथिन्ह। एतबे कहलासँ रूपमकेँ होइत छलैन्ह जे हमरा पूरा सम्राज्य भेट गेल आ सासुक पैर घुबि रूपम बाजैत छलीह जे माय अहाँ सन सासु सभ बहुकेँ भेटै से हम भगवानसँ प्रार्थना करैत छी।

पिंकीक विदाईक समय रूपम बहुत कानल आ ओकरा आर्शीवाद देलक कि भवान करै जे तोरो सासु एहेने होतहुन। पिंकीक वियाहक वाद रूपमकेँ मन नहि लागय लगलैक तेँ दिनमे कैक बेर फोनसँ हाल-चाल पुछैत रहैत छलीह। शुरू-शुरूमे तेँ सभ किछु ठीक ठ्ज्ञक रहल। शुरूमे पिंकी सासु, ननद आ परिवारक सभ सदस्यक तारीफ करैत रहैत छल। किछु मिनक वाद जखन रूपम, पिंकीसँ बात करथि तेँ पिंकीक नजरिया बदलल देखलक। पिंकी ससुरालक सभ सदस्यक शिकायत करैत रहल। पिंकीक माय यानी रूपमक ससु पिंकीकेँ मोबाइलपर फुटानी वाला बात सिखबैत रहैत छलीह। जाहिसँ ओकर स्वभाव विगरि गेल छल। परिवारमे एक दोसरासँ ताल मेल, सामजस्य नहि रहल। परिवारमे धीरे-धीरे कलहक पदार्पण भय परिवार टूटि गेल। रूपम जखन पिंकीसँ सम्वाद करथि तेँ पिंकी भाषा विगरले जकाँ बुझाइन। पिंकी वाजथि-

“भाभी, सभ अहीं जकाँ नहि भय सकैत अछि।”

पिंकी घमंडी भय गेलीह। ओकरा हाकिमक घरवाली होयवाक घमंड छल। रूपम अपन माय वाली बात नसियत पिंकीकेँ कहैत छल-

“पिंकी, खुशी वाँटलासँ दुगुना होइत छैक आ थोरेक त्याग कयलासँ बहुकेँ पूरे घरपर राज भय जाइत छैक। तेँ अहाँ एहि मूल मंत्रसँ परिवारकेँ एक कय चलू।”

मुदा पिंकीक माय ओकरा पृथक-पृथक ढंगसँ घर फुटयवाक मंत्र दैत छलथिन्ह तँ ओकर पिंकीक नियतमे खोट आवि गेल छल। तँ घर नरक बनि गेल छलैक।

एक दिन रूपम चाह लय सासु राधा देवीकँ देबाक हेतु आकि रहल छलीह। जेना बुझना गेलैन्ह जे सासु माँ फोनसँ गप्प कय रहल अछि। रूपम दरवाजाक ओरमे ठाढ़ भय सभ बात सुनय लगलीह। शायद सासुकँ पिंकीसँ बात भय रहल छल। राधा देवी अपना बेटी पिंकीकँ सिखबैत छलीह जे तों अपन सासुकँ वाहर घुमयवाक हेतु नहि लऽ जैहे। जखन तू आ जमाय बाबू एक साथ रहि एक-दोसराकँ समझ। ननदि आकि सासुकँ ने अपना संग कतौ लय जो आ ने ओकरा अपना संग बैसा कऽ खाइक लेल दही। तोहर भाभी तँ सुधगर महिला छौक ओकरा सन नहि बनबाक प्रयास करिहँ।

रूपम चाहक ट्रे लय मने-मन सोचैत छली जे हमर सासु हमरा बेवकूफ आ सुधगर बुझैत अछि। रूपम चाहक ट्रेसँ चाह सासु-माँ कँ दैत बाजलि-

"किनकासँ गप्प करैत छलखिन्ह?"

राधा मिरमिराइत बाजलि-

"पिंकीसँ।"

रूपम अपन सासुक किरदानी देख नेने छल।साँझू पहर जखन रूपमक घरवला मनीषजी घर पर अयलाह, तखन सभ बात हुनका कहलथिन्ह। दुनू प्राणी विचार कयलैन्ह जे रवि दिन पिंकीक घर जाकय सभ परिवारकँ मिला-जुला दियैक आ सासु-माँकँ सेहो सभझा बुझा दियैक। राधाकँ मनीष बहुत बुझौलक आ ओकरा अपना गलतीक एहसास करौलक।
रवि दिन रूपम आ मनीष पिंकीक घरपर पहुँचल। मनीष रूपमक नसीहत कँ दोहरावैत पिंकीकँ समझौलक जे खुशी बाँटलासँ दुगुना होइत छैक आ कनेक त्याग कयलासँ पूरे परिवारपर राज भय जाइत छैक। एहि सिद्धान्तपर चलबाक नसिहत दय पिरवारक सभ सदस्यकँ मिला देलैन्ह। सभक बीच जे दू बोला छल से समाप्त करा पुन: शामे पिंकी कँ अपन मायक नसीहतक पालन करबाक आग्रह करैत घर आबि गेल।

२

डॉ. बचेश्वर झाक २ टा आलेख

डॉ. बचेश्वर झाक दूटा आलेख

एकैसम शताब्दीक प्रारंभ जनवृद्धिमे भारत प्रथम आ चीन दोसर

प्राय: कहल जाइत अछि जे 'बहुलोका: दोषा:'

भारतक विशाल जनसंख्या आ एकर लगातार वृद्धिक गति एक समस्त्रा बनि सभसँ भयावह आ विस्फोटक सिद्ध भेल अछि। जतए भारतक हेतु सर्वमान्य सिर दर्द एवम् गहींर चिन्तनक विषय बनि गेल अछि, ओतए इएह समस्या भारतमे गरीबी, वेरोजगारी, कुपोषण संगहि भूमि विखण्डन एवम् अपखण्डनक समस्याकेँ दिनानुदिन अति शोचनीय स्थितिमे पहुँचा देलक अछि।

एतबे नहि, भारत जनाधिक्यक सीमापर आबि गेल अछि। ई जनाधिकय पछिला दू दशाब्दीक आर्थिक विकासक सुखद प्रयासकेँ पकारि देलक अछि। गरीबी आ बेकारीक समस्या एकरे द्वारा पल्लवित भऽ रहल अछि।

खेदक संग कहए पड़ैत अछि जे एक ओर तँ भारी जनसंख्या हमरा सभक गरीबीकेँ बढ़ा रहल अछि तँ दोसर ओर गरीबी सेहो जनसंख्यामे वृद्धि कऽ रहल अछि। जोसेफ डी. कास्ट्रो अपन प्रसिद्ध पोथी 'Geognaphy of hunger' मे चीन, जापान आ भारतक उदाहरण प्रस्तुत करैत एहन विचार प्रगट कएल अछि। 1981 क जनगणनाक अनुसार भारतक जन संख्या अड़सठि करोड़केँ पार कऽ गेल अछि। जाहिमे आसाम, जम्मू एवम् कश्मीरक जनसंख्या शामिल नहि अछि। एक करोड़ चालिस लाख मानबक वृद्धि प्रति वर्ष भारतमे भऽ रहल अछि। देखल जाइछ जे आस्ट्रेलियाक क्षेत्रफल भारतक क्षेत्रफलसँ दोबरसँ अधिक अछि। एखन तक भारत चीनक बाद संसारमे सर्वाधिक जनसंख्याबला देश अछि। संसारक कुलजन संख्याक 15 प्रतिशत भाग भारतमे रहैत अछि। जखन संसारक कुल क्षेत्रफलक अढ़ाइ प्रतिशत भू-भाग मात्र एकरा प्राप्त छैक। तँ जौं भारतक ई जन संख्या अपन वर्त्तमान अढ़ाइ प्रतिशतक दरसँ बढ़ैत गेल तँ वींसवी शताब्दीक अन्त तक एक अरबक जनसंख्याकेँ छूबि लेत।

सन् 1831 इस्वीक बादसँ भारतक जन संख्यामे जे वृद्धि आरंभ भेल अछि ओकर गतिकेँ देखैत भारतक आजादीक बाद स्वतंत्र भारतक आर्थिक विकासक योजनामे सर्तकता बरतल गेल। इएह कारण भेल जे सन् 1952 ई.मे परिवार नियोजन नीतिकेँ सरकारी कार्यक्रमक रूपमे अपनाओल गेल आ विश्वक पहिल देश छल जे अपन आर्थिक विकासक योजनामे परिवार नियोजनकेँ स्थान देलक। एकर बावजूदो एहि कार्य-क्रमक प्रति उदासी देखल गेल जे कष्टप्रद विषय थिक। यद्यपि प्रथम आ द्वितीय पंचवर्षीय योजनामे पाँच करोड़ पैंसठि लाख टाकाक द्वारा एकर संगठन कएल गेल जाहिमे शोध, संचार एवम् केन्द्र आ राज्य सरकारक अन्तर्गत चिकित्सा सेवा प्रदान करैत राखल गेल। समय-समयपर जनगणना देशमे भेलासँ सरकार आ समाजकेँ जगाओलक। तँ तेजीसँ एहि ओर प्रयास चलल। गर्भ निरोधक प्रचार-प्रसार शुरू भेल। तेसर योजनामे 25 करोड़क लागत आयल। एहि तरहेँ बीचक तीन वार्षिक योजनामे परिवार नियोजनकेँ'King fin of the plan' मानल गेल। संगहि कार्यक्रमकेँ प्रर्याप्त राशि द्वारा Time bound एवम् Target oriented क रूपमे अपनाओल गेल।

भारतक चतुर्थ योजनामे बहुत अधिक प्राथमिकता देल गेल। एहि कार्यक्रमपर 315 करोड़ टाका खर्च कएल गेल तथापि न्यून सफलता भेटल। पाँचमी योजना 516 करोड़ टाकाक आवंटन कऽ जन्म दरकेँ 35-

30 प्रति हजार कम करबाक लक्ष्य राखल गेल जेकरा हेतु वन्ध्याकरण हेतु प्रस्तुत भेल नर-नारीकेँ तकरा चन्द्र किस्मक प्रलोभन देल गेल। एतए तक जे छठवीं सातवीं योजनामे तँ भ्रूण हत्या गर्भ-पात आदिक वैध करार कऽ देल गेल। जइसँ जनसंख्याक वृद्धिमे ह्रास आबए।

सन् 1974 ई.मे विश्व जनसंख्या नियंत्रण सम्मेलन रूमानियाँक राजधानी बुखारेस्टमे भेल। भारतक तात्कालीन परिवार नियोजन मंत्री डॉ. कर्ण सिंह ओहि सम्मेलनमे बाजल छलाह जे विश्वक गरीबी तखने दूर होयत जखन विश्वक जनसंख्यामे कमी आओत।

भारतमे जनसंख्याकेँ नियंत्रित करबाक संकल्पकेँ दोहरबैत स्व: प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधीक बीस-सूत्री कार्यक्रमकेँ परिवार नियोजनपर विशेष जोर देल गेल।

पाँचम योजनामे Minimum needs programme क अन्तर्गत स्वास्थ्य, परिवार नियोजन एवम् पौष्टिक आहारकेँ एक संग विकसित करबाक प्रयास कएल गेल। एहि समेकित योजना द्वारा बाल-मृत्युकेँ कम कऽ संगहि माताकेँ स्वास्थ बनाकए कम बच्चा उत्पन्न करबाक प्रवृत्तिकेँ जगाओल गेल। सरकार द्वारा सर्वोत्तम गर्भ-निरोधक दवाइकेँ उपलब्ध करएबाक प्रयास जारी राखल गेल अछि।

एतबे नहि, कमसँ कम मूल्यपर हरेक ठाम गर्भ निरोध उपलब्ध करेबाक व्यवस्था कएल गेल अछि। गरीब देशमे एहि कार्य-क्रमक अन्तर्गत वन्ध्याकरणक हेतु आर्थिक प्रलोभन सेहो देल जाय रहल अछि। जनसंख्या वृद्धिमे 80 प्रतिशत देहातक योगदान रहैछ। जकरा हेतु रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन आदि द्वारा प्रचार-प्रसारसँ देहाती नर-नारीकेँ नियोजन करएबाक हेतु अन्मूख कएल गेल अछि।

ऐं ई स्वीकार नहि काएल जा सकैछ। जे भारतमे परिवार-नियोजन कार्य-क्रम पूर्ण रूपेण असफल रहल, मुदा एतेक प्रयत्नक बावजूदो जनसंख्याक वृद्धि दिनानुदिन चौगुन्ना होइत जाए रहल अछि तँ लऽ कऽ ई कहल जाए रहल अछि जे अणु विस्फोट ओतेक खतरनाक नहि जतेक जनसंख्याक वृद्धि विस्फोट भऽ सकैछ।

आइ जनसंख्याक वृद्धिमे संसारक साम्यवादी देश चीन अपन जनसंख्याकेँ नियोजित करबामे कमाल हासिल कएलक अछि। हमरो सभकेँ एहिसँ प्रेरणा लेबाक चाही। 1953 ई.मे चीन अपन विकासक अभिन्न अंगक रूपमे परिवार-नियोजन लागू कएलक। एहि कार्य-क्रमक अन्तर्गत देरसँ विवाह, बच्चाक जनम्मे अन्तराल संगहि अन्तिम रूपसँ दू बच्चाक लक्ष्य जन तांत्रिक अधिकार कायम कऽ देलक। एतए तक जे विवाहक संगहि Contraceptative क प्रयोग करबाक प्रेरणा देल गेल। तेतबे नहि, मुफ्तमे Contraceptives क वितरण करा कए जनसंख्यामे ह्रास आनबाक महती प्रयास कएलक अछि। नव विवाहित दम्पतिक हेतु अनिवार्य नियम लागू कएने अछि जे Contraceptives क प्रयोग ओ लोकनि करए। एतबे नहि, बूढ़-बुढ़ानुस द्वरा सामाजिक सभामे युवक युवतीक ध्यान एकर लाभक ओर आकृष्ट करोओल जाइछ। ई कार्य-क्रम चीनमे व्यक्तिकेँ छोट परिवार राखक ओर सराहनीय कार्य कएलक अछि। छोट परिवारक प्रवृतिकेँ जगेबामे सरकारक द्वारा उठाओल गेल कानूनी प्रयास कम महत्वपूर्ण नहि अछि। पसिद्ध अर्थ शास्त्री J.Myrdalसेहो Asian drama मे चीनमे सरकार द्वारा एहि क्षेत्रमे उठाओल गेल कानूनी प्रयासक चर्चा कएलन्हि अछि। जकरा हेतु सरकार एक Grash family planning programme अपनौलक अछि ताकि 2000 ई. तक रूसक

समान जनवृद्धि शून्य प्रतिशत तक लाओल जाय सकैछ। आब ओहिठाम दू बच्चाक बदलामे एक बच्चाबला परिवारक व्यक्तिकेँ वेतनमे वृद्धि आवासीय सुविधा, संगहि पेंशन आदिमे सुविधाक प्रलोभन देल अछि।

दोसर ओर एक बच्चाक बादसँ वेतनमे आंशिक दरसँ कटौती तथा अन्य सुविधासँ वंचित कऽ देबाक नियम लागू कऽ देल गेल छैक। एहि तरहेँ चीन अपन जनसंख्याक वृद्धि गतिमे 1975 ई.मे 25 प्रतिशत प्रति हजारसँ 1979 ई.मे 18 प्रतिशत q

पुस्तक समीक्षा साकेतानन्दक

'गण-नायक'

प्राचीन परम्पराक अनुरूप साहित्यक ...... क्षेत्रमे कथाक रचना अवाध् रूपसँ भऽ रहल अछि। हर्षक विषय अछि जे मानव मोनक चिरसंपोषित अभिलाषा आइ साहित्यक अनुभूति आ विवेचनक रूपमे फलीभूत भऽ रहल अछि।

मैथिलीमे लघुकथाक विकास जतेक तीव्रगतिसँ भेलैक ताहिमे लघुकथाकेँ लोक प्रिय बनेबाक श्रेय स्व. हरिमोहन झाकेँ छन्हि।

आधुनिक साहित्यक सर्वतोभावेन गुण सम्पन्नता भारतीय अन्य कोनो भाषा साहित्यक समकक्षताकेँ मैथिलीक कथा प्राप्त करैछ। कथा, समय काल सिमित परिवेशक दृष्टिए कष्ट साध्य अछि तँ संगहि महत्वपूर्ण यथेष्ठ। इएह एक एहन विधा अछि जे दिन-प्रति-दिन प्रगतिक ओर अग्रसर, गतिशील आ उर्द्धमुख अछि।

'गणनायक'क कथाकार साकेतानन्दजी विलक्षण प्रतिभा पुरुष छथि जे अपन सारस्वत साधनासँ हिन्दी आ मैथिली साहित्यमे अक्षय कीर्ति, अशेष गौरव आ निस्सी अर्थवत्तासँ श्रीमंत कएलन्हि अछि। विभिन्न पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित रचना सभकेँ कलाविद्, समीक्षक आ विचारक निर्लाज भावसँ सराहलन्हि अछि।

विद्वान, कथा मर्मज्ञ सभ हिनक कथाकेँ साहित्यक श्रेष्ठ उपलब्धि मानि कऽ खुलेआम स्वीकृतमे अविचल हाथ उठाकए साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत भेलापर सोल्लास समर्थन कएलन्हि अछि।

'गणनायक'क कथा मानव जीवनक विसंगतिक ठोस धरातलपर ठाढ़ अछि। कथाकारक मूल चेतना, प्रगतिशील आ विचारोत्तेजक अछि। युग सापेक्ष आ लोक जीवनक एहन शास्वत चित्र अछि जे साहित्यमे अविस्मरणीय तँ रहबे करत संगहि भावी पीढ़िक हेतु प्रतिक ओर उनमुख होएबामे आत्ममंथन करक हेतु विवश करैत रहत। समीक्षक लोकनिक दृष्टिमे कथा जे हो मुदा हमरा दृष्टिमे कथा सुग चित्रकेँ अपना 'अलबम'मे समेटि कऽ चलि रहल अछि। जे आबएबला युगक ओर आँगुर उठाकए संकेत सेहो करत। हम पबैत छी लेखकक भावना एच.जी वेल्सक भावनासँ अनुप्राणित अछि। ओना तँ 'गणनायक'क कथानक

सेहो जनजीवनक एक गोट नव पक्षकेँ समक्ष अनलक अछि। धरातलपर गति लएबाक हेतु गद्यहिक मंद-चंचल चरण चलबए पड़ैछ। तेँ उपयोगिताक दृष्टिसँ ई गद्यक युग कहबैछ।

कथा कहबाक सुनबाक प्रवृत्ति लोकक रागात्मक सम्बन्ध समानान्तर चलैत आबि रहल अछि, तेँ कथाकेँ प्रागैतिहासिक कालसँ श्रृंखलाबद्ध करबाक प्रयास कएल जाइत रहल अछि। स्पष्टत: कथा आदर्शवादक खण्डहरसँ बहार भऽ यथार्थक खड़िहान दिस बढ़ि रहल अछि। सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना 'गणनायक'मे वेरोजगारी, आर्थिक विपन्नता, शोषण, चोर बाजारी, दमनात्मक प्रवृत्ति एवम् नोकरशाहीक यथार्थ चित्रण अछि।

मुख्यत: शिक्षित वर्गक मोह भंगएवम् ओकर निरीहता आ पीड़ासँ जुड़ल संघर्षक कथा कहैत अछि। कामाख्या ओहिसँ प्रबल संघर्ष करैत एक स्वाभिमानी युवक अछि। एहिठामक लेखक कामाख्याकेँ 'उपक्रम' कथा केर मुख्य पावक रूपमे उपस्थित कऽ आदर्श स्थापित कएलनि अछि, किएक तँ विपन्नताक पीड़ा झेलैत ओ कालक चारण नहि बनैत अछि। एहि कथामे जीवनक सम्मानजनक संकल्प अछि।

'आलुक विमा'कथामे प्रशासन तंत्रक विकरालताक दुस्साहसिक प्रतिरोध कृषक प्रतिनिधि जय मंगल, रामशरण आ रहमतुल्ला द्वारा देखल गेल अछि। एतबे नहि, प्रदर्शनपर उतारू आक्रोशित कृषक आ कृषक प्रतिनिधिपर पुलिस द्वारा लाठी गोली तक चलाओल जाइछ, जाहिसँ कृषक प्रतिनिधिकेँ जानसँ हाथ धोमए पड़ैछ। कथामे प्रजातंत्रक माखौल, त्रुटिपूर्ण व्यवस्थाक जिम्मेवार पदाधिकारीक विषद विर्णन करबामे लेखक निर्भिक एवम् निस्संकोच देखल गेलाह अछि।

'कचोट' कथामे जीवनक नग्न सत्य प्रतिभासित होइछ। जकर मुख्य पात्र बौआ झा छथि। जौं एहि कथामे एकओर भारतीय सम्मताक निर्मम हत्या भेल अछि तँ दोसर ओर मोनीक अव्यक्त प्रेमक पीड़ा पाठककेँ स्पन्छित करैत अछि।

'एक डेग आगू' कथामे सामन्तवादीक खूनी पंजासँ धाइल रामजीक कुरूप चित्रण अछि। सामन्ती सन्तापसँ सन्तरत जवान बेटी गुलबियाक ठानल विवाह नहि कऽ कर्जासँ मुक्त होएबाक प्रयास ओकर अग्रिम सोचकेँ समक्ष अनलक अछि। ई कथा पाठककेँ अतिसंवेदनशील बनबैत अछि।

'पकड़ वियाह'कथामे सम सामयिक विद्रुप संस्कृतिक सबाक चित्रण अछि। अभावग्रस्त मैथिलक पुत्री उम्रक सीमा टपि कए अभिभावककेँ विचार शून्य बना दैछ जकर कारण दहेज प्रथाक विकल्प रूपमे 'पकड़ वियाह'शुरूए भेल अछि। कथाकार कथामे धड़फरा कऽ रोचक आ भाव प्रधान होइतहुँ समस्याक समाधानक हेतु अल्पकालीन, असौकर्य गुझना जाइछ। कथाक परायणसँ कथा अध बटियेमे पाठककेँ छोड़ि दैछ जाहिसँ पूर्ण तृप्ति नहि होइछ।

अगिला कथा 'आब भेटने की'मे नारीक संवेदनाक सन्तप्त रूप भौतिक सुखक निरसता, प्रेम, स्नेह, दया, सहानुभूतिसँ रिक्त मर्मान्तक पीड़ाक अभिव्यक्ति अछि। ई एकटा सरल सहज रोमांटिक कथा अछि जे बड़ रोचक शैलीमे आगाँ बढ़ैत अछि। आ अन्तमे आबि समग्र रूपमे एकटा विलक्षण प्रभाव छोड़ि जाइत अछि। .... भव प्रवण्ता एवम् मधुबर विन्यास एहि रोमांटिक कथाक विशिष्ट गुण अछि। लेखक एहि कथामे माँजल मनोविश्लेषक प्रतीत होइत छथि।

'त्रिवेणी समाहार'सामाजिक बोधसँ जुड़ल कथा अछि। कथाक मुख्य पात्र भिखारी साहु सम्पूर्ण कथामे चर्चित भेल छथि। अथक प्रयास, श्रमसाध्य जीवन,साहस आ समयसँ जुझैत निर्धन लोक पूर्ण धनवान होइत

अछि, ओकर सम्पन्नतासँ सीदित गामक डाही दुष्ट पंचैती करनिहार रामेश्वार बाबूआ शिवजी सिंह अपन प्रपंचक चपेटमे आनि भिखारीक समटल आ समृद्ध परिवारकेँ कहलपूर्ण बना दैत देखल जाइत छथि। तेसर साम्यवादक दोहाइ देनिहार दरिद्र फूल झा भिखारीक दोहन गाहे-वगाहे करैत कथामे देखल जाइछ। ई कथा एकहि संग अनेक विषय वस्तु, व्यक्ति आ तत्सम्बन्धी घटनाक वस्तुत: समाहार बुझाएल मुदा मुख्य तीन परिस्थिति आ परिवेशक दिशा बोध करबैत अछि। कथा अपना-आपमे विड़ल अछि। विसंगति आ समाजक छद्मकेँ उघारि कऽ पाठकक समक्ष राखि दैछ।

'मचकल खुट्टा'लोकोक्तिक आधार लए लिखल गेल कथा अछि। खास कऽ अनमेल विवाहक कारणेँ उत्पन्न परिस्थितिक बोध कथा अछि। मचकल खुट्टासँ तात्पर्य अछि कमजोर पतिसँ। कथाकारक कमाल जौं-जौं आगाँ बढ़ैत अछि पाठककेँ कौतुहलपूर्ण बनबैत रहैछ। कथा मुख्य पात्रक रूपमे कजरैलावाली गोरि-नारि सुडौल, सुनमनी आ तारूणक तेजसँ क्षीजित मुख्यमण्डलवाली छथि, जनिक विवाह दूबर-पातर, कारी खेड़नाठ आ झाँमर मुँह संगहि विकृत बगेवानि रेलक खलासीसँ होइत कथामे देखाओल गेल अछि। नपुंसक पतिक कारणेँ तेरह वर्ष धरि दागल साँढ नि:सन्तान कजरैलावाली लोकक बीच बाँझी कहबए लगैछ। जखन बर्दास्त नहि भेलैक तँ दाबल मोन विकल्पक ओर आकृष्ट भेलै। जहिना पानि पनिबट दूढि लैछ तहिना बगलक पड़ोसी पाचो मनगर, बलगर,सुडौल सुन्दर युवक भेटि गेलासँ रमबामे भाँगठ नहि भेलै। कथाक रोचकता आरो बढ़ैत अछि जखन कजरैलावाली एक सुन्दर बालकक जन्म दऽ अपना संग पतिक दोषसँ मुक्त होइछ। एहि तरहेँ कथामे देखल जाइछ जे एक दोषसँ मुक्त होइत अछि तँ लोकापचार आ कुचर्चाक आब सद्य: भाजन बनैत अछि। खुजल मुँहकेँ ओ बन्द कऽ नहि सकैत छल किएक तँ ओकर खुट्टा मचकल रहै। अन्तिम निष्कर्षपर पहुँचैत पाठक आकर्षणक कारणेँ अचाएल रहैछ। हृदयपर स्थायी प्रभावक अनुभव करैछ।

'गणनायक'अन्तिम कथा चिन्तनीय, रोचक, समयानुकूल बदलैत राजनीतिक परिदृश्यक सटीक चित्रण अछि। एहि कथाक मुख्य पात्र नरेबाबू सामन्ती गुणग्राही छथि। चुनावमे छल-बल-कलसँ जीतैत छथि। वएह एकर गणनायक थिकाह। अपन आधार सीढ़ी छीतन दासकेँ बिसरि जाइत छथि। छीतन दास हरिजनक माइनजन (मुखिया) अपन हानियोँकेँ ताकपर राखि हिनका चुनावमे एड़ी-चोटी एक कऽ दैत अछि, चारि कट्ठा जमीनक त्रासदीक कारणेँ ओ डिल्ली अन्नजल तेजि कोनहुना जाइत अछि। ओतए विस्फारित आँखिसँ नरेबाबूकेँ दूढ़ि हिनका राजकीय आवासपर पहुँचैत अछि, दुलर्भ भेँट जखन होइत छैक तँ सुख-सुन्दरीक अठखेल कएनिहार, नरेबाबू छीतन दासक व्यथाकेँ सुनबाक बदला डाँट-फटकारसँ नकारि कऽ दैत छथि। एहि तरहेँ कथामे छीतन दासक अवहेलना हैब, अनभुआर, अनपढ़ मैथिल छीतन दासक दिल्लीसँ आपसीक गुंजाइश कथामे नहि हैब पाठककेँ संदेहक सीमामे बान्हैत अछि। कथा शिक्षाप्रद संग-संग वर्तमान समयक गणनायकक रंग बदलैत चरित्रक प्रण्ट चित्र कथा थिक।

समस्त कथाक परायणसँ सुस्पष्ट प्रतीत होइछ जे समाजवाद, साम्यवाद वर्तमानकालीन सांस्कृतिक परिवेश, राजनैतिक संरचना आर्थिक परिस्थितिक ठोस धरातलपर आधारित एहन शास्वत भावनासँ जनमानसकेँ अवगत करौलन्हि अछि जे संजीविनी बुटि बनिकए प्रगतिशील साहित्यकारक हेतु आदर्श उपस्थित करैत अछि।

हिनका रचनामे यथार्थवाद नहि अपितु यथार्थ अछि। हिनक पात्र काल्पनिक भऽ सकैए, मुदा कल्पनाशीलताक कायामे कटुजीभ लगाओल गेल अछि तथापि क्रान्तिकारी आ यथार्थमयी छन्हि। संगहि संग वर्त्तमान समयक चोट, बढ़ैत सभ्यताक रंग, जमानाक क्रुर थापड़ आ समग्र जीवनक कटु-मधु अनुभवकेँ विवेकक तराजूपर तौलि कऽ उकेरल गेल अछि। भाषाक सहजता, शिल्पगत वैशिष्ट्य हिनक कथाक अपन फराक पहचान बना दैत अछि। कथाक कलात्मकता पाठकक अन्तस्थलकेँ छुबि लैत अछि।

मिथिला मैथिलक मानदण्डकेँ नव-नव सौवर्णी प्रतिभासँ मढ़बाक महनीय गुण साकेतानन्दजीमे पाओल जाइछ। निष्पक्ष भावेँ स्वीकार करए पड़ैछ जे शण्य-श्यामल सधन आग्रहुज लोक कलाक आर्वजक सम्पदासँ संरक्षित कोसी, कमला, गण्डकी आ वागमतीक पावन जलसँ अभिसिंचित एवम् विभिन्न वन सम्पदासँ आच्छादित मिथिला भूमि जतेक श्रीसम्पन्न रहल अछि, प्रतिभाक दृष्टिए सेहो एहि क्षेत्रक प्रतिस्पर्धी कतहु होअए से अनुपम जकर साकेतानन्दजी प्रत्यक्ष प्रमाण स्वरूप छथि।

अपन प्रतिभाक प्रकाश विस्तृत कऽ प्राचीन कथाकारसँ सर्वथा भिन्न कथाक रचना कएल अछि। भाव, भाषा, संवेदनशीलता आ सम्प्रेषणीयताक संग भाव संग्रहण अभिव्यक्तिक दृष्टिसँ यथार्थकेँ कथा वस्तुसँ जोड़बाक दुस्साहस कथा कलाकेँ नव आयाम देलक अछि।
कथा कर्मीक हेतु एक आदर्शक उपस्थापना थिक। साकेतानन्द जीक रचनाक एहि विशिष्टताक आकलन प्रस्तुत करब सलाध्य नहि अपितु तथ्यकथन अछि। एकहि शब्दमे हिनका शलाध्य तँ अनाआसे उपलब्ध भेल छनि। तथास्तु।। q

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

रबीन्द्र नारायण मिश्र- तीनटा आलेख, दूटा लघुकथा आ उपन्यास नमस्तस्यै (आगाँ)

रबीन्द्र नारायण मिश्र

रबीन्द्र नारायण मिश्रक

तीनिटा आलेख-

गया गेल रही

बहुत दिन सँ माएक बारंबार सपना अबैत रहैत छल। एहि सपना सभक रहस्य नहि बुझा रहल छल। तथापि मोनमे भेलजे गया चली, पिण्डदानक बड़ महत्व सुनैत छी। ओहिठामपिण्डदान केला पर पितरसभ मुक्त भए जाइत छथि।मुक्त भेल पितरसभ अपन वंशजकें आशीर्वाद दैत छथि जाहिसँ सभककल्याण होइत अछि।पंडितजीसँ गप्प कए गया जेबाक दिन तकौलहुँ।विचार विमर्षक बाद फरबरीक अन्तमे, २५ फरबरीकेँ जेबाक कार्यक्रम बनल, आपसी २८ फरबरीक।तिन मास पूर्बे रेल टिकटक आरक्षण करौलहुँ।

क्रमशः गया जेबाक समय लगीच आबि रहल छल।चिन्ता रहए जे कोना की करी।कखनो काल होइत जे एखन स्थगितकए दी।फेर भेल जे जखन कार्यक्रम बना लेने छी तँ ई काज कइए लेल जाए।पण्डितजीसँ परामर्श कए चीज-वस्तुक ओरिआनमे लागि गेलहुँ।मुदा सभसँ चिन्ता छल पणडासभसँ कोना निपटल जाएत? सुनैतरही जे ओहिठाम टीशनेपरसँ पणडाक आदमीसभ घेर-बार शुरु कए दैत अछि।गयामे रहबाक चिंता सेहो होइत छल।संयोगसँ ओहि दिन हमर मित्र मिसरजी भेटि गेलाह।ओ पहिने गया पिंडदान हेतु गेल रहथि।हुनकर परिचित पंडा आ एकटा महापात्रजीक फोन नंबर भेटल।ओ अपनो स्तरसँ पंडाजीसँ एवम् महापात्रजीसँ गप्प कए हमर काज हल्लुक कए देलाह।

महापात्रजीसँ गप्प भेल तँ सभसँ पहिने ओ कहलाह जे दिन उपयुक्त नहि अछि, पितृपक्षक समय फगुआक बाद हेतैक, तकरबाद कोनो दिनक टिकट लए सुचित करु।हम कहलिअनि जे हम तँ चारि माससँ दिन तकओने छी।

“के दिन तकलाह अछि?हमरा गप्प कराउ।”

आब कि करी? दिन तकनिहार पंडितजीविद्वान छथि, समय दए दिन तकलथि, ताहि हिसाबे टिकट लेने छी।आब जखन जेबाक समय लगीच आबि गेल तँ दोसरे बात सुनि रहल छी।पंडितजीसँ फेर गप्प कए सभ बात कहलिअनि।ओ अपन निर्णय पर दृढ़ छलाह, दिन सही अछि, महापात्र की कहताह।हमरा हुनकर बातमे दम बुजाएल। ओ निश्चय सही दिन तकने हेताह। महापात्रजीकेँ फोन कए कहलिअनि जे हमर कार्यक्रम तय अछि, दिन सही छैक, अपने ओहि दिनक हिसाबसँ उपलब्ध भए सकब कि नहि से कहू।असलमे हुनका पहिने सँ किछु काज गछल रहनि, ओ ई अवसर सेहो नहि जाए देवए चाहथि।जखन बुझा गेलनि जे हम अपन कार्यक्रम पर अड़ि गेल छी, तँ ओ तैयार भए गेलाह।कहलाह जे हुनका २६ फरबरीक उपनायन करेबाक छनि, तें २६क रातिमे गयेमे रहताह आ सभटा काज नीकसँ करा देताह।कहलाह :

“चिन्ता नहि करु। सभटा भए जेतैक।”

ओ समान सभक सूची लिखा देलाह। ओहि सूचीमे ततेक तरहक अंट-बंट सभ चीज-बस्तुक नाम छलजे एकट्ठा करबबहुत कठिनबूझाएल। तँसमानसभ आनबाक भार हुनके दए हम निश्चिन्तभेलहुँ। समान सभक वाजिब दाम देबाक आश्वासन हम देलिहनि। ओ सहर्ष ताहि हेतु तैयार भए गेलाह। तकरबाद हम अपन तैयारीक अनुसार बिदा भए गेलहुँ।ओहिसँ पहिने महापात्रजी कैबेर फोन कए आश्वस्त होइत रहलाह जे हमर कार्यक्रम पक्का अछि, ओहिमे कोनो परिवर्तन नहि भेल अछि, जे निश्चित तिथिक हमसभ ओतए पहुँचि रहल छी, जे हुनकासँ भोरे भेंट होएत।

गयासँ पंडाजीक सेहो फोन आएल।ओ हमर कार्यक्रमक बारेमे आश्वस्त होमए चाहैत छलाह।हम कतए ठहरब सेहो जानए चाहैत छलाह।इहो कहलाह जे रहबाक व्यवस्था हुनकेओहिठम भए सकैत अछि।मुदा जखन ओ एहि बातसँ आश्वस्त भए गेलाहजे हम हुनकेसँ संपर्क करब तखन निश्चिन्त भएगेलाह। संगहि कहलाह जे टीशनपर पहुँचते हुनकासँ संपर्क कएल जाएत जाहिसँ कोनो आओर पंडाक आदमी तंग नहि करत आओर हुनकर आदमी ओतहिसँ हमरा होटल लएआनत।हम अपन रहबाक व्यवस्था होटलमे केने रही।ताहि हेतु पहिनहिसँ आनलाइन आरक्षण करओने रही।हम पंडाजी ओहिठामनहि रहए चाहैत रही कारण ओतएपताने केहन की होएत, से मोनमे शंका रहए।

२५ फरबरी २०१८क साँझमे भुवनेश्वर राजधानीसँ हम आ हमर श्रीमतीजी गया विदा भेलहुँ। ओहिसँ पूर्व होटलमे फोनकए सूचना दए देल जे हमसभ भोरे पाँच बजे होटल पहुँचब।तदनुकूल हमरा सभलेल व्यवस्था कएल जाए।रस्ता भरि खाइत-पिबैत हमसभ यात्राक आनंन्द लैत रहलहुँ।सासारामक लगमे ट्रेन छलैक कि एकटा सहयात्री चिचिआ उटलाह जे गया आबयबला अछि।कैटा यात्री हुनक डाक सुनि उठि कए समान लए गेट पर आबि गेलाह।रातिक समय छलैक, क्यो जोखिम नहि उठाबए चाहए, कारण गयामे ट्रेन चारि बाजि कए बीसमिनटपर पहुँचक छल, आ जौँ राति मे सुतागेल, सुतले रहि गेलहुँ, तहन तँ गेल महिंस पानिमे परडु समेत।एहि चक्करमे चारि-पाँचबेर गेट धरि गेलहुँ आ आपस सीट पर अएलहुँ। अन्ततोगत्वा लगभगएक घंटा बाद ट्रेन गया टीशनपर पहुँचल।

हम सभ भोरे गया टीशनपर पहुँच गेल रही।होटल ग्रैंड पैलेस टिशनसँ सटले छल।ततबे लग रहैक जे टीशनपर होइत उद्घोषणा होटलमे सुनाइत छल।होटलमे पहुँचि हमरा लोकनि थोरेकाल विश्राम कएल।नित्यक्रमसँ निवृत भए बैसले छलहुँकि पंडाजीक फोन आएल।होटलक पता पुछलाह।थोरे कालक बाद ओ होटल पहुँचि हमरसभक हाल-चाल लेलाह, आ सभ तरहे निश्चिंत रहबाक हेतु कहलाह।महापात्रजीकेरातिमे अएबाक कार्यक्रम रहनि। महापात्रजी बारंबार फोनपर कहैतरहलाह जे एकभुक्त कए लेब।केस कटा लेब।हमसभ समान लए रातिए पहुँच जाएब।काल्हिसँ पिण्डदान होएत।

ओहिदिन, माने २६ फरबरीक उपयोग हमरा लोकनि वोधगया देखएमे केलहुँ।गयासँ बोधगया जेबाक हेतु टेम्पू 200 टाकामे भेटल।गयासँ बोधगयाक दूरी करीब-करीब १३ किलोमीटर अछि।रस्ताक हालत खस्ता अछि।लगबे नहि करत जे अन्तर्राष्ट्रीय महत्वक तीर्थस्थान जा रहल छी। गया शहरक हाल मधुबनी, दड़िभंगे जकाँ अछि।नाला सभ नर्कक प्रतिरूप भेल, वातावरण दुर्गंधसँ भरल।होइतजे कतए आबि गेलहुँ।करीब आधाघंटामे टेम्पु बोधगया मन्दिर लग पहुँच गेल।कनिके काल पैरे चलि हमसभ मन्दिर लग बनल मालखानामे पहुँच गेलहुँ।ओहिठाम मोबाइल फोन सभ जमा करब अनिवार्य, कारण सेसभ लए मन्दिरक अन्दर नहि जा सकैत छी।मोबाइल फोन जमा कए हमसभ कनिके आगू बढ़लहुँकि एकटा टेम्पूबला सौंसे बोधगया घूमाबक प्रस्ताव देलक, २०० टाकामे। हमसभ मानि गेलहुँ आ ओहि टेम्पूसँ आस-पासक वोध मन्दिरसभ देखए निकललहुँ।

भूटान, तिब्बत, चीन, बर्मा, श्रीलंका, वियतनाम, थाइलैंड, जापान, थाइलैण्ड आदि अनेको देश, बुद्धक अनुयायी संगठन सभ अपन-अपन बुद्धक मठ बनओने छथि।ओहिमे भव्य बुद्धक प्रतिमा स्थापितअछि। कैटामन्दिर तँ अत्यंत शोभनीय थिक।मुदा बाहर ढाकक तीन पात।सड़क सभ खण्डहर भए रहल अछि।लगबे नहि करत जे एतेकप्रमुख स्थानमे घुमि रहल छी। आश्चर्यक बात जे एतेक महत्वक स्थानक एहन उपेक्षा भेल अछि? टेम्पोबला काते-काते सभठाम घुमा-फिरा हमरासभकेँ महाबोधि मन्दिर लग उतारि देलक।मोबाइल पहिने जमा कए देने रहिऐक, तँ फोटो नहि खीचि सकलहुँ।

महाबोधि मन्दिरमे जाइत काल हाथक बैगक जाँच भेल।ओहिमे चार्जर, हेडफोन छलैक।कतबो कहलिऐक जे ओकरासबकेँ रहए दैक, मुदा नहि मानलक, गेट पर असबारसिपाही अड़ि गेल।हारिकए दोबारा ई बस्तुसभ जमा करए गेलहुँ।तकरबादे मन्दिरक परिसरमे प्रवेश भए सकलहुँ।मन्दिरक मुहथर लग एक गोटा नवका दसटकही, बीसटकही, नोटसभक गड्डी बेसी पैसा लए कए विदेशी सभके दैत देखलहुँ।आगा बढ़ला पर विदेशी तीर्थयात्री सभक भरमार देखाएल। आगन्तुक वौद्धसभक हेतु प्रसाद भिक्षापात्रमे देबाक ओरिआन भए रहल छल।अन्दर मन्दिरमे ठाम-ठाम विदेशी वौद्धसभ ध्यान कए रहल छलाह।मन्दिरमे अपूर्व शान्ति छल। एकटा गोर-नार विदेशी महिला सूतल वा ध्यानस्थ छलीह।लगैत छल जेना कोनो मुरूत पड़ल अछि। गर्भगृहमे अपार शान्ति छल।अगल-बगलमेवौद्धसभ माला फेरि रहल छलाह। ओहिठाम दर्शनकए हमसभ आपस आबि गेलहुँ।मोबाइल छोड़ौलहुँ।फेर टेम्पो पकड़लहुँ, आ आपस गया टीशन लग स्थित होटलमे आबि गेलहुँ।

प्रातःकाल नित्यकर्मसँ निवृत भए महापात्रजीकेँ फोनलगाओल।हमरा उमीद चल जे ओ रातिएमे आबि कए पंडाजी ओतए ठहरल हेताह, जेनाकि पहिने कहने रहथि।मुदा ओ तँ ट्रेनेमे छलाह।

"जहनाबाद पहुँचि गेल छी।ट्रेन लेट भए गेलैक, नहि तँ पहुँचि गेल रहितहुँ।दू घंटामे आबि जाएब।चिंता नहि करब।हम सभ समान लए कए आबि रहल छी।"

महापात्रजीकेँ विलंब होइत देखि दू-तिनबेर फोन केलिअनि। ओ तँ ट्रेनमे बैसल रहथि, बेर-बेर कहथि:

"आब लगे अछि।सभटा भए जेतैक।चिंता नहि करब। दू दिनमे सभटा काज भए जेतैक।"

आखिर ओ दूटा झोरामे समान सभ लए ९ बजे सोझे हमर होटल पहुँच गेलाह।मोन आश्वस्त भेल जे आब काज भए जाएत। नित्यकर्मसँ निवृतभए महापात्रजी हमरासभक संगे पंडाजीक ओतए बिदा भेलाह।पंडाजीक ओतए हेतु टेम्पु कएल। सड़कपर उतरि पाँच मिनट पैरे चललाक बाद हुनकर घर आएल।मधुबनी, दड़िभंगा जिलाक लोकसभक इएह पंडा छथि, से ओ कहलाह।निसान झंडापर माछक, दड़िभंगा महराजक देल।गलीक एक तरफ पुरना घर छैक, जे दड़िभंगा महाराज बनओने रहथि। तकर ठीक सामने नव पक्का घर बनल अछि, जाहि मे यात्री लोकनिक ठहरबाक इंतजाम अछि।नीकसँ बनल ओ सुविधापूर्ण कोठरीसभ अछि।से देखि भेल जे एतहुँ रहि सकैत छलहुँ।मुदा मुख्य रस्तासँ बहुत चलए पड़ैत छैक, फेर ओही वातावरणमे दिन-राति रहू।होटलमे चलि गेलाक बाद एकटा नवीनताक अनुभव होइत छल।

सभसँ पहिने पंडाजीसँ आज्ञा लेल गेल।ताहि हेतु हुनकर पैर पूजल जाइत अछि।किछु संकल्प कएल जाइत अछि, जे एतेक ने एतेक दान, दक्षिणा करब।तखन ओ आशीर्वाद दैत काज करबाक स्वीकृति दैत छथि।हमसभ आगा बढ़ैत छी।पंडाजी बएसमे हमरासँ बहुत छोट छलाह, तँ कनी कोनादनि लागल।बादमे महापात्रजीकेँ ई गप्प कहलिअनि।कहलाह जे एहिठामक अधिकारी इएह थिकाह, हिनके चलत, आदि, आदि।

पंडाजीसँ आज्ञा लए हमरा लोकनि फल्गु नदीक कछारपर पहुँचैत छी।ओतए छोटसन महादवक मन्दिर छल।सामनेमे खालि स्थानदेखि कर्म शुरु भेल।पिण्डदानहेतु हमर श्रीमतीजी गोल- गोल पिण्ड बनौलथिजतेक पुरखासभ ज्ञात, अज्ञात मोन पड़ैत गेलाह सभकेँ लेल पिण्डदान देलहुँ।जतेक काल हम पिण्डदान करैत रहलहुँ ततेक काल एकटा बुढ़िया आ दूटा छौड़ा मिलि ओतए हल्ला करैत रहल।ओकरा लेल धनि-सन।ततेक हल्ला करैत गेल जे मंत्रो सूनब पराभव रहैत छल।महापात्रजी कहलाह :

"अहिसबपर ध्यान नहि दिऔक, काजमे लागल रहू।ई सभ एहीठामक वासी छैक।"

पिण्डदानक बाद पिण्डकेँ फल्गु नदीमे पानि देखि कए फेखबाक हेतु हमर श्रीमतीजी आगु बढ़लीह।कहल गेलनि जे फल्गु नदी मे चलल एक-एक डेग आश्वमेध यज्ञक बरोबरि होइत आछि।फल्गु नदी तँ रेतसँ भरल अछि।कहि नहि एकरा नदी किएक कहल जा रहल अछि।कोनो समयमे भए सकैत अछि ई नदी रहल होएत, मुदा आब तँ निट्ठाह रेतसँ भरल अछि।बहुत आगुगेलाक बाद कनिक पानि छल जे बालुमे खधिआ कए निकलल छल, ओतहि पिण्ड फेकि ओ लौटि गेलीह।अगल-बगल ठाढ़ छौड़ासभ आओर ओ बुढ़िआ पैसा मांगए लागल आ जाबत लेलक नहि चुप्प नहि भेल।महापात्रजी आपना छोरि ककरो पैसा देल जाए ताहि हेतु तैयार नहि छलाह, मुदा कोनो उपाय नहि छल, ओकरा सभके किछु, किछु दए जान छोरा हमसभ ओतएसँ आगु बढ़ि सकलहुँ।

ओहिठामसँ आगा जएबाक हेतु भरिदिनक बास्ते २५० टाकामे एकटा टेम्पू महापात्रजी ठीक केलाह।टेम्पूबला बेस जोसिला आदमी छल।बीच-बीचमे बेस मनोरंजक मुद्रा बनाए तरह-तरहक गप्प-सप्प करैत बढ़ैत रहल।कनीकालमे हमसभ प्रेतशिला पर आबि गेल रही।ओतए पहिने घाटपर पिण्डदान भेल। ओहिसँ सटल पोखरि कही, ताल कही, जे कही, छल जे नर्कक दोसर रूप लगैत छल।ओहिमेसँ जललए पिण्डदानहोएत से सोचिएक रोँआ ठाढ़ भए गेल।खैर! जे करबाक छल से छल।ओहिमे सँ जल आनल गेल।कतेको गोटे आस-पास पिण्डदान करैत छलाह।हुनका स्थानीय लोकसभ पैसा लेल कोनो कर्म बाँकी नहि रखने छल।पाई नहि देबै आ पिण्डदान करब, भए नहि सकैत अछि।हमसभ जखनओतए पिण्डदानकए लेलहुँ

तँ एकटा बेस मजगूतगर, कारी भुसुंड लोक आबि पैसा देबाक आग्रह करए लागल जे महापात्रजीकेँ पसिन्न नहि रहनि।ओहिबातसँ ओ व्यक्ति महापात्रजीकेँ गरिआबएलागल, बात बढ़ए लागल, महापात्रजी सेहो किछु कहलखिन। ओहो चुप्प नहि रहल। महापात्रजीक गट्टा धेलक आ गरजए लागलः

"आब तूँ अबिअह झाजी! अगिलाबेर सँ टपए नहि देबह।आदि, आदि।"

बातबिगड़ैत देखि हमसभ जल्दीसँ ओकरा एकसए टाका दए जान छोड़ौलहुँ।हमसभ तँ पहिनेसँ ओकरा पैसा देबए हेतु मोन बनओने रही, कारण ओकरा दोसर सभक संगेफसादकरैत हम देखैत रही मुदा महापात्रजी रोकैत रहलाह, तकर फलो ओ भोगलाह। कनी-मनी धक्का-मुक्की तँ भेबे केलनि। ओहो पाछा नहि रहल रहथि।

तकरबाद हम सभ प्रेत शिला दिस बढ़लहुँ। चारिसए सीढ़ी चढ़ए पड़त, ताहि हेतु पालकी सेहो उपलब्धछल।दोसर विकल्प छल जे बीस सीढ़ीक बाद एकटा छोटसन स्थान छल।ओतए महादेवक मन्दिर सेहो बनल छल।ओतए कैगोटा पिण्डदान करैत छल।महापात्रजीक सलाहपर हमसभ दोसर विकल्प चुनि ओतहिँ पिण्डदान करबाक निर्णय कएल।जगह साफ चल।बैसबाक हेतु आसनी सेहो भेटि गेल।ओहिठामक पण्डाजी सरलव्यक्ति बुझेलाह।चैनसँ पिण्डदान भेल।कनिके हटिकए एकटा परिवारकेँ हवन करैत देखलहुँ।महापात्रजी कहलाह जे ओहि महिलाकेँ प्रेतबाधासँ मुक्ति दिआबक हेतु होम भए रहल छल।

पिण्डकेँ फेकबाक हेतु तएस्थानपर पहिने सँ एकटा बंगाली अधबएसू लोक अपन बेटाक अकाल मृत्युक बाद ओकर फोटोके ओतए राखि किछु- किछु कए रहल छलाह।पण्डाजी दूसए टाका देबाक आग्रह पर अड़ल छलाह, जेकर बाद ओहि मृतव्यक्तिकेँ प्रेतयोनिसँ मुक्ति भए जएतेक।ओ अपन गरीबीक बारंबार हबाला दैत एकसए टाकासँ आगा नहि बढ़ रहल छलाह,अन्तमे डेढ़सए टाकामे बात तए बेल।मंत्र पढ़ि ओहि फोटो पर फूल चढ़ौलथि।कतेक क्रूड छल ओ दृश्य, की कहू? तकर बादे हमसभ ओतए पिण्ड रखलहुँ। टाका दए जल्दीए ओतएसँ खसकलहुँ।लगेमे पीपड़क गाछक जड़मे बहुत रास मृत व्यक्तिसभक फोटो टांगल छल।महापात्रजी चिकरलाहः

"जल्दी बिना पाछा तकने आगा निकलि जाउ।"

सएह कएल।प्रेतशिलासँ उतरि हमरा लोकनि नीचामे भोजनालयमे बैसलहुँ।महापात्रजीकेँ भूख लागि गेल छलनि।ओ भोजन करताह।हमसभ राबरी खाएब। सभगोटे चाह पीब।सेसभ बिचारि हमसभ ओतए बैसलहुँ।महापात्रजी भरिपोख भोजन केलाह, फेर पावभरि खोआ सेहो देलखिन।हमहुँसभ खोआ खेबामे पाछा नहि रहलहुँ, कारण भूख जोर मारि रहल छल।भोजन तँ नहि कए सकैत छलहुँ कारण अखन आओर ठाम पिण्डदान देबाक छल।महापात्रजीके गया महात्म्यपर एकटा पोथी किनबाक हेतु एकटा बच्चा कतेक गोहरओलक, मुदा ओ नहि मानथि।हारिकए ओ एकसएसँ दाम घटबैत-घतबैत बीसटका पर आनि देलक, तैओ ओ अपन बातपर अड़ल रहथि।

"धुर्र, ई की लेब, बेकार थिक।"

अन्तमे हमरे दया आबि गेल आ हुनकासँ नुकाकए बीसटकामे गया महात्म्य कीनि लेलहुँ। भोजन करितहिँ महापात्रजीकेँ फुर्ती आबि गेल।हमसभ तुरंत टेम्पूसँ रामशिलाक हेतु विदा भए गेलहुँ। पहिने रामशिला घाटपर आ तकरबाद उपरमे बनल मन्दिरमे पिण्डदान भेल।तालाबक हालत पर नहिए चर्च करी सएह नीक।उपर मन्दिरपर कनिके चढ़लाक बाद पिण्डदेबाक स्थान भेटि गेल आ ओतहिँ पिन्डदान देल गेल।

एकरबाद काकबलिकेँ पिण्ड दैत हमसभ गोटे टीशन रोड स्थित होटल पहुँच गेलहुँ।महापात्रजी संगमे छलाह।ओ जे समानसभ अनने रहथि तकेर गोट-गोटक दाम जोड़ि दए हुनकासँ ओहि दिनक हेतु छुट्टी लेल।ओ पंडाजी ओहिठाम रहए हेतु

चलि गेलाह।काल्हि अन्तमे ब्राह्मण भोजन हेतु पंडाजीकेँ कहलिअनि।कहलजाइत अछिजे गयामे एकटा ब्राह्मण भोजन करेलापर एक हजारक फल होइत आछि।हम एगारहटाब्राह्मण भोजनक व्यवस्ता करबाक भार हुनका देलहुँ, तकर खर्चा प्रात भेने हम हुनका देलिअनि।

प्रेतशिला लगकहोटलमे जे खोआ खेने रही, से डेरा अएलाक बाद रंग देखबए लागल।ताबरतोर पेट झड़ए लागल।संगमे दबाइ छल, से खेलहुँ।कहुनाक मामला सम्हरल।दिनभरिक धमाचौकड़ीक बाद आब आराम जरूरी छल, से कएल।

प्रातभेने हमसभ विष्णुपाद मन्दिर विदा भेलहुँ। महापात्रजी ओतए पहिने पहुँचि गेल रहथि।

"पहिने घाटपर पिण्ड पड़त, तकर बादे विष्णुपाद मन्दिरमे"

महापात्रजी बजलाह।हमसभ ओतए पहुँचलहुँ। पोखरिक कातमे बैसि पिण्डदानक काज शुरु भेल।एक-दूटा युवक ओतए ठाढ़ रहथि।जहन पोखरिमे पिण्ड फेकि हमसभ जेबाक हेतु उठलहुँ कि ओ तीन गोटे भए गेल रहथि आ पैसाक मांग भेल।

"ओकरा सभकेँ किछु नहि देबाक छैक"

महापात्रजी कहैत रहलाह।से सुनि ओ सभ हुनका गरिआबए लागल, मारि करए पर उतारू भए गेल।महापात्रजी सेहो गरमाए लगलाह।तावत एकटा क्यो स्थानीय व्यक्ति अएलाह।ओ हमरासभकेँ ओतएसँ घसकबामे मदति केलाह।ओ युवकसभ महापात्रकेँ गाढ़ि पढ़ैत रहल।

तकरबाद पैरे-पैरे हमसभ विष्णुपाद मन्दिर पहुँचलहुँ।ओतए बेस गहमा-गहमी छल।बड़काटा मन्दिर, ततबे पैघ ओकर प्रागण।निचा उतरब तँ बालुसँ भड़ल फल्गु नदी।बालुए-बालुए हमसभ फल्गु नदीकेँ टपि गेलहुँ।ओकर दोसर छोड़पर सीताकुंड थिक।कहबी छैक जे भगवान राम अपन पिता दसरथके पिंडदान हेतु ओतहि आएल रहथि।पिण्डदानक चीज-वस्तुक ओरिआओन हेतु गेल रहथि कि सीताजी मंत्रपढ़ि दसरथकेँ बजा लेलखिन।सीताजी की करितथि? कहलखिन जे राम तँ पिण्डदानक चीज-वस्तुक ओरिआओन हेतु गेल छथि।मुदा दसरथ कहलखिन जे आबतँ हम आबि गेल छी।तखन सीताजी स्वयं बालुएसँ पिण्डदान केलीह।ओहिठाम सीताजीक नाम पर छोटसन मन्दिर अछि जाहिमे दसरथक हाथ बनल अछि।फल्गु नदीमे ओहिठाम कैगोटे पिण्डदानकरैत रहथि।ओतए दूटा पंडितमे दक्षिणा हेतु झगड़ा होइत रहलनि।हमसभ पिण्डदानमे लागल रहलहुँ।महापात्रजी हमर श्रीमतीजीकेँ चीज-वस्तु, गहना, टाका दान करबाक हेतु प्ररित केलाह।से सबयथासाध्य भेलनि।हुनकर कहबाक हिसाबे हमसभ समान सभ लए गेल रही।पिन्डदानक बाद उपर मन्दिरमे दर्शनकए, पिण्ड चढ़ाए हमसभ फेर बालुए-बालुए विष्णुपाद मन्दिर लग पहुँच गेलहुँ।

फल्गु नदीमे पानि नहि अछि।मुदा जँतीन-चारि हाथ गहींर कएल जाए तँ पानि भेटि जाइत छैक।तेहन कूप दू-तीन ठाम बनाओल देखाएल।यत्र-तत्र लोकसभ पिण्डदान करैत छलाह।उपर अएलाक बाद महापात्रजीकेँ चाहक तलब अएलनि।चाह आनए हमसभ उपर गेलहुँ।ताबते एकटा मुर्दाके "राम नाम सत्य है" कहैत लोकसभ ओहिठाम रखलक।किछु विध-विधान सभ केलक।तकरबाद ओकरा अन्तिम संस्कार हेतु फल्गुक कछारपर लएगेल। हमसभ चाह पिबैत ई सभ देखैत रहलहुँ।तकरबाद एक कप चाह महापात्रजीक हेतु अनलहुँ।चाह पीवि ओ टनगर भेलाह।हमसभ आगाक काज हेतु विष्णुपाद मन्दिरमे पहुँचलहुँ।

विष्णुपाद मन्दिरमे देशक विभिन्न भागसँ तीर्थयात्रीसभ आएल रहथि।करीब पचास गोटे तँ आंध्र प्रदेशक रहथि।ओहिना बहुत रास वंगालीसभ सेहो देखेलाह।सभ गोटे पिण्डदानमे लागल रहथि। स्थानीय पंडा जोर-सोरसँ मंत्र पढ़बएमे लागल रहथि। आंध्रासँ आएल तीर्थयात्रीसभ बहुत अनुशासित रहथि।मन्दिरमे ओकर द्वार पर ठाढ़भए बड़ीकाल हुनकासभके मन्दिरक पंडाजी मंत्र पढ़बैत रहलनि, ओसभ पढ़ैत रहलाह।तकरबाद सभ दस-दस टका दैत गेलाहआ पंडाजी बेरा-बेरी सभकेँ मन्दिरमे

प्रवेश करबैत रहलाह।बिना टाका देने एक्को गोटे अन्दर नहि जा सकैत छल।ओ मन्दिरक मुहथर छेकने ठाढ़ छलाह।ओहिठाम ततेक हल्ला होइत रहल जे हमरा महापात्रजीक कहल मंत्रसभ सुनबामे आ सुनि बजबामे बहुत दिक्कतिहोइत रहलकहुना-कहुना कए पिण्डदान समाप्त भेल।

"मन्दिर बंद भए जाएत, जल्दी करू।"

महापात्रजी बारंबार चेतावथि।हमसभ धरफराइतमन्दिरक गर्भगृहमे पहुँचलहुँ।मन्दिरक गर्भगृहमे बहुत लोक छल।अन्दर जाएब, आ मुर्तिलग जाएब पराभव छल।कहुना कए ठेलमठेला करैत ओतए पहुँचलहुँ।ओहिठाम एकटा पंडाजी पहिनेसँ एकगोटेसँ पैसा लए झंझट कए रहल छलाह।ओकरासँ जखन बात फरिछाएल तखन हमरा पर ध्यान गेलनि।ओ पींड चढ़एबाक हमर प्रयासपर हुंकार भरैत महापात्रपर बिगड़लाह।

"एतए तोहर नहि चलतह।ई हमर जगह अछि।"

ओ पैसा तए करए चाहैत छलाह, महापात्र किछु मामुली रकमदेबाक हेतु कहैत छलाह।एहि बातसँ ओ बहुत तामसमे छलाह कि कोनो दोसर जजमानक फोन आबि गेल, ओ एकदमसँ फोन करैत बाहरभगलाह, कारण ओहिठाम ततेक हल्ला होइत रहैक जे किछु नहि सुनाइ पड़ि रहल छल।बाहर मन्दिरक गेटपर ओ गप्प करैत रहलाह आ हमसभ पिंड चढ़ाए ओतएसँ, हुनका सामनेसँ, निकलि गेलहुँ। हुनका किछु नहि हाथ लागल। ओहिठामसँ हमसभ दक्षिणाग्निपद पहुँचलहुँ।ओतए पिंडदान दए हमसभ वैतरणी पहुँचलहुँ।ओहिठामक पोखरि आने पोखरिसभ जेना नर्क लगैत छल।ओतहुँ ओहिना पिंडदान भेल। सभसँ अन्तमे पिंडदान भेल अक्षयवटपर।

अक्षयबटपरबेस पैघ बरक गाछ अछि।ओहि गाछक जड़िमे बहुतरास लालडोरा, पीअर कपड़ा, सभक गेँठी कएल अछि।ओहि गाछक छाहरिमे हम पिण्डदान केलहुँ।पिण्डकेँ गाछक जड़िमे फेकि ओहिठामसँ बिदा भेलहु।पंडाजीके पहिने फोनकए देने रहिअनि जे आब हमसभ घंटाभरिमे पहुँचिरहल छी।ओहिठामसँ हमसभ मंगला भगवतीक दर्शन कएल।मंगला भगवतीक दर्शनकए बाहर निकलल रही की बहुत रास भीखमंगासभ पैसा मांगए लागल।हम किछु दसटकिआ निकालि देबए लगलिऐक।एतबेमे भिखमंगाक पथार लागि गेल।एक डेग आगा बढ़ब मोसकिल भए रहल छल।कनिक आगा बढी आ जोरसँ किछु टाका फेकि दिऐक जाहिसँ फेर कनिक आगा बढी। बहुत मोसकिलसँ टेम्पूधरि पहुँच सकलहुँ। तैओ ओ सभ घेरने छल।फेर जुमाकए किछु दसटकही एहि हिसाबसँ फेकलहुँ जाहिसँ टाका लुझबाक चक्करमे ओसभ कनी फटकी होमए आ टेम्पू आगा बढ़ि सकए।टेम्पू आगा बढ़ैत अछि, तथापि किछुवच्चा बहुत दूर धरि पछोड़ धेने अछि :

"बाबा!हमरा किछु नहि भेल।"

फेर किछु टाका निकालैत छी, ओकरासभकेँ किछु- किछु कए दैत छिऐक।ताबे टेम्पूबला आगा बढ़ि गेल। तकरबाद ठोकले पंडाजीक ओतए पहुँचलहुँ।भरिदिन मंत्र पढैत, पढैत मुँहमे सपटी लगैत छल।भूख से लागि गेल छल।मुदा अखन एकटा महत्वपूर्ण प्रकरण बाँचल छल।तकरा पुरा करबाक हेतु हमसभ पंडाजीक ओतए पहुँचि गेल रही।

पंडाजीक ओतए पहुँचैत छी।ओहिठाम पहिनेसँ सभटा इंतजाम भेल अछि।सज्जादानक हेतु सभटा बस्तु एकटा कोठरीमे राखल अछि।पंडाजी अपने एहि काजक हेतु अबैत छथि।हम पहिने गछल टाका देबाक गप्प दोहरबैत छी।तकरबाद सज्जा दान कएल गेल।एहिठाम एकटा गप्प कहब जरुरी बुझा रहल अछि जे सभ समानकेँ एकहिबेरमेमंत्र पढ़ि दान कए देल गेल।श्राद्धमे एक-एक बस्तुक हेतु अलग-अलग मंत्र पढ़ाओल जाइत छल।ओ बहुत श्रमसाध्य एवम् उबाउ तरीका छल।सज्जा दानकबाद पंडाजी कहलाह जे गयामे एकटा ब्राहमण आनठामक एक हजारक बरोबरि फलदायी होइत अछि, से कहू कतेक ब्राहमणक भोजन हेतु दान करब।एकटा ब्राहमण हेतु यथोचित टाका अलगसँ गछलिअनि।अन्तमे फूलक मालासँ हमर दुनू व्यक्तिक हाथ बान्हैत कहलाह जे एकर तोड़ाइ हेतु किछु अलगसँ कहिऔक, सेहो गछलिऐक, तखने ओहिठामक विधसभ पूरा

भेल।हुनका प्रणाम कए चैनसँ बैसलहुँ।पण्डाजीक ओहिठाम आगन्तुकसभक बहुत नीकसँ हिसाब राखल जाइत अछि।सभक नाम-गाम, पता, गया अएबाक तिथि लिखल जाइत अछि।गाम-गामक अलग-अलग पृष्ठ अछि।हमरा गाम पछिला सए सालमे गया गेनिहारक सूची ओ देखेलाह।बहुत नीक लागल। ओहिमे अपन गामक कतेको गोटेक नाम देखल।ई अपना-आपमे एकटा इतिहास छल।

ताबत ब्राहमणसभ आबि गेल छलाह।पंडाजी कहलाह जे संयोग नीक अछिजे एगारहटा ब्राहमण पुरि गेल अन्यथा एहिठाम से कठिन रहैत अछि।भोजनक सामग्री तैयार छल।भरिपोख ब्राहमणसभ भोजन केलाह।तकरबाद सभ गोटेकेँ किछुकए दक्षिणा देल गेल।एहि प्रकारे गयामे पिणडदानक कार्यक्रम विधिवत संपन्न भेल। पंडाजी के गछल टाका देलहुँ।ब्राहमण भोजनमे भेल खर्चाक हिसाब भेल, से गोट- गोट कए चुकता केलहुँ।महापात्रजीकेँ दक्षिणा देलहुँ।हुनकर आपसीक हेतु यात्रा व्यय अलगसँ देलहुँ। ओसभ प्रशन्न देखेलाह।

मोनमे एकटा बरका संतोख भेल।मूलतः माताक स्वर्गवाससँ व्याकुल हृदयकेँ कनि शान्ति भेटल।प्रेतशिलापर जखन तरह-तरहसँ मातृ ऋणसँ उरिनहेबाक हेतु पिण्डदानदेल जाइत छलतँ कानबाक मोन भए रहल छल।की कोनो पिण्डदानसँ माताक ऋणसँ उरिन भए सकैत छी? नहि भए सकैत छी।तथापि ई अपन धर्मक विधान छैक।गयामे पिणडदानसँ पूर्वजक आत्मा मुक्त भए जाइत छथि।एहि विश्वास ओ श्रद्धासँ हम ओतए गेल रही आ दू दिन धरि ठाम- ठाम घुमि-घुमि पिण्डदान करैत रहलहुँ।प्रार्थना करैत रहलहुँ जे माता सहित हमर सभ पूर्वजक आत्माकेँ मुक्ति होनि।

अपन धर्ममे आस्था रखनिहार विश्व भरिसँ लोकसभ एतए पिण्डदान करए अबैत छथि।मुदा ओहिठामक व्यवस्था खासकए पोखरिसभक खास्ता हाल देखि कए निराशा होइत छैक।अन्तर्राष्ट्रीय महत्वक एहि स्थानकउचित देख-भाल नहि भए रहल अछि।ओहुसँ चिन्ताक बात थिक सबठाम पैसाक वर्चस्व।जे से पैसाक खातिर तंग करैत अछि।शुरुसँ अन्तधरि ई समस्या बनल रहल।एकर की समाधान होएत? एतबा जरूरी लगैत अछि जे शान्तिपूर्ण महौलमे लोक श्रद्धापूर्वक अपन पूर्वजक आराधना कए सकथि, से व्यवस्था होइक।मुदा बिलाड़िक गरामे घण्टी बान्हत के?? q

बिधवा विआह

समाजक मान्यता, विधि-विधान एवम् लोक व्यवहार समय साक्षेप अछि। जे बात-विचार पचास सय साल पहिने अनिवार्य चलैत छल से आइ-काल्हि जँ लोक करए तँ हस्यास्पद भए जाएत। पहिने बाल विआह आम बात छल। बेटीकेँ जनमिते जँ माए-बापकेँ कथुक चिन्ता होइक तँ ओकर विआहक। कहुना कए विआह भए जाइक आ माए-बाप गंगा नहा लेथि। सोचल जा सकैत अछि जे समाजमे बेटीक स्थिति कतेक दयनीय छल..!

ई बात सभ जनैत छथि जे स्त्रीक बिना पुरुष कतएसँ आएत। जे आइ ककरो बेटी छैक सैह काल्हि ककरो स्त्री, ककरो माए बनतै। तथपि लोकमे अखनहुँ बेटाक प्रति मोह कम नहि भए रहल अछि। पहिने कतेको गोटा बेटाक चक्करमे आठ-नौ सन्तान कए लैत छलाह। लिंग आधारित एहि भेद-भावकेँ कम करबाक किंवा जड़िसँ दुरुस्त करबाक निरन्तर प्रयास होइत रहल।

एक समय छल जखन पतिकेँ मरलाक बाद ओकर पत्नीकेँ ओकरे संगे जरा देल जाइत छल किंवा वो स्वयं जरि जाइत छल। समाज ओकरा सतीक रूपमे महिमा मण्डित करैत छल। ओकर चितापर सती मन्दिर बना देल जाइत छल। सोचल जा सकैत अछि जे वो कतेक क्रूड़ प्रथा छल। एकटा स्वस्थ जीबन्त व्यक्तिकेँ जरा कए एहि लेल मारि देल जाइत छल वा वो स्वयं मरि जाइत छल जे ओकर पतिक देहावसान भए गेल, जाहि लेल वो कोनो प्रकारसँ दोषी नहि छल। मरनाइ, जिनाइ ककरो हाथमे नहि छैक। ई एकटा संयोग होइत अछि मुदा तकर एतेक दुखद् परिणाम होइत छल से सोचियो कए रोंआ ठाढ़ भए जाइत अछि।

एकटा विदेशी पर्यटक जखन अपन देश घुमैत रहथि तँ संयोगसँ श्मशान घाटपर एकटा मुर्दाकेँ लए जाइत देखलथि। मुर्दा संगे ओकर पत्नी चिकरैत-भोकरैत श्मशान धरि संगे गेल। लोक सभ तमासा देखैत रहल आर वो पतिक लहासक संगे जारनिसँ लादि देल गेल। जोर-जोरसँ ढोल बजा-बजा कीर्तन करए लागल जाहिमे ओहि जीवित महिलाक करूण क्रंदन दबि कए गुम रहि गेलैक आ थोड़बेकालमे ओहो पतिक लहासक संगे छाउर भए गेल। (ई सैंकड़ो साल पूर्वक थिक एवम् एकर वर्णन Beyond the seas माइकल एच. फीसर द्वारा सम्पादित पुस्तकमे अछि) एहि तरहक घटना ओहि समयमे आम बात छल। स्त्रीगण सभ अपन नियति बुझि एकरा स्वीकार करैत छलीह। प्रसिद्ध समाज सुधारक राजाराम मोहन रायक एहिपर ध्यान गेल आ वो ब्रिटिश सरकारसँ गोहार कए एहि सामाजिक कुरुतिकेँ बन्द करौलाह।

समाजमे विधवाक स्थिति बेटीक स्थितिसँ जुड़ल अछि। जँ बेटी पढ़तै, लिखतै, बेटा जकाँ ओकरो अवसर भेटतै तँ ओहो ककरोसँ पाछा नहि रहत। आइ-काल्हि एहिमे किछु परिवर्तन भेल अछि। लोक बेटीकेँ स्कूल-कालेज पठा रहल अछि। डाक्टर, इन्जिनीयर, अफसर सभ किछु बेटीओ बनि रहल अछि। कानूनमे परिबर्तन भेल अछि। पैत्रिक सम्पत्तिमे बेटा ओ बेटीक हक बरोबरि भए गेल अछि। घरेलू हिंसा कानूनक तहक कोनो महिलाकेँ शारीरिक, मानसिक यातना नहि देल जा सकैत अछि। दहेज लेब देब गैर कानूनी भए गेल अछि। प्रश्न ई उठैत अछि जे एतेक रास कानूनसँ लैस भारतीय महिला की सभ तरहेँ अधिकार सम्पन्न, सुरक्षित ओ प्रतिष्ठिापूर्ण जीवन-यापन करबाक स्थितिमे आबि गेल छथि? ई सोचिये कए कलम ठाढ़ भए जाइत अछि।

समाजमे बेटीक स्थितिमे सुधार मूलत: शहरी क्षेत्र धरि सीमित अछि। गाम-घरक हाल मोटा-मोटी ओहने अछि। अपना ओहिठाम शिक्षाक स्तर तेहन गड़बड़ायल अछि जे जँ क्यो स्कूल-कालेज जाइतो छथि, किंवा डिग्रीओ हासिल कए लैत छथि तैयो हुनका कोनो रोजगार भेटि सकत से संदेहास्पद। जँ आर्थिक निर्भरता बनल रहत, सम्पत्तिक अधिकार मात्र कानूनक किताबे तक सीमित रहि गेल तँ बेटी कोना बढ़त?

जाहि समाजमे बेटीकेँ शिक्षाक समान अवसर भेटल, पैत्रिक सम्पत्तिमे अधिकार भेटल ओहिठामक महिला निश्चित रूपसँ सभ तरहेँ आगा भए गेलीह। एहिमे केरल राज्यक चर्चा कएल जा सकैत अछि। पुरना समयमे (आ किछु हद तक अखनहुँ) विधवा होइते जेना ओकरापर विपत्तिक पहाड़ टुटि जाइत छल। तत्कालीन समाजक समस्त मान्यता, बिध, व्यवहार ओकरा

अपमानिते नहि करैत छल, अपितु अशुभ बुझैत छल। केस कटा लिअ, नीक- नीकुत खाउ नहि, साधारण कपड़ा पहिरू, उपास-पर-उपास करैत रहू। तेतबे नहि, कोनो शुभकाजमे आगा नहि रहू। आखिर ओकर की दोष रहैक जकर दंड ओकरा समाज दैत छलैक?

लगैत अछि, समाजक पुरोधा सभ असुरक्षा भावसँ ततेक ग्रस्त रहथि जे हुनका आगा-पाछा किछु आओर सोचेबे नहि करनि। कतेको ठाम तँ नवलिग बिधवा भए जाइत छलि आ आजीवन धोर कष्ट एवम् विपत्तिमे जीवन-यापन करैत छलीह। गरीबी, सामाजिक प्रताड़नासँ तंग भए कतेको बिधवा गाम-घर छोड़ि वृन्दावन किंवा आन-आन तीर्थ शरण धए लैत छलीह। अखनो हजारोक संख्यामे वृन्दावनमे बिधवा सभ पड़ल छथि। भारतक उच्चतम न्यायालय हुनका सभक स्थितिपर विचार केने छल। सुलभ इन्टरनेशनल द्वारा हुनका सभ लेल किछु कल्याणकारी योजना सभ सुनबामे आएल छल। मुदा ई सभ ऊँटक मुँहमे जीरक फोरन थिक। जरूरी तँ ई अछि जे समस्याक जड़िमे जाए ओकरा समूल नष्ट कएल जाए। आखिर पुरुष बिधुर भेलापर विआह करैत छथि की नहि? तहिना महिलोकेँ ई अधिकार समाज स्वीकृत हेबाक चाही।

यद्यपि यत्र, तत्र सर्वत्र महिला सशक्तीकरणक चर्च होइत रहैत अछि, तथापि व्यवहारिकतामे संकट अछिए। जँ दुर्भाग्यवश क्यो बिधवा भए जाइत छथि तँ अखनो हुनका नाना प्रकारक यातना, सामाजिक प्रताड़ना भोगए पड़ैछ। अस्तु, ई विचारणीय थिक जे बिधवा लोकनिक स्थितिमे गुणात्मक सुधार हेतु हुनकर पुनर्विवाहक व्यवस्था हो। एहिमे सभसँ बाधक विआहसँ जुड़ल खर्चा एवम् जातीय स्वाभिमान अछि। मुदा ई विचारणीय प्रश्न थिक जे समाजक कोनो व्यवस्था जँ एक निर्दोष जीवनकेँ कष्टमय केने रहैत अछि तँ ओकरामे संशोधन किएक नहि हेबाक चाही?

ओना, कतेको जातिमे बिधवा विआह पहिनहिसँ चलनमे अछि। कतेको महिला एहिसँ एकटा नूतन जीवन जीबाक अवसर प्राप्त करैत छथि। मुदा किछु जाति विशेषमे अखनो एकरा पारिवारिक प्रतिष्ठासँ जोड़ि कए देखल जाइत अछि। आखिर, ओ प्रतिष्ठाक जे गति होइत अछि, ताहिपर चर्चाक आवश्यकता नहि अछि। एहन बिधवा जकरा सन्तानो नहि छैक, एकरा व्यर्थ निष्ठाक नामपर लगातार कष्ट सहैत रहए, जीवनक समस्त सुख, सम्पदासँ वंचित रहए से कहाँ तक जायज अछि?

कतेको समाजमे ई व्यवस्था अछि जे बिधवाकेँ ओही परिवारक अविवाहित भाए किंवा समव्यस्क सम्बन्धीसँ विआह कए देल जाइत अछि। निश्चित रूपसँ वो सभ बेसी व्यवहारिक एवम् वुधिआर लोक छथि। मुदा जँ सेहो सम्भव नहि होइक तखन तँ परिवारक वयस्क सदस्यकेँ आगा आबि ओहि महिलाक जीवनमे पुन: स्थापित करबामे सहयोग करथि आ सुयोग्य,सही व्यक्तिसँ विआह करबामे सहयोग करथि।

जँ बिधवाकेँ सन्तान छैक तखन पुनर्विवाहसँ दिक्कति भए सकैत छैक मुदा एहनो परिस्थितिमे ओहि बच्चा सभक संगे बिधवाकेँ स्वीकार करब सर्वोत्तम समाधान भए सकैत अछि। हम एकबेर यूरोप गेल रही तँ हमर सभक वाहन चालक अपन परिवारक चर्चा करैत कहए लगलाह जे हुनकर स्त्रीक ई दोसर विआह छनि। पहिल विआहसँ दूटा सन्तान छनि। हुनकासँ विवादक बाद एकटा सन्तान छनि। एवम् प्रकारेण वो तीनटा सन्तानक पिता छथि आ सभक भरण-पोषण सहर्ष एवम् समान्य रूपसँ करैत छथि। विदेशमे ई आम बात अछि। ओहिठाम विआह विच्छेद जहिना होइत अछि तहिना पुनर्विवाह सेहो भए जाइत अछि। फेर अधिकांश महिला पुरुष ओहि स्थिति हेतु तैयारो एहि मानेमे रहैत छथि जे आर्थिक निर्भरता सामान्यत: नहि रहैत अछि। ईहो बुझय जोगर गप्प अछि जे ओकर सभक समाजक मूल्य अछि जे ओकर सभक समाजक एवम् पारिवारिक संरचना अलग अछि।

अपन भारतीय मूल्यक रक्षा करैत एवम् परिवारक संरचनाकेँ कोनो तरहें बिना दुबर केने विशेष परिस्थितिमे सामाजिक सामंजस्यक व्यबस्था जरूरी अछि जाहिसँ संयोगवश जँ क्यो बिधवा भए जाइत अछि तँ हुनका तरह- तरहक कष्टसँ बचाऔल जा सकए आ हुनक भावी जीवनकेँ सुखद कएल जा सकए।

ओना अपने देशक कतेको राज्यमे बिधवा विआह आम बात भए गेल अछि। अपनो समाजमे किछु जाति विशेषमे एकरा लोक अखनो ढो रहल अछि जखन कि कतेको जातिमे पहिनहुँसँ ई व्यबस्था रहल अछि। अस्तु, एहि कुप्रथाक कोनो मजगूत धार्मिक पक्ष नहि लगैत अछि। ई एकटा जाति विशेषक किंवा वर्ग विशेषक अहंसँ पोषित सामाजिक अभिशाप थिक जकर सुधारपर सभक ध्यान जा रहल अछि, मुदा व्यबहारमे अखनो स्वीकार्य नहि अछि। एहन नहि अछि जे बिधवा विआह होइते नहि अछि, गाहे-वगाहे उच्च वर्गीय मैथिलोमे ई भए जाइत अछि मुदा अखनो ई एकटा स्वभाविक, सर्वमान्य चलनक रूप नहि लेने अछि, जाहि कारणें कतेको कम वयसक कन्या जीवनक समस्त सुख, सुबिधासँ वंचित रहि दुखमय जीवन बीतेबाक हेतु विवश छथि।

किछु एहन घटना सभ देखएमे आएल जतए परिस्थितिवश पतिक देहान्त भए गेलाक बाद हुनके परिवारक लोक विआहक व्यबस्था केलाह आ आइ वो एकटा सुखी परिवारिक जीवन जीबि रहल छथि। पूर्व पतिसँ जे सन्तान छलैक ओकरो नीकसँ पालन-पोषण भए रहल अछि। नव विआहमे सेहो सन्तान भेलैक। हमर कहबाक तात्पर्य अछि जे सभ किछुकेँ हठाते धर्म-कर्मसँ जोड़ि कए मनुक्खक जीबन नर्क कए देब कतहुँसँ उचित नहि अछि।

गाम-गाममे एहन दृश्य देखएमे अबैत रहल अछि जे अपने लोक बिधवाक शोषण करैत छथि। कतेकठाम तँ ओकर हत्या तक भए गेल। ओकर सम्पत्ति अपने लोक लुटि लेलक वा ठगि लेलक आ जखन ओकरा प्रयोजन भेलैक तँ सभ कात भए गेल। तथाकथित मर्यादाक उल्लंघन जखन आम बात भए गेल हो, ताहि मर्यादाकेँ व्यर्थ होइत रहब सर्वथा अनुचित।

पारिवारिक जीवन हेतु, भारतीय मूल्यक रक्षा हेतु, वैवाहिक जीवनक महत्वकेँ कमतर नहि आँकल जाए सकैत अछि। परन्तु ओकर आधार मजगूत बनल रहैक ताहि हेतु सोचमे परिवर्तन जरूरी अछि। पूरा दुनियाँ बदलि रहल अछि। इन्टरनेट, मोबाइल, टेलीवीजन, फेसबुक, ह्वाट्सअप सौंसे दुनियाँकेँ एक आँगन (Global Village) मे परिवर्तित कए देलक अछि। एहि परिवर्तनसँ क्यो बाँचल नहि रहि सकैत अछि। गाम-गाम वएह टेलीवीजन, वएह गीत नाद, वएह सीनेमा चलैत अछि। स्वाभाविक अछि जे गामोक धिया-पुतामे आधुनिकताक मानसिकता उत्पन्न होइक। एकरा एकदमसँ छोड़लो नहि जा सकैत अछि। अस्तु,आधुनिकताक बिहाड़िमे सभटा उड़िया जाए ओहिसँ पूर्वे हमरा लोकनि स्वत: स्वभाविक रूपसँ परिस्थितिजन्य कारणसँ बिधवा भेल महिलाकेँ पुनर्वास हेतु, ओकर सम्मानपूर्ण जीवन-यापन हेतु सोचबाक चाही।

समाज जे गतिशील होइत अछि, जे बदलैत परिवेशसँ सामंजस्य स्थापित करबाक हेतु प्रयत्नशील रहैत अछि, सैह टिकैत अछि। ओकरे विकास होइत अछि। जँ से नहि भेल तँ अपने बनाओल नियम, कानून वो मर्यादाक बोझसँ स्वत: चरमरा जाइत अछि। जरूरी अछि जे समयक संग तादाम्य स्थापित कए हम सभ नूतन विचारकेँ सहर्ष स्वीकार करी ओ प्रगतिक पथपर आगा बढ़ी।q

उपभोक्ता संरक्षण कानून १९८६

उपभोक्ता संरक्षण कानून १९८६क मूल उद्देश्य जिला, राज्य एवम् राष्ट्रीय स्तर पर अर्धन्यायिक संस्थाक स्थापना करब अछि जाहिसँ उपभोक्ता विबादकेँ शीघ्र ओ त्वरित समाधान भए जाइ। ई संस्था न्यायक नैसर्गिक सिद्धांतक आधारपर मामलाक औचित्यक ध्यान रखैत उपभोक्ताकेँ उचित क्षतिपूर्तिक आदेश दए सकैत अछि। एकर आदेश नहि मानलापर उचित दंड देल जा सकैत अछि।

उपभोक्ता संरक्षण कानून १९८६ ग्राहककेँ अपन सिकाइतक निपटान करबाक एकटा वैकल्पिक समाधान प्रदान करैत अछि मुदा ताहिसँ कानूनमे प्राप्त अन्य न्यायलयमे मोकदमा करबाक अधिकार समाप्त नहि भए जाइत अछि। जौँ अन्य न्यायालयमे ई सिकाइत सुनल जा चुकल अछि तैयो एहि कानूनक अनुसार उचित फोरममे सिकाइत कएल जा सकैत अछि। (धनबीर सिंघ बनाम हुडको, २०१२ (५) एसएलटी ३५)

एहि कानून क धारा ९क अनुसार राज्य सरकार उपभोक्ता विबादक निपटान हेतु जिला एवम् प्रान्तीय स्तर पर जिला फोरम आओर राज्य आयोगक गठन करत, संगहि केन्द्र सरकार राष्ट्रीय आयोगक गठन करत। जिला फोरम मे जिला जज रहल, कार्यरत जिला जज, किंवा जिला जजक योग्यता रखनिहार व्यक्ति अध्यक्ष भय सकैत छथि। ओहिमे दूटा आओर सदस्य हेताह, जाहिमे एकटा महिलाक होएब जरूरी। राज्य आयोगक अध्यक्ष उच्च न्यायालयक कार्यरत वा सेवा निवृत न्यायाधीश होइत छथि। एकर अतिरिक्त दू वा अधिक सदस्य सेहो होइत छथि, जाहिमे एकटा महिलाक होएब जरूरी। राष्ट्रीय आयोगक अध्यक्ष उच्चतम न्यायालयक कार्यरत वा सेवा निवृत न्यायाधीश होइत छथि। एकर अतिरिक्त चारि वा अधिक सदस्य सेहो होएत छथि। सदस्य बनबाक हेतु बएस 35 सँ कम नहि हेबाक चाही, योग्यता स्नातक, एवम् अर्थ शास्त्र, कानून, वाणिज्य, लेखांकन, उद्योग, जनसेवा, वा प्रशासनमे दस बर्खक अनुभव होएब जरूरी थिक।

जिला फोरममे एहन सिकाइत कएल जाएत जाहिमे संदर्भित वस्तुक मूल्य वा आपेक्षित क्षतिपूर्तिक मूल्य २० लाख टाकासँ बेसी नहि होएत। जौं कीनल गेल बस्तुक मूल्य किंवा क्षतिपूर्ति २० लाखसँ बेसी एवम् एक करोड़ सँ कम अछि तँ सिकाइत सम्बन्धित राज्यक आयोगक ओतए करए पड़त। ताहूसँ बेसी दामक बस्तुक हेतु किंवा क्षतिपूर्ति हेतु राष्ट्रीय आयोगक ओहि ठाम सिकाइत करब जरूरी थिक।

एहि तरहक कोनो सिकाइत सम्बन्धित घटनाक दू सालक अधीन करब जरुरी थिक, परंतु सम्बन्धित फोरम/ आयोग लिखित कारण दए वाजिब मामलामे एहि समय सीमामे छूट दए सकैत अछि।

उपभोक्ता कानूनक तहत सम्बन्धित उपभोक्ता, वा उपभोक्ताक हितक रक्षाक हेतु काज केनिहार मान्यताप्राप्त संगठन वा एकाधिक उपभोक्ता (जतए बहुत रास ऊपभोक्ताक एकरंगाहे सिकाइत होइक), वा राज्य किंवा केन्द्र सरकार स्वतः किम्वा प्रभावित ऊपभोक्ताकक हितरक्षाक हेतु सिकाइत कए सकैत छथि।

जिला फोरम/राज्य आयोग/राष्ट्रीय आयोगक ओतए सिकाइत करबाक हेतु निर्धारित शुल्क:

जिला फोरम

वस्तु/सेवा/क्षतिपूर्तिक कुल दाम लागत शुल्क

एक लाख धरि

(जे गरीबी रेखासँ नीचा छथि) किछु नहि

एक लाख धरि (जे गरीबी रेखासँ उपर छथि)

एक सए टाका

एक लाखसँ उपर ओ पाँच लाख धरि दू सए टाका

पाँच लाखसँ उपर ओ दस लाख धरि चारि सए टाका

दस लाखसँ उपर ओ बीस लाख धरि पाँच सए टाका

राज्य आयोग

बीस लाखसँ उपर ओ पचास लाख धरि

दू हजार टाका

पचास लाखसँ उपर ओ एक करोड़ धरि चारि हजार टाका

राष्ट्रीय आयोग

एक करोड़ सँ उपर

पाँच हजार टाका

(उपभोक्ता संरक्षण विधेयक, २०१८क अनुसार जिला फोरम/ राज्य आयोग/ राष्ट्रीय आयोगक आर्थिक अधिकार क्षेत्र बढ़ा कए क्रमशः एक करोड़, दस करोड़, आ ताहिसँ उपर करबाक बिचार अछि)।

जिला फोरम द्वारा सिकाइतक निपटान:

सिकाइत प्राप्त केलाक २१ दिनक भीतर सिकाइतक प्रतिकेँ जिला फोरम प्रतिवादीकेँ पठाओत। प्रतिवादी अधिकसँ अधिक ४५ दिनक भीतर ओकर जबाब देताह अन्यथा जिला फोरम एकतरफा उपलब्ध सबूत ओ कागजातक आधारपर मामलाकेँ तय कए सकैत अछि। वादी वा प्रतिवादीकेँ वकील राखबाक जरुरत नहि होइत अछि। ओ स्वयं किंवा कोनो प्रतिनिधि द्वारा अपन बात फोरममे राखि सकैत छथि। जिला फोरमकेँ कार्यवाहीकेँ ई कहि चुनौती नहि देल जा सकैत अछि जे मामलामे नैसर्गिक न्यायक सिद्धांतक पालन नहि भेल अछि।

जौँ उचित जाँच पड़ताल एवम् प्रस्तुत सबूतक आधारपर जिला फोरम वादीक सिकाइतसँ सहमत भए जाइत अछि तँ ओ प्रतिवादीकेँ ओहि बस्तुकेँ ठीक करबाक आदेश दए सकैत अछि, नव बस्तु देबाक हेतु कहि सकैत अछि, वा ओकर मूल्य आपस करबाक हेतु, किंवा प्रतिवादीक लापरवाहीसँ सिकाइतकर्ताकेँ भेल कष्ट वा क्षतिक क्षतिपूर्ति करबाक हेतु निर्णय दए सकैत अछि। जिला फोरम सिकाइतकर्ताकेँ प्रतिवादी द्वारा देल गेल सेवाकेँ दोषपूर्ण साबित भेलाक स्थितिमे उचित क्षतिपूर्ति देबाक आदेश दए सकैत अछि। संगहि वाजिब मामलामे दंडात्मक क्षतिपूर्तिक आदेश सेहो कए सकैत अछि।

ejournal 'विदेह' २५६ म अंक १५ अगस्त २०१८ (वर्ष ११ मास १२८ अंक २५६) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रतिवादीक लापरवाहीक कारण सिकाइतकर्ताकेँ भेल क्षति वा अवघातक हेतु जिला फोरम क्षतिपूर्तिक आदेश दए सकैत अछि। (एस.के.लकोटिआ बनाम नेशनल इनस्योरेंस कंपनी लिमिटेड)

क्षतिपूर्तिक हेतु सिकाइतकर्ताकेँ साबित करब जरूरी अछि जे प्रतिवादी द्वारा देल गेल सेवामे त्रुटिक संग- संग ओकर लापरवाही सेहो छल, जौँ से नहि छल तखन क्षतिपूर्तिक मांग खारिज भए जाएत (निदेशक, एच.आइ.इ.टी बनाम अनिल कुमार गुप्ता, १९९४ (१) सीपीआर १८२)।

उपभोक्ता फोरम अन्तरिम आदेश नहि दए सकैत अछि।

अपील

जौँ कोनो पक्ष जिला फोरमक आदेशसँ संतुष्ट नहि अछि तँ ओ तीस दिनक भीतर राज्य आयोगमे निर्धारित प्रपत्रमे अपील कए सकैत छथि। मुदा जँ जिला फोरम आर्थिक क्षतिपूर्ति किंवा दंडक आदेश देने अछि तँ ओहि आदेशकेँ चुनौती देबासँ पूर्व ओहि रकमक आधा वा पचीस हजार जे कम होइक, जमा करए पड़त। मामलाक निपटान हेतु राज्य आयोग मोटामोटी जिला फोरमक पद्धति एवम् प्रकृयाक अनुसरण करैत अछि।

जौँ कोनो पक्ष राज्य आयोगक आदेशसँ संतुष्ट नहि अछि तँ ओ तीस दिनक भीतर राष्ट्रीय आयोगमे निर्धारित प्रपत्रमे अपील कए सकैत छथि। मुदा जँ राज्य आयोग आर्थिक क्षतिपूर्ति किंवा दंडक आदेश देने अछि तँ ओहि आदेशकेँ चुनौती देबासँ पूर्व ओहि रकमक आधा वा पैंतीसहजार जे कम होइक, जमा करए पड़त।

जौँ कोनो पक्ष राष्ट्रीय आयोगक आदेशसँ संतुष्ट नहि अछि तँ ओ तीस दिनक भीतर उच्चतम न्यायलयमे निर्धारित प्रपत्रमे अपील कए सकैत छथि।मुदा जँ राष्ट्रीय आयोग आर्थिक क्षतिपूर्ति किंवा दंडक आदेश देने अछि तँ ओहि आदेशकेँ चुनौती देबासँ पूर्व ओहि रकमक आधा वा पचास हजार जे कम होइक, जमा करए पड़त।

राज्य आयोग, राष्ट्रीय आयोग नब्बे दिनक भीतर ओकरा समक्ष कएल गेल अपीलक निपटान कए देत, मामलाक सुनबाइक दौरान सामान्यतः स्थगन नहि देल जाएत। जौं नब्बे दिनमे फैसला नहि भए पबैत अछि तँ तकर कारण लिखित रूपमे देल जाएत।

जिला फोरम / राज्य आयोग/राष्ट्रीय आयोग द्वारा देल गेल निर्णयकेँ जौँ तय समय सीमाक भीतर अपील नहि कएल जाइत अछि तँ ओ निर्णय अन्तिम भए जाएत।

सिकाइतकर्ताक आवेदनपर किंवा स्वयं राज्य आयोग कोनो जिला फरममे चलि रहल मामलाकेँ दोसर जिला फोरममे पठा सकैत अछि।

ग्राहकक कर्तव्य :

ग्राहकक कर्तव्य अछि जे ओ कीनएबला बस्तुक बारेमे उचित जानकारी प्राप्त करए, ओकर गुणवत्ता बारेमे स्वयं जाँच पड़ताल करए एवम् दोकानदारक बातपर आँखि मूनिकए विश्वास नहि करए अपितु वस्तु विशेषपर बनल चेन्ह जेना आइएसओ आदिकेँ नीकसँ ठेकानि लेथि।

देश भरिमे करीब पाँचसए स्वयंसेवी संगठन उपभोक्ता संरक्षणक हेतु काज कए रहल छथि। ग्राहककेँ उचित सलाह देबाक हेतु एवम् ओकर वाजिब हितक रक्षाक हेतु एहन संगठनसभ सकृय योगदान करैत छथि। ग्राहक जरूरी भेलापर हिनका लोकनिक मदति लए सकैत छथि।q

रबीन्द्र नारयण मिश्रक

दूटा लघुकथा

असगुन

गाम-घरमे कतेको प्रकारक असगुन सभ प्रसिद्ध अछि। जेना क्यो यात्रापर बिदा हो आ नढ़िया रस्ता बाँमासँ दायाँ काटि दिए, किंवा क्यो बिदा होइत काल पाछासँ टोकि दिए। बुढ़बा बाबाकेँ एहि सभहक बेस विचार छलनि। जँ घरक क्यो बिदा होइत आ कतहु क्यो छीक दैत तँ ओ 'चिरंजीवी भव:' अवश्य कहितथि। तहिना आओर-आओर अपशकुन जँ होइतैक तँ ओकर निवारण कए लितथि।

ओहि दिन गाममे हाट लागल रहैक। तीमन-तरकारी सभटा हाटेपर सँ कीनल जाइत छलनि। ओहुना हाट दिनक ओ नियमसँओतए पहुँचैत छलाह।

रविक दिन छलैक। हाट जएबाक तैयारी ओ दुइए बजेसँ प्रारम्भ कए देने छलाह। जहाँ चारि डेग आगा बढ़ैत कि एक ने एकटा अपसगुन भए जानि। एवम् प्रकारेण चारि बाजि गेल। सूर्यास्त करीब छल। हारि कए ओ बेंत घुमबैत बिदा भेलाह।

कनिके आगा बढ़लाह कि मुनेसरा सामनेमे पड़ि गेलनि

“प्रणाम पंडीतजी!” बाजल मुनेसरा।

“नीके रह”- मुनेसराकेँ आर्शीवाद दैत पडितजी आगा बढ़लाह। मोने-मोन कहि नहि की की घुनघुना रहल छलाह। मुनेसराकेँ एकेटा आँखि छलैक। गाममे दाहाक दिन मारि भए गेल रहैक। बेस फनैत छल ओ। लाठी लेने फानि गेल छल। ताबतमे क्यो ओकरे निशाना बना कए एकटा सीसाक बोतल फेकलकै। ओकर सौंसे आँखि लहु-लुहाम भए गेल रहैक। ओही घटनाक बाद ओ असगुन भए छल। प्राय: सएह सभ सोचैत पण्डितजी आगा बढ़लाह।

हाटपर बेस भीड़ छलैक। तीमन-तरकारीक भरमार छल। मुदा पण्डितजीक आदति छलनि जे कोनो चीज ओ ठोकि-ठोकि कए करितथि। बीच बजारमे सजमनिक दाम मोलबति-मोलबति पहुँचलाह कि चारि गोटेमे एक दिससँ धुक्का मारैक आ चारि गोटे दोसर दिससँ। सामनेसँ दू-तीन गोटे हाँ-हाँ करैत पण्डितजीक रक्षा करए आबि गेलाह। धक्का-धुक्की खतम भेल तँ पण्डितजी आगा बढ़लाह। सजमनिक दाम मोलेलनि आ भाव पटि गेलापर जेबीसँ पैसा निकालए लगलाह कि अबाक रहि गेलाह। जेबी नदारद। पण्डितजी ठोह पारि कए कानए लगलाह। सौंसे ई खबरि बिजलौका जकाँ पसरि गेल। पण्डितजी माथा हाथ देने घर आपस अएलाह। तहिआसँ ओ असगुनक डरे छीह कटने फिरथि।

पण्डितजीकेँ तीनटा कन्या छलनि। प्रथम कन्याक कन्यादान ठीक भए गेल छलनि। नीक कुल-शीलक बर रहैक। अगहनक पुर्णिमाक बिआह तय भेलनि।बरक हाथ उठएबाक हेतु बिदा होइत छलाह कि कियो तराक दए छींकलक। छींक...छींक...छीक...। हुनकर माथामे ई छींक घुमए लगलनि। पण्डितजीक टांग एकाएक गतिहीन भए गेलनि ओ आगा बढ़ए हेतु एकदम तैयार नहि छलाह। सौंसे गामक लोक करमान लागि गेल छल। पण्डितजी गुम। किछु बजबे नहि करथि। तेहन शुभ मुहुर्त्त छल जे छींकक चर्चो करब असगुन लगनि। लोक सभकेँ किछु फुराइक नहि जे आखिर बात की भेल। अखने तँ पण्डितजी टप-टप बजैत छलाह..! गाम भरिक लोक पण्डितजीकेँ घेरि लेलकनि।

“पण्डितजी की भेल?”

मुदा ओ तैयो गुम्म। अन्ततोगत्वा लोक हुनका उठा-पुठा कए डाक्टरक ओहिठाम लए गेल। ओतए डाक्टर हुनकर अवस्था देखि गंभीर भए गेलाह आ कहलखिन जे हुनका गम्भीर भावनात्मक अवधात भेलनि अछि। तात्कालिक उपचारक हेतु जहाँ ओ सूई देबए लगलाह कि पण्डितजीकेँ नहि रहि भेलनिओ गरियबैत ओहिठामसँ गामपर भगलाह। ताबत भोरक चारि बाजि गेल छल।बरक ओहिठाम जएबाक कार्यक्रम रद्द भए गेल। ठीके असगुन भए गेलनि, ताहि दिनसँ पण्डितजी असगुनसँ बड्ड डराथि। ओहि दिन हुनकर मझिली बेटीक तहिना आँखि बड़ फरकए लगलनि। पण्डितजी एकदम अपसियाँत भए गेलाह। अबश्य कोनो गड़बड़ी होमए जा रहल अछि।

ओ अपन बेटीकेँ तुरन्त अपना लग बैसा लेलथि कि ताबतेमे एकटा गिरगिट हुनकर बायाँ हाथपर खसल। पण्डितजी ठामहि फानलाह। पैरमे खराम छलनि। दरबज्जा बेस ऊँच

छलैक। दलानपर ठामहि चितंग भए गेलाह। बायाँ पैरक हड्डी टुटि गेल छलनि। पण्डितजी बाप-बाप चिचिआए लगलाह। सभ गोटे हुनका लादि कए अस्पताल लए गेल। लाख प्रयासक बाबजूद ओ हड्डी नहि जुटल। पण्डितजी जन्म भरिक हेतु नाँगर भए गेलाह। तहिआसँ पण्डितजी नित्य भोरे उठैत देरी भगवानकेँ गुहारि देथि-

"हे भगवान! असुगनसँ जान बचायब।"

मुदा भावी प्रवल होइत छैक। होइत वएह छैक जे हेबाक रहैत छैक। एकादशीक दिन छलैक। महादेवक दर्शन करए जाइत छलाह। झलफल होइत छलैक। ताबतमे एकटा नढ़िया वामाकातसँ आएल आ सामने बाटे दायाँकात गुजरि गेल। पण्डितजी ठामहि खसलाह।

"हे महादेव!आब अहीं प्राणक रखा करू।"

कहैत-कहैत पण्डितजी वेहोश जकाँ भए गेलाह। बोएकहुँ डेग घुसकए हेतु तैयार नहि छलाह। आ ने घुसकबाक हुनकामे तागति रहि गेल छलनि। पण्डितजीकेँ फेर कहि नहि कहाँसँ हिम्मत अएलनि। ओ चोटे पाछा घुमलाह। ताहि बीच एक बेर फेर वएह नढ़िया वायाँसँ दहिना भेल। पण्डितजी ओहि नढ़ियाकेँ गरियबैत,नाँगर टाँगे दौड़ैत, खसैत-पड़ैत घर दिस बढ़ए लगलाह। बीच-बीचमे ओहि नढ़ियाकेँ कहैत-

"ई सरबा, नहि जीबए देत। एकर हम की बिगारने छलिऐक से नहि जानि!"

ताबतेमे मुखियाजी पोखरि दिसिसँ आपस अबैत छलाह। पुछि बैसलखिन-

"की भेल पण्डितजी?"

"की कहू की भेल। कहबी छैक जे गेलहुँ नेपाल आ कर्म गेल संगे। सएह परि अछि हमर। एकादशीक दिन छलैक। सोचलहुँ जे महादेवक दर्शन करी। आधा रस्तासँ जहाँ आगा बढ़लहुँ कि औ बाबू!ई चण्डाल नढ़िया रस्ता काटि देलक।"

ओहिसँ पहिने की मुखियाजी किछु बजितथि, पण्डितजी धराम दए खसलाह। मुखियाजी चिकरलाह। अगल-बगलसँ सेहो लोक सभ दौड़ल। पण्डितजीकेँ उठा-पुठा कए दरबाजापर राखि देलक। लोक सभ पुछनि-

"की भेल?"

मुदा ओ अपस्याँत आकाश दिसि तकैत रहि गेलाह।

असगुन, असगुने होइत अछि। तैँ ने लोक सगुन करैत फिरैत रहैत अछि। पण्डितजी भोर होइतहि पनिभरनीकेँ बजौलखिन आ आदेश देलखिन जे आइसँ नित्य प्रात: काल ओ एक घैल पानि भरि कए दरबाजापर राखि देल करए, जाहिसँ हुनक दिन नीक जेना कटि जानि। पनिभरनी हुनकर आज्ञाकेँ सिरोधार्य कएलक आ नित्य हुनकर सामनेमे बेस बड़का घैलमे पानि भरि-भरि राखए लागलि।

एक दिन अन्हरोखे पनिभरनी पानि भरि कए राखि गेल। ओकरा गहुँमक कटनी करबाक छलैक। पण्डितजी उठि जहाँ चारि डेग आगा बढ़लाह कि वोहि घैलसँ टकरा चारूनाल चित्त भए खसि पड़लाह। चारू कातसँ लोक सभ दौड़ल। मुदा मण्डितजी किछु नहि बजलाह। आब ओ चुप्पे रहबाक सपथ खा लेने छलाह। समय विपरीत भए गेल छलनि आ सगुनो असगुन भए गेल छलनि।

गाम

गाममे बहुत गोटे अनचिन्हार भए गेल छल। धिया-पुता सभ जे धरिया पहीरने घुमैत रहैत छल, से सभ फुटि कए जबान भए गेल छल आ बुढ़-पुरान लोक क्रमश: बिदा भए रहल छलाह। क्रमिक किन्तु अनवरत परिवर्तन प्रकृत्तिक नियमक पराक्रमसँ सभ प्रभावित छल।

लोचन बाबा, तिला बाबू, बुढ़िया काकी सभ एक-एक कए चल गेलाह। बहुत कम पुरना लोक बँचि गेल छल। मुदा ई गप्प हमरे किएक एतेक पड़िछायल बुझा रहल छल। गाममे बहुत लोक अछि। सभक समक्ष ई घटना भेलैक अछि आ होइत रहलैक अछि। प्राय: समयक अन्तरालक कारण बारह बर्खक अवधिक कारण हमरा बेसी अन्तर बुझा रहल अछि। छोटो-छोटो घटना सभ एकटा आकार ग्रहण कए लेने अछि।

पोखरिक भीड़पर बैसल हम इएह सभ सोचि रहल छलहुँ, गामसँ बहुत किछु निपत्ता भए गेल छल। दुपहर रातिमे गुलचनमा चौकीदारक जबरदस्त आबाज-

"जगले रहब। यौ ऽऽऽ।"

दुपहरिया रातिमे घरे-घर घुमि जाइत छल। आ चिकरैत-

"फल्लाँ बाबू छी औऽऽऽ।"

भोरुकबा उगैत त्रिकण्ठ बाबाक परातीक स्वर सौंसे गामकेँ भोर हेबाक सूचना दैत आ किछु कालक बाद बाद झमा झम, झमाझम, टन-टन टनटन घड़ी-घण्टा सुनबामे अबैत। मन्दिरपर बाबा भगवानक आरती करितथि। भोरे-भोर सभ ठिठुरैत मन्दिरसँ बाहर होइतथि।

फेर भोर भेल छल। मुदा १२ बर्खक अन्तराल छल।

हम ओहिना ओही पोखरीक भीड़पर गेल रही। की भए गेल? सात बाजि गेल। घड़ी-घण्टाक स्वर नहि, प्रातीक एकहुटा आखर नहि सुनायल। चौकीदारक कतहुँ कोनो पता नहि। जे पोखरि हरियर कंचन पानिसँ भरल रहैत छल सएह उजारसन लगैत छल।

इएह सभ सोचि रहल छलहुँ कि बड़ी जोरसँ हल्ला भेल। जएह-सएह चौक दिस दौग रहल छल। कै गोटासँ पुछलिऐक। क्यो किछु कहबा लेल तैयार नहि छल। ककरा फुर्सति छलैक। सभ अफसियाँत..!

हल्ला जोर पकड़ने जा रहल छल। ताबे देखबामे आएल जे १५-२० गोटे लाठी-भाला लेने गरजैत आगाँ बढ़ि रहल छलाह। ओमहरसँ मरर कका अएलाह।

"की भेलैक मरर कक्का?"

"लड़ाई भए गेलैक अछि। कै दिनसँ तनातनी छलैक, मुदा आइ फैसला भए कए रहत। "

"मुदा झगड़ाक कारण?"- हम पुछलिऐक।

अहाँ बाबू बाहर रहैत छी। अहाँ की बुझबैक। अहिठामक हवा विचित्र अछि। अनीनमाक बेटा गोवर्धन बाबूक प्रौत्रक काज नहि गछलक। बसकि गोवर्धन बाबू पुरनका अबाज देलखिन। छौड़ा अरि गेल। लाठी पकड़ि लेलक। ताहिपर ओ किछु बजलाह-

"कि छौड़ा लेने लाठी मारि देलक। ओहि दिनसँ समा बन्हा रहल अछि।"

ओ बाजिए रहल छलाह कि ठाँय- ठाँयक आबाज भेल। कनिके कालमे थानामे तीनटा लाश पड़ल छल। लोक जहाँ-तहाँ भागि रहल छल।

दू-तीन दिन धरि एकरे चर्चा होइत रहल। गामक बहुत रास जबान सभ भागि गेल। कहाँ दनि बहुत गोटेपर वारन्ट भए गेल छलैक।

साँझ भए गेल छल। गामसँ बहुत रास लोक भागि गेल छल। मन्दिरपर एसगर बैसल रही कि मरर कका पहुँचलाह।

“की बाबू, किएक गुम-सुम छी?”

“आउ, मरर कका।”

मरर कका बैसलाह। गामक एकटा वृद्धतम लोकमेसँ अवशेष मरर कका ओहि गाममे बहुत किछु देखलाह आ कहि नहि की की आओर देखताह।

“आओर गामक की हाल?”

“गामक की हाल रहत। समय बहुत बदलि गेल। आब तँ हमरा लोकनि चलबे करी ओहीमे कल्याण।”

“धिया-पुता की कए रहल छथि?”

“सभ कमाइ छथि। सबहक परिवार फराक-फराक छनि।”

“अहाँ ककरा संगे छी?”

“ककरा संगे रहब? हम तँ पेण्डुलम भए गेल छी। एक-एक मासक पार लगैत अछि। जहिआसँ अहाँक काकी स्वर्गवासी भेलीह तहिआ घिघरी काटि रहल छी। आँखिमे मोतिआबिन्द भए गेल अछि। साँझ परितहि अन्हार भए जाइत अछि। फेर गप्प होएत।”

ई बजैत-बजैत ओ उठि गेलाह।

१२ बर्ख पहिनहि मरर ककाक समय मोन पड़ि रहल छल। गामक प्रतिष्ठित लोकमेसँ छलाह। सभ बालक प्रतिभाशाली एवम् होनहार। साँझे-साँझ नित्य ओहि मन्दिरपर कीर्तन होइत छल आ मरर कका अवश्य ओहिमे रहितथि।

कनिक काल आओर बैसल रहलहुँ। आठ-दसटा अधवयसू सबहक हल्ला बुझाएल। सड़कपर सभ गरिअबैत आगा बढ़ि रहल छल। सभ तारी पीबि कए बुत्त।

काते-कात गामपर पहुँचलहुँ। मोन थाकल लागि रहल छल। सुति रहलहुँ।

भोर भेने पोखरि दिसि जाइत रही। गामक अन्तिम छोरपर पाँच-सातटा छोट-छोट खोपड़ी ओहिना-क-ओहिना छल। अपरिवर्तित। कतेक गोटे धनिक भेल,कतेक गरीब भए कए गामसँ बिलटि गेल मुदा वो सभ ओहिना-क-ओहिना बाँसक बासन बनेबामे तल्लीन छल। ओकर बच्चा सभ उघारे पड़ल छल। इएह सभ सोचि रहल छलहुँ कि फोकना डोम हमरा देखलक। चीलमक सोंट लगा कए खोंखैत बाजि उठल-

"परिणाम मालिक, कहिआ अलियै?"

"तीन दिन भए गेलैक। "

आ हम आगा बढ़ि गेलहुँ। पोखरि दिसिसँ आबि स्नान-ध्यान कएल। मधुबनी जेबाक छल। कनिके आगा बढ़ल छलहुँ कि फूटरक माएक कनबाक आबाज सुनलहुँ। खोपड़ी तर बैसल कानि-कानि किछु कहि रहल छलीह। हमरा देखि सोर पारि लेलीह।

"की भेल काकी? किएक कानि रहल छी?"

"की कहूँ, अपना घरक बात बजैत संकोच होइत अछि। तीन साँझसँ घरमे किछु नहि भेल अछि। हमरा लोकनि दूनू गोटे फराक छी। मालिकसँ दसटा टका मंगलिअनि तँ गरजि उठलाह।"

ई कहैत-कहैत ओ ठोह पारि कए कानए लगलीह। हमरा नहि रहि भेल। हुनका प्रणाम कए आगा बढ़ि गेलहुँ।

हे भगवान! की भए गेल एहि गामकेँ? मनुष्यता जेना भागि गेल। जतै देखू उलटे हबा बहि रहल छल। रिक्सासँ मधुबनी जाइत रही। इएह सभ सोचैत-सोचैत निन्न परि गेल। रिक्सा आर.के.कालेजसँ आगा छल। एतबेमे तिलक भाए नजरि पड़लाह। मुदा टोकबाक साहस नहि भेल। कहि नहि की की आओर सुनए पड़ए। दिन भरि मधुबनीमे रहलहुँ। साँझ भए रहल छल। मुदा गाम जयबाक साहस नहि भए रहल छल।

दू दिन धरि मधुबनियेमे रहि गेलहुँ। साँझमे टहलैत काल मन्दिर गेल रही। भगवतीक दर्शन कएल। घाटपर बैसल रही। साँझो उत्तर दिसि बड़ नीक घर सभ नजरिमे आबि रहल छल। मोन भेल घुमी। आगा बढ़लहुँ। सुन्नर-सुन्नर सुसज्जित घर।

पीच रोड। स्ट्रीट लाइट। छोटी पटना लागि रहल छल। बारह साल पूर्व ओहिठाम खत्ता छल। बाढ़िक समयमे समुद्र भए जाइत छल वो जगह। चारूकातक गामसँ श्रीमान लोकनिक जमघट भए गेल छल ओहिठाम। संयोगसँ अपना गामक देबन बाबू नजरिमे अएलाह। घरक दरबज्जासँ निकलि रहल छलाह। कहि उठलाह-

"कहिआ अएलह?"

कहलियनि-

"चारि-पाँच दिन भेल।"

गप्प आगा बढ़ए लागल। कहलाह-

"की कहैत छह?

आब गाम रहए-जोकर नहि रहल। तँए एहीठाम एकटा छोट-छीन घर बना लेलहुँ। कोठरीसँ बड़की भौजी आबाज देलीह-

"ठाढ़ किएक छी? अहाँक तँ अपन घर अछि।"

घरमे प्रवेश करितहि छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ।सोफासेट - टीभी, डाइनिंग टेबुल ..की की नहि छल।

गप्प-सप्प होइत रहल। चाह-जलखै सभ भेल।

गप्पक क्रममे पुछलिअन्हि-

"मरर ककाकेँ एतहि किएक नहि राखि लैत छिऐन?"

तर-दए बाजि उठलीह-

"हुनका गाम छुटिते नहि छनि! की करी?"

मरर ककाक ज्येष्ट पुत्र देबन बड़ प्रतिभाशाली छलाह। मुदा एक युगक अन्तराल पिता पुत्रकेँ धारक दू कातपर राखि देने छल। रातिक आठ बाजि गेल छल। हम हुनका सभसँ बिदा लए पुन: मधुबनीक डेरापर चल गेलहुँ। रस्ता भरि अपन गाम आ काली मन्दिरक आगूक खत्तामे भेल एक युगक अन्तरालक परिवर्तन मोनमे बेर-बेर अबैत रहल। गामकेँ की भए गेल? हे भगबान! कोन भूत एकरा धए लेलक? लोक एना किएक कए रहल अछि? काली मन्दिरक चभच्चा छोटी पटना भए गेल। गाम एना किएक रहि गेल। गाम माने की? संघर्ष, शोषण, ईर्ष्या, द्वेषक अतिवाद।

छुट्टी समाप्त भए रहल छल। रेलगाड़ीपर बिदा भेलहुँ। अपन संघर्ष स्थली दिसि- जहिठामसँ दूरीक कारण चन्द्रमाक धरातल जकाँ अपन गाम सुन्नरलागए लगैत अछि।

रबीन्द्र नारायण मिश्रक

नमस्तस्यै

आगाँ...

२६.

हमर माए रातिमे अकर-बकर सपना देखलक। भोरे ओकरा हमर चिन्ता ततेक जोर धेलकै जे तुरंत खबासिनीकेँ चंगेरा भरि कए विदा केलक। खबासिनी साँझधरि हमर सासुर पहुँचलि। ओकरा देखितहि हमरा लागए जेना स्वर्ग भेटि गेल। नैहर चीजे सएह होइत अछि।

कनीक आश्वस्त भेलाक बाद ओ अपन खिस्सा सभ शुरू केलक। माए, कका सभक समाचार सुनि मोन हल्लुक भेल। तकर बाद आओर लोकक समाचार कहए क्रममे अरुणक गप्प उठि गेल। तर्र दए खबासिनी मुँह फेरि लेलक। छिआ, छिआ करए लागलि। किछु बुझबे नहि करिऐक जे की भेलैक? किएक ई बुढ़िआ एना कए रहल अछि। बात खुजैत-खुजैत कहलक जे ओ तँ अंग्रेज मेम साहेबक संगे रहए लागल अछि। मेम साहेब इंगलैण्डसँ आबि कए कलक्टरीमे बैसि गेलैक। ओकरा देखितहिं अरुणक पहिल घरवालीक देहमे आगि लागि गेल। ओ अरुणक दस हजार फज्झैत केलक। मोटा-चोंटा बन्हलक आओर गाड़ीपर चढ़ि गेल।

अरुणक खिस्सा आगू बढ़बैत खबासिनी कहए लागल जे अरुणक अंग्रेजनीसँ बिआह नहि करए चाहए। ओ तँ मात्र रंग-रभस करैत छलाह। मुदा पैर जहन कादोमे पड़त तँ कतए धरि धसि जाएत तकर कोन ठेकान।

अरुणक संग पढ़ाइ-लिखाइ केनिहार बेसी अंग्रेज छल। ओहि समयमे प्रशासकीय सेवा परीक्षा अंग्रेजे धरि सीमित रहैक। बादमे क्यो- क्यो अपनो देशक लोक ओहिमे सफल भेलाह। एक- सँ- एक पैघ लोक ओ सभ बनि गेलाह। वएह परीक्षा तँ अरुणो पास केलक। तँ ओकरा झूस कथीक कहल जेतैक। रहल अंग्रेजनीक गप्प से तँ ओकर गड़ामे पड़ि गेलैक आओर तेना कए फँसा लेलकै जे हटने नहि हटलैक।

मुदा ईहो सत्ते जे कोनो एक्के दिने तँ ई सभ होइत नहि छैक। ओ जिम्मेदार आदमी छल, परिवारबला लोक छल, सम्हरि जेबाक चाहैकछल। कतहु-ने-कतहु ओकरो घालमेल तँ रहले होएत। 'के जानेसीयाराम गति' से कहि खबासिनी जोरसँ साँस छोड़लक।

असलमे अरुणक विदेशमे पढ़ाइक क्रममे एडली नामक युवकसँ दोस्ती भए गेलैक। एडली लन्दनक रहनिहार छल। ओहो प्रशासकीय सेवाक तैयारी करैत छल। ओकर एंगलसँ पहिनहिसँ दोस्ती रहैक। एंगल ओहिठाम अंग्रेजीक शिक्षक छलि। क्रमश: तीनू एकट्ठे घूमए-फिरए लागल।

लन्दनमे पढ़ाइ ओ तकर बाद प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारीमे रमणक, एंगल ओ एडलीक संग तेहन जबरदस्त तिकड़ी बनल जे देखैत बनए। जखन कखनहुँ घूमए जाए तँ तीनू संगे। जखन खान-पान होइत तँ तीनू संगे। जखन कोनो विषयपर परिचर्चा होएत तँ तीनू संगे। देखएबला सभ सकदम रहए। ओना ओहि सभ देशमे ओहू समयमे ई सभकोनो तेहन गप्प नहि होइत छलैक। अपना सभक समाज जखन घोघ तनने घुमि रहल छल, तखनो अंग्रेज सभ अपन स्त्रीगणकेँ समानताक अधिकार दैत छल। शिक्षा, व्यबसाय ओ नौकरीमे बरोबरिक हक भेटैत छलैक। बिआहक मामलामे अपन जीवन संगी चुनबाक अधिकार छलैक। मूल, गोत्र, जाति बिबाद ककरो जीबनपर भारी नहि पड़ैत छलैक। हमरा लोकनि अपन संस्कार वा संस्कृतिपर जतेक घमंड कए ली मुदा जे दुर्गतिसँ अपना ओहिठामक स्त्रीगण गुजरलीह से कदापि प्रशंसनीय नहि कहल जाएत।

q

२७.

खबासिनी गाम चल गेलि। खबासिनीकेँ चलि गेलाक बाद कै दिन धरि ओकरेपर ध्यान लागल रहल।

गामसँ बहुत रास लोक तीर्थ हेतु वृन्दावन जाइत रहए। हमर इच्छा सेहो भेल जे घुमि आबी। घरमे एहि बातपर चर्च भेलैक। सभक सहमति बनलैक। हमर सासु,हम आओर ओ सभ गोटे वृन्दावनक यात्रापर विदा भए गेलहुँ। गामपर धिया-पुता रहि गेल आओर ससुर रहि गेलाह।

गामसँ बहुत रास लोक एकट्ठे वृन्दावनक यात्रापर निकलल छल, तँ एहि यात्राक आनन्द अद्भुत छल। लगै छल जेना छोट-छीन गाम संगे चलि रहल छल। तीर्थ करब तँ बहाना होइत अछि। असलमे तँ घुमनाइ मूल काज रहैत छैक।

ट्रेनक डिब्बामे साधारण दर्जामे सभ गोटे सबार छल। काठक पट्ठाक फाँक सभमे अजोध उड़ीस सभ भरल छल। सभक देहक खून ओ पीबैत छल। पैरसँ माथ धरि सभकेँ चकत्ता भए गेलैक। ककरो राति भरि निन्न नहि भेल। सभ मिलि कीर्तन करए लागल जाहिसँ ट्रेनक डिब्बाक वातावरण भक्तिमय बनि गेल। लगैत छल जेना ओ ट्रेनक डिब्बा नहि अपितु वृन्दावनक कोनो मन्दिर होइक।

लगभग ३६ घन्टाक बाद हमसभ वृन्दावन पहुँचलहुँ। ओहिठामक तँ महौले अलग छल। जकरे देखू, राधे! राधे।!कहैत भेटए। रिक्साबला सामने आबि जाइत तँ घण्टी बजाबक एबजमे राधे! राधे! कहए लागत। वएह हाल टमटमबलाक, किंवा कोनो दोकानबलाकेँ, कोनो समान किनए जाउ आओर जँ ओकरा खुदरा नहि छैक, तँ राधे! राधे!करए लागत।

यत्र, तत्र अनेकानेक मन्दिर भरल छल। धर्मशालाक पाँति लागल छल। रस्तामे अहिना हम सभ चलैत रही कि भजनानन्ददासजीक आश्रम देखाएल। ओहिठाम अखण्ड भजन चलि रहल छल। मन्दिरक सटले धर्मशाला छल। हम सभ ओहिठाम ठहरलहुँ। प्रात भेने हम सभ भजनानन्ददासजीक प्रवचन सुनए गेलहुँ। बीच-बीचमे किर्तनीआँ सभ तेहन नीक स्वरमे भजन गबैक जे सभ सुधि हरा जाइक।

हमर ध्यान बेरि-बेरि भजनानन्ददासपर चल जाइत छल। हमरा लागए जेना ओ गरम सिंह अछि। नेनामे ओ हमरा संगे पढ़ैत छल। कै दिन हम सभ कबड्डी संगे खेलाइत छलहुँ। मुदा ई नहि बुझाइत छल जे ओ एतेकटा पहुँचल संत केना भए गेल?

प्रवचन, भजन समाप्त भेलापर महात्माजीकेँ प्रणाम कए हम सभ डेरा आपस जेबाक हेतु तत्पर रही कि ओ हमरा अबाज देलाह। एसगर देखि हाल-चाल पुछैत आग्रह केलाह जे हुनकर परिचय ककरो नहि कहल जाए। मोन भेल जे पुछिऐक जे ओ एहिठाम एहिरूपमे किएक अछि? मुदा आओर लोक सभ आबि गेलैक, तँ आगा बढ़ि गेलहुँ। वृन्दावन बिहारी लाल की जय! जतए जाउ लोक राधे! राधे! करैत रहैत छल। वृन्दावनक ई विशेषता थिक। सम्पूर्ण वातावरण कृष्णमय भेल रहैत अछि।

हम सभ १५ दिन वृन्दावनमे ओहि आश्रममे रहलहुँ। दिन भरि यत्र-तत्र भ्रमण होइक। मन्दिर सभमे श्रीकृष्णक दर्शन होइक। भन्डारा तँ होइते रहैत छलैक। हमरा नैहरक किछु लोक सेहो वृन्दावन आएल छल। संयोगवश एक दिन प्रवचन सुनैत काल भेटि गेल। गाम घरक लोक भेटि जाएब ओहो परदेशमे, आनन्ददायी होइते अछि।

गप्प-सप्पक क्रममे गरम सिंहक चर्चा होमए लागल। हम ओकरा कहलिऐक जे ई महात्मा तँ गरम सिंहे छथि। तखन ओकरो सभक भक टुटलैक। सभ एक स्वरसँ बाजि उठल-

"गरम सिंह!"

आ कि भजनानन्ददासजीक लोकसभ चारू कातसँ हमरा सभकेँ घेरि लेलक आओर ओहिठामसँ उठबाक संकेत केलक। हम बुझि गेलिऐक जे बड़का गलती भए गेल। गरम सिंहक नाम नहि लेबाक छल।

हमरा लोकनि वृन्दावनसँ ट्रेनसँ लौटि रहल छलहुँ कि रातिमे निन्न पड़ि गेल। भोर भए रहल छल। आसपासक कै गोटा हल्ला करए लागल। दड़िभंगा टीशन आबएबला छल। हमहूँ सभ अपन मोटा-चोटा बन्हलहुँ। सभ ट्रेनक दड़िभंगा पहुँचबाक प्रतीक्षा करए लागल। मुदा ट्रेन लहेरिआसराय गुमतीसँ कनिक पहिने रुकलै से घन्टा भरि रुकले रहि गेलैक।

सभ आपस अपन-अपन सीटपर बैसि गेल। ओहीक्रममे मास्टर साहेबक एकटा गौंआ हुनका चिन्हलकनि। ओ मूँगेरसँ आबि रहल छल। समस्तीपुरमे ओही डिब्बामे चढ़ल छल। मुदा ततेक लोक ठूसल रहैक जे ओतएसँ ठाढ़े आबि रहल छल। गप्प-सप्पक क्रममे मास्टर साहेबक चर्च उठि गेल। ओकरा सभ बात बूझल छलैक। ईहो बूझल छलैक जे मास्टर साहेब पूर्ण स्वस्थ भए गाम आपस आबि गेलाह अछि। मुदा पुष्पाक हालतसँ ओहो चिन्तित छल। बात किछु आओर होइत ओहिसँ पहिने ट्रेन खुजि गेल। फेर अफरातफरीक महौल भए गेल। कनीके कालमे ट्रेन दड़िभंगा पहुँच गेल।

q

२८.

गाम अबितहिं पता लागल जे गाममे कतेक तरहक नव घटना सभ घटित भेल। मासे दिनमे की-की भए गेल? वृन्दावनसँ आनल प्रसाद लोक सभमे बाँटल गेल। ओहीक्रमे अबैत जाइत लोक सभ कहए लागल जे गाममे मास्टर साहेब बैसार केने छलाह। ओ नव जागरण मंचक नामसँ एकटा नव पार्टी बना लेने छलाह। एहिमंचक कोनो पुरना पार्टीसभसँ कोनो मतलब नहि रहतैक। एकर सभक कहक छलैक जे समाजमे सभ क्यो बरोबरि अछि। सभ जाति एक अछि, पुरुख-स्त्रीक कोनो भेदभाव नहि। सभ मिलि कए रहए, मिलि कए जीविकोपार्जन करए। स्वतंत्रता आन्दोलन ओ सामाजिक परिवर्तन दुनू जरूरी अछि, दुनू भेटबाक चाही, मुदा शान्तिपूर्ण ढंगसँ। नीक लक्ष्यक प्राप्तिक हथिआरो नीक हेबाक चाही। ओ सभ वैचारिक दृष्टिसँ बुद्धक समीप छल। मध्य मार्गसँ, शान्तिपूर्ण असहयोग आन्दोलन चलबएमे विश्वास करैत छल। करूणा,, प्रेम ओ त्याग ओकर मूलमंत्र छल।

मास्टर साहेब हमरा नेन्नेसँ मानैत छलाह। हमरो हुनकासँ सिनेह रहबे करए। हमरा अनुपस्थितिमे ओ हमर सासुरमे बैसार केने रहथि। बैसार भेलाक बाद हमरासँ भेँट करए अएलथि मुदा हम तँ वृन्दावनमे रही। हमर ससुरसँ परिचय भेलनि। ओ यथेष्ट चन्दा देलखिन। मान-सम्मान केलखिन।

मास्टर साहेब अपन गाम लौटि गेलाक बाद किछु गोटेकेँ पुष्पाक सुधि लेबाक हेतु प्रेरित केलाह। ओकर एकमात्र पुत्र राजकुमार पुलिस हिरासतमे छल। तेँ समाजक कर्तव्य बनैत छल जे किछु करए।

मास्टर साहेबक फूककअसर भेल। ततेक असर भेल जे ओहि साँझमे दू गोटे पर्याप्त रूपैआ-पैसाक संगे काँके विदा भए गेलाह। ओहिमे तँ एकटा छल मास्टर साहेबक पुत्र किशोर आओर दोसर राजकुमारक पितिऔत हरिनन्दन। रातिभरि बसमे जागल-जागल हरिनन्दन ओ किशेर राँँची पहुँचल। ओहिठामसँ रिक्सा कए काँके अस्पताल पहुँचएमे बेस मसक्कत करए पड़लैक। राँची (काँके) मनोचिकित्सालय पहुँचि ओ सभ गुम्म पड़ि गेल।

अस्पतालक अधीक्षकसँ भेँट केलाक बाद पता लागल जे एहन कतेको महिला मरीज छथि जे सालोसँ ठीक भए गेल छथि, मुदा हुनका अपन परिवारक लोक कोनो सुधि नहि लए रहल छथि। ककरो सामाजिक प्रतिष्ठाक डर छैक तँ किओ सम्पत्तिमे संभावित बँटबारासँ बचए हेतु अपन स्वस्थ लोककेँ छोड़ि देने अछि।

अस्पतालमे घुमैत काल जखन पुष्पाक सामने आएल तँ ई देखि आश्चर्यमे पड़ि गेल जे ओ हरिनन्दनकेँ तुरंत चिन्हि गेलैक। अपितु किछु गप्पो केलकै। गोर लगलापर आशीर्वादो देलकै। मास्टरक पुत्र किशोर अपन परिचय देलकै तँ तुरंत मास्टरक हाल-चाल पूछए लगलैक।

हरिनन्दनकेँ अस्पताल अएलासँ एवम् आश्वस्त कएलासँ पुष्पाक गाम आपस जएबाक इच्छा प्रवल भए गेल। ओकरा डाक्टर पूर्ण स्वस्थ घोषित कए देलक संगहि खबरदार केलक जे एकरा कोनो तरहक मानसिक कष्ट नहि होइक से ध्यान राखल जाए। तकर बाद पुष्पा ओकरा सभक संगे गाम विदा भए गेल। रस्तामे पुष्पा काँकेक मानसिक अस्पतालक अनुभवक चर्चा करैत रहल। ताज्जुब ई लगैक जे जखन राजकुमार अपने गेलैक तँ ओकर हालत ठीक नहि रहैक। मुदा हरिनन्दनकेँ देखिते ओकर माथा सही दिशामे पलटि गेलैक। ओ सभ किछु बूझए लगलैक, सभकेँ चिन्हए लगलैक, सभसँ अपन बात कहए लगलैक। डाक्टर बेसी बात सोचबासँ, बेसी बजबासँ मना केने रहैक तथापि ओ बजिते जाइक आओर सेहो एकदम तार्किक एवम् प्रासंगिक।

सम्भवत: हरिनन्दनक आब-भगत एवम् स्नेहात्मक व्यवहार ओकर अन्तर्गगमे धसल पीड़ाकेँ शान्त कए देलकै। हरिनन्दन उदारवादी ओ शान्त विचारक लोक छल। अपनपितासँ एकदम अलग। ओकरा पता चलि गेल रहैक जे ओकर बाप ओकरा संगे कतेक अत्याचार केने छल। ओ अहि बातक क्षतिपूर्ति तँ नहि कए सकैत छल मुदा आगू जे सही सम्भव रहैक से ओ करक हेतु कृतसंकल्प छल। ओकरामे ई नैतिकता आनएमे मास्टर साहेबक सेहो योगदान छलनि। मास्टर साहेब नियमित ओकरा अपन सात्विक विचारसँ प्रभावित करैत रहलाह। हुनके द्वारा उत्साहित केलापर ओ पुष्पा माने अपन काकीकेँ आनए काँके अस्पताल पहुँचल छल। सहयोगक हेतु मास्टर साहेबक पुत्र किशोर संगे छल।

मुदा सभकेँ एहि बातक चिन्ता रहैक जे जँ ओकरा राजकुमारक पुलिस द्वारा गिरफ्तारीक समाचार भेटतै तँ फेर ने कहीं ओकर माथा घसकि जाइक। तँ ओ सभ तरह-तरहक बहाना बनबैत रहलैक। रस्ता भरि ओ अपन पुत्रक हाल-चाल पुछैत रहलैक आओर कहुनाक हरिनन्दन टरकाबैतरहल। मुदा कखनो ने कखनो ओ सही बात तँ बुझबे करतैक।

बात मास्टर साहेबकेँ कान धरि गेलनि। पुष्पा आबि रहल छथि, स्वस्थ भए गेल छथि, ताहि बातसँ ओ बहुत प्रशन्न रहथि। मुदा राजकुमार लए ओहो चिन्ताग्रस्त रहथि। स्वयं आबि गेलाह पुष्पाक हाल-चाल लेबए। पुष्पा किछुए काल पूर्व गाम आएल छलि। अबिते मास्टर साहेबकेँ देखि बहुत प्रशन्न भेलीह।

मास्टर साहेब किशोर ओ हरिनन्दनसँ सभ हाल-चाल लेलथि। ओ हिम्मती छलाह। भगवानमे विश्वास रहनि। सोचलाह जे सही बात पुष्पाकेँ कहिए देल जाए। से ओ कहि देलखिन।

राजकुमारक समाचारसँ ओ कनी चिन्तित भेलि मुदा एहि बातसँ ओकरा बहुत संतोख भेलैक जे ओ जीवित अछि, स्वस्थ अछि आओर देशक, समाजक हितमे काज कए रहल अछि।

एक युगक बाद पुष्पाअपन गाम आएल छलि। सभ बात बदलि गेल रहैक। मुदा हरिनन्दन तँ कमाल कए गेलैक। पुष्पा मास्टर साहेब ओ गामक समस्त लोकक समक्ष ओ अपन पिताक कुकृत्य हेतु क्षमायाचना केलक संगहि घोषणा केलक जे ओ पुष्पा आओर राजकुमारक संपत्ति गोट-गोटक आपस कए देत। ओतबे नहि, अपन संपत्तिक आधा हिस्सा प्रायश्चित स्वरूप समाज कल्याण हेतु मास्टर साहेब द्वारा स्थापित नव जागरण मंचकेँ दान कए देत।

चारूकातसँ थपड़ीक अबाज आबि रहल छल। सभ ओकर अपन विचारक प्रशंसा कए रहल छल। पुष्पा आश्वस्त भए सुनैत रहलि।

q

२९.

बहुत दिन बाद एहि बेर जखन खबासिनी अएलैक तँ चंगेरामे चीज-वस्तु ओ सनेस भरल रहैक। से सभ राखि आश्वस्त भेलि। फेर गप्पक क्रममे वृन्दावनमे जड़ि गरओने जा रहल भजनानन्ददासजीक चर्च करैत कहलक जे गाममे ओकर चारूकात प्रशंसा भए रहल छैक। आस-पास गामक जे क्यो ओतए जाइत अछि तकरा बेस स्वागत होइत अछि। भोजनसँ लए रहनाइ धरिक सम्पर्ण व्यवस्था ओकरे तरफसँ होइत छैक। संगहि किछु जेबीमे सेहो धए दैत छैक। ततबे धरि नहि। इलाकाक जतेक बिधबा सभ छलैक सभ ओकरा आश्रममे ढबाहि लागि गेल अछि। सुनबामे आएल जे ओहि आश्रममे दू सएसँ बेसी बिधवा रहैत छैक।

भजनानन्ददासजीक आश्रमक चर्च चारूकात होमए लगलैक। मुदा आश्रमक निवासी सभ जतेक लोक ततेक तरहक गप्प होइत छलैक। मुदा सामान्यत: लोकक ध्यान भजन कीर्तनमे लागल रहैक। प्रगतिशील विचारमंचक सम्पर्क लगातार एहि आश्रमसँ बनल रहैक। भजनानन्दजी ओकरा सभकेँ प्रचूर आर्थिक मदति करैत छलखिन। संगहि संकटक समयमे ओकर कार्यकर्त्ता सभ भेख बदलि कए कीर्तन मण्डलीमे सामिल भए जाइत छल। ककरो कनिको संदेह नहि होइत छलैक।

भजनानन्दजीक आश्रमक यश बढ़िते जा रहल छल। चारूकातक भक्त सभ आबि कए अपन सर्वस्व दान कए आश्रमवासी भए रहल छल। सभ हुनकर दिन-राति जयगान करैत रहैत छल।

राजकुमारक पुलिस हिरासत बढ़ाबएसँ जज मना कए देलक। कारण ओकरा खिलाफमे पुलिसक पास किछु सबूत नहि रहैक। असलमे ओकर ओहि बम विस्फोटमे कोनो संलिप्तता नहि रहैक। पुलिस महज संदेहपर ओकरा धए नेने रहैक। आखिर बम बिस्फोट केलक के? तकर किछु समाधान पुलिस नहि कए पाबि रहल छल। जज प्रगतिशील विचारमंचसँ प्रतिबन्ध सेहो समाप्त कए देलक।

राजकुमार जहलसँ छुटि अपन गाम आएल तँ चारूकात गर्द पड़ि गेल। मधुबनीसँ गामधरि लोकक करमान लागि गेल। लोक ओकरा फूलमालासँ लादि देलकै। जीपपर आगा-आगा ओ, पाछा-पाछा प्रगतिशील विचार मंचक कार्यकर्त्ता सभ उत्साहमे नारा लगबैत आबि रहल छल।

गाम पहुँचतहि मास्टर साहेब भेटलखिन। ओ राजकुमारक बाइज्जत रिहाइसँ बहुत प्रशन्न रहथि। राजकुमारकेँ ओकर घर धरि अरिआति मास्टर साहेब कतहु बैसारमे चल गेलाह।

खबासिनी अपन गाम घुरि गेलि। धिया-पुता आओर परिवारमे आब हम ततेक ओझरा गेल रही जे सासुरे हमर सर्वस्व भए गेल। एहिठामक माटि-पानिसँ क्रमश: सिनेह बढ़िते गेल। हमर धिया-पुता सभ छेटगर भए गेल। बेटी सभहक बिआहक समय आबि गेल छल। ओहि समयमे बेटीक माने ओकर बिआह छल। बिआह भए गेल आओर बापक गड़ासँ बुझु उतरी टुटि गेल। पढ़ाइ-लिखाइसँ कोनो मतलब नहि। चिट्ठी-पतरी जोगर भए गेल तँ बुझु परांगत भए गेल।

जाहि मिथिलामे सीताक साक्षात् आविर्भाव भेल। जतए गार्गी, भारती सन विदुषी भेलीह, ततए ई की भए गेल। सामाजिक परंपराकेँ कतए लकबा मारि देलक जे स्त्रीगण सभ घोघे ओढ़ने सासुर आएल, आओर घोघे तनने उपर चलि गेल। आओर एहि बातकेँ बहुत गौरब पूर्वक बखान कएल जाइक। ई सभ सोचि मोनमे छगुन्ता होइत छल, अपराधबोध होइत छल।

हम नहि पढ़ि सकलहुँ कोनो बात नहि, मुदा अपन बेटीसभक शिक्षाक कोनो व्योंत कोना होएत से सदिखनमोनकेँ चिन्तित केने रहैत छल। गाममे बेटीकेँ पढ़ेबाक रेबाजे नहि रहैक। तथापि जे सम्भव भेलैक, प्रयास कएलिऐक। पढ़ए लिखएमे तेजगर सभ रहैक। अवसर भेटिते आगू बढ़ए लगलैक।

हमरा तँ तीनटा बेटी छलैक। एकटा बेटो छल। कुल मिलाकए चारिटा संतान छल। ससुरक परिश्रमसँ उपजा-बारी ठीक भए जाइत छल जाहिसँ गुजर भए जाइक अन्यथा हुनकर दरमाहासँ तँ बाहरिओ खर्चा नहि चलैत।

q

३०.

गाममे रामलीला सालमे एकबेर अवश्य अबैत छल। वएह मनोरंजनक प्रमुख साधन छल। रेडियो, टेलीवीजनक तँ नामो-निशान नहि छल। फोन किओ सुनने धरि नहि छल। पोस्ट ऑफिससँ डाकपीन चिट्ठी लए अनैत छल तँ चारूकात लोक एकट्ठा भए जाइत छल। चिट्ठी लिखनाहर आओर पढ़नाहरक संख्या बहुत सीमित छल। तेँ ने जखन हरखूक घरवालीक ओतए चिट्ठी अबैक तँ सौंसे गाम चिट्ठी लए घुमैत रहि जाइत छल तँ मोसकिलसँ किओ चिट्ठी पढ़ितैक। ओ चिट्ठी की होइत छल। बस हरखू द्वारा ओकर पत्नी (बरहरबावाली)क बारंवार चेतौनी छल जे ओकर माएकेँ तंग नहि कएल जाइक।

“बरहरबावाली को खबरदार! माता राम को प्रणाम! कि तुम चला आओ। अलीपुर द्वार से- पलटन राउत।”

बेरि-बेरि अपन माएकेँ अपना लग बजाबै आओर बरहरबावालीकेँखबरदार करैक जे ओकरा माएकेँ नीकसँ राखल जाए, तंग नहि कएल जाए। जहिआ कहिओ हरखू गाम अबैत माए लेल नुआ, ओढ़ना अबश्य आनैत।

बरहरबावालीक हेतु सेहो सभ किछु आनैत। सभ धिया-पुताक हेतु किछु-ने-किछु आनैत। मुदा हरखू माए ओकरा अबिते कान फूकए लागैक। बस, शुरू होइक बरहरबावालीक मारि-गारि। ई क्रम चलिते रहैक। कखनो मानैक, कखनो पीटैक। ओ दुनूकेँ प्रशन्न रखबाक प्रयासमे ककरो सन्तुष्ट नहि कए पबैत छल।

जाबे गाम रहए हमरा सभक ओहिठाम नियमित अबितए, घरक काज कए दैत। तरह, तरहक परदेशक गप्प-सप्प सुनबैत। ताज्जुब बात ई जे ओ हरदम हँसैत रहैत। एकबेर अहिना कमाकए गाम आबि रहल छल कि सस्ता सोना कीनबाक एबजमे सभटा टाका ट्रेनमे ठकि लेलकैक। मुदा हरखू छल दिलदार। जाबे गाममे रहैत हरहरऔने रहैत। चीलम पीबाक आदी छल से साँझकए सौटा लगा अबैत छल। गाममे चीलम पीबए हेतु कै गोटे धारक कातमे एकट्ठा होइत छलाह। जाबे गाम रहए ईहो ओतए जरूरसँ हाजिरी लगाबैत।

गामसँ अलीपुर द्वार जाइत काल हमरा आँगन अवश्य अबैत छल। सभकेँ पैर छुबि प्रणाम कए प्रस्थान कए जाइत। जाइत-जाइत अपन लोकसँ फटकी हेबाक दरेग फटैक। कानि कए कहैत-

“मलकानि! अहीं पर सभके छोड़ि कए जा रहल छी।”

उपाये की रहैक। गाम-घरमे आब गुजर होइत नहि छल। जाबे से होइत छल, ताबे तँ कतहु नहि गेल। अपन गिरहथक सपरिवार सेवामे लागल रहल। मुदा समय बलवान होइत छैक। सभ किछु बदलि गेलैक। हरखूक आधा मोन अलीपुर द्वार आओर आधा गाममे रहैत छलैक। बहुत अछता-पछता कए ओ परदेश विदा भए गेल।

हरखूकेँ परदेश गेला मास दिन भेल हेतैक कि एक दिन बरहरबावाली जोर-जोरसँ दहाड़ि पाड़ि रहल छलि। चारूकातसँ लोक जमा भए गेलैक। कतबो लोक पुछैक किछु बजबे नहि करैक। छातीमे जोरसँ मुक्का मारैत आओर कहैत-

“गड़ा कटि गेल। औ बाबू सभ। गड़ा कटि गेल।”

अहिसँ आगा किछु नहि। लोककेँ किछु बुझेबे नहि करैक। लोकक करमान लागि गेल। बरहरबावाली दहाड़ि पारि रहल छलि। गामक लोक सभ तरह-तरहक अनुमान लगाबए।

“कहीं पलटनमाकेँ तँ ने किछु भए गेलैक? आकि नैहरमे किछु उनट घटि गेलैक?”

तरह-तरहक कबाइत लोक करैत रहल। मुदा बरहरबावालीक हाकरोस करबाक रहस्य नहि बुझएमे आएल। ई धमाचौकरी चलिए रहल छल कि अँगनासँ बाहर एकटा बाँसक चोंगा भेटलैक। क्यो ओकरा बरहरबावाली लग उठौने आएल। चोगा देखिते बरहरबावाली बकए लगलैक-

“एहीमे पाँच सए टाका रखने छलहुँ। सभटा टाकामे घून लागि गेल, औ बाबूसभ!”

खुंडी, खुंडी काटल टाकाक बुकनी बनि गेल छल।आब लोक बुझलक जे ओ एतेक किएक छाती पीटि रहल छलि। मुदा आब भइए की सकैत छल? जे क्षति हेबाक छलै से भए गेलैक। आब ओ लौटि थोड़े आएत।

चारूकातसँ सभ ओकरा बुझाबक प्रयास केलक। मुदा ओ कनैत-कनैत थाकि कए निष्प्राण सन भए आँगनमे टगि गेल। लोक सभ एक-एक कए ससरि गेल।

एहि तरहक हृदय विदारक दृश्यक कोनो समाधान गाम-घरमे नहि छल। एक तँ गरीब-गुरबा लग टाका रहिते ने छलैक। आओर जँ कतहुसँ किछु आमदनी भेबो कएल तँ ओ कर्जाक सुदि सधबएमे चल जाइत छलैक। सभकेँ एहि बातक छगुन्ता लगैक जे बरहरबावालीकेँ एतेक टाका कतएसँ आएल?

बहुत दिनक बादमे गाममे रामलीला पार्टी आएल छल। अगहनी बीति गेल रहैक। सभक घर-आँगन अन्न-पानिसँ भरल रहैक। घरे-घर हकार दए गेलैक। महादेव मन्दिर लग राम लीला पार्टीक टेंट लागल छल। धिया-पुता सभ एहि बातसँ अतिशय प्रशन्न छल।

गाममे रामलीलाक आयोजन उत्सव जकाँ मनाओल जाइत छल। ओकर सभहक खेबा-पीबाक व्यवस्था गामक लोक सभ करैत छल। ताहि हेतु रामलीलाक मंचपर लोककेँ भगवानकेँ माला पहिराबक हेतु आवाहन कएल जाइत छल। जे भगवानकेँ माला पहिरबितथि हुनके एक दिनका मण्डलीक भोजनक व्यवस्था करक होइत छलनि। मंचसँ हुनकर नामक एलान होइत छल। लोक सभ हुनकर जयकारा लगबैत छल। आओर तकर बादे रामलीलाक कार्यक्रम प्रारम्भ होइक।

साँझ पड़िते लोक रामलीला देखए विदा होइत आस-पासक धिया-पुता सभ आगा बैसबाक हेतु पहिनहिसँ तैयारी केने रहथि। लोकक संख्या बढ़िते जाइत छल।

रामलीलाक बीच-बीचमे तरह-तरहक हास्यक मंचन होइत छल जाहिसँ लोकक मोन लगैक। कखनहुँ काल फिल्मी गीत सेहो लोकक फरमाइसपर गाओल जाइत छल। करीब मास भरि चलएबला एहि आयोजने लोकक अन्त राज्याभिषेकसँ होइत छल। भगवानकेँ घरे-घर घुमाओल जाइत छल। लोक सभ यथा साध्य टाका, अन्न-पानि चढ़ाबैत छलाह।

q

३१.

ओहि साल कृष्णाष्टमीक अवसरपर आश्रममे उत्सव भेल। से तेहन भेल जे देखएबला रहैक। लगैक जेना समस्त वृन्दावन उमरि पड़ल अछि। गबैआ सभ कृष्ण भजनक से सुर-तान धेलक जे सभक हृदय ओ मोन कृष्णमय भए गेल।

भजनानन्ददासजी महराजक जय! कीर्तन मण्डली महराजजीक पाछा-पाछा गबैत-नचैत चलि रहल छल। सभक गाल अबीरसँ झक-झक, लाल टुह-टुह कए रहल छल। मृदंग, ढोल, झाइल ओ नगाराक स्वरक संग भजन गायक पंक्तिबद्ध चलि रहल छलाह। एहन भारी उत्सव तँ बिरलैके देखएमे अबैत छल।

आश्रमवासी दूसएसँ अधिक बिधवा सभ एकस्वरमे भजन करैत, नचैत, गबैत पाछा, पाछा चलि रहल छलि।

एवम् प्रकारेण समस्त वृन्दावनक परिभ्रमण कए जखन साँझमे भजनानन्दजी सदल-बल आश्रम आपस अएलाह तँ प्रशन्नता ओ विजयक दर्पसँ हुनकर मुख मण्डल प्रात:कालीन भगवान भास्कर सन रक्तिम आभासँ ओत्-प्रोत् लागि रहल छल। ताबतेमे आश्रमवासी चेला, चेलीसभ जोरसँ चिकरल-

"भजनानन्ददास महराजक जय!"

ई एकटा महज संयोगे रहैक जे ओहि समय हम सभ सेहो वृन्दावन गेल रही। बहुत दिनसँ भजनानन्ददास माने गरम सिंहक किछु समाचार नहि बुझाइत छल। खबासिनी गाम आएल तँ ओकरो किछु समाद नहि रहैक। बहुत दिनसँ कतहु बहराएलोनहि रही, से मोन उबि गेल रहए। तँ सभ गोटेकँ विचार भेलैक जे चली तीर्थ घूमि आबी। एहिबेर हमर सासु गामे रहि गेली। कारण किओ-ने-किओ तँ ओतए बच्चा सभक देख-रेख हेतु चाही। अस्तु, हम दुनू व्यक्ति, हमर ससुर आओर गामक तीनटा मसोमात सभ संगे विदा भेलहुँ। खबासिनीकँ सेहो संग लए लेलिऐक जाहिसँ रस्तामे आओर ओहूठाम मदति करत।

मदति ओ की करत? वृन्दावन पहुँचते दुखित पड़ि गेल। आब तँ पहिने ओकर इलाज कराउ। ताहीक्रममे सभक विचार भेलैक जे भजनान्द दासेक मदति लेल जाए परन्तु ओहिठाम तँ जबरदस्त उत्सवक महौल छल। के ककरा पुछैए? तथापि हमसभ ओही आश्रममे डेरा लेलहुँ। संयोगसँ बगलेमे एकटाबैद रहथि। ओ किछु जड़ी-बुटी देलथि जाहिसँ खबासिनी शीध्र नीक भए गेल।

भजनानन्ददासकँ देखि कए के कहत जे ई वएह गरम सिंह थिक। नाकपर ठढ़का चानन, त्रिपुंड, पिअरका वस्त्र, राधे-राधे लिखल दोशाला सदिखन ओढ़ने चलैत तँ राधे, बजैत तँ राधे, हँसैत तँ राधे! राधे!

की कमाल छैक? समय ओ परिस्थिति जे नहि कए दैक। हमरा लोकनिकँ देख भजनानन्ददास (उर्फ गरम सिंह) तुरन्त अपन चेलाकँ पठओलक आओर समाद दिओलक जे साँझमे निचैनसँ गप्प-सप्प करब। ओहिना गाम आपस नहि चल जाथि। स्कूलिआ संगी छल। सन्तक वगए से धए लेने छल। स्पष्टत: ककरो अहित करैत नहि देखाइत छल। अस्तु, सभहक विचार भेलैक जे साँझमे ओकर भेँट कएल जाए।

साँझ पड़िते दूटा चेला हमरा सभकँ संग कए भजनानन्ददासजी महराज लग लए गेल। हमरा सभ कि दण्डवत होइतहुँ- जे पहिने वएह हाथ जोड़ि ठाढ़ भए गेल। कुशल-क्षेम पुछलक। मसोमात सभक परिचय पाती भेलैक। ओकरा पता रहैक जे काल्हि भेने हम सभ काशीक हेतु प्रस्थान कए जाएब। हमरा लोकनिक बहुत मान-दान भेल। यथेष्ट विदाइ भेटल आओर अबैत रहबाक आमंत्रण सेहो।

भजनानन्ददासक विनीत व्यवहार देखि पाथरो पानि भए जाइत। हम सभ तँ मनुक्खे रही। फेर हम तँ ओकर स्कूलिआ संगी रहिऐक। मसोमात सभकँ सेहो ओकर व्यवहार नीक लागि गेलनि। ओ सभ किछु दिन आओर ओहि आश्रममे रहबाक हेतु तैयार भए गेलीह। ताहि बातसँ भजनानन्ददासजी अत्यन्त प्रशन्न भेलाह। चेला सभकँ हुनका सभक उचित देख-रेख करबाक आदेश देलखिन। हमसभ पूर्व निर्धारित कार्यक्रमसँ काशी विदा भए गेलहुँ।

काशी, प्रयाग होइत हम सभ गाम आपस अएलहुँ आओर खबासिनी ओम्हरेसँ गाम चलि गेलि। गाम जाइत काल दड़िभंगा टीशनपर ओ हमरा असगर पाबि कानमे कहलक जे भजनानन्ददास ओकरा चिन्हलकै। गाम-घरक

हाल-चाल पुछैत रहैक आओर अबैत काल भरि ऑंजुर चानीक सिक्का पकड़ा देलकैक। कहलकैक जे एकरासँ अपन घर बान्हि लिअह। गौंवा, घरुआ जे जतए देखेलैक सभकेँ ओ अपना भरि स्वागत केलक। ककरो उपेक्षा नहि होमए देलकैक।

भजनानंद दासकेँ चिन्हि तँ हमहुँ गेल रहिऐक मुदा हमरा ओकरासँ किछु लेबाक मोन नहि केलक। अपना भरि ओ बहुत आग्रह कएलक। जे छै, मुदा एतबा तँ तए रहैक जे ओ भगवानक शरणागत भए गेल रहए। जटा जूट बढ़ा लेने रहएकि बढ़ि गेल रहैक। मुदा गाम घरक लोककेँ कनिको उपेक्षा नहि करैक।

q

ऐ **रचनापर अपन मतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु (उपन्यास)- आगाँ आ दूटा लघुकथा

१

जगदीश प्रसाद मण्डलक

पंगु

उपन्याससँ...

6.

जखनसँ देवचरण अपन पोताकेँ कहलैन जे 'बौआ, साँझू पहर, परिवारक सभ एकठाम बैस आगूक विचार करब' तखनसँ हिनका मनमे बेर-बेर वएह प्रश्न घुरियाए रहल छैन जे परिवारमे जहिना अवोध-अनाड़ी[i] हरिचरण अछि, तहिना तँ आनो-आन अछिए, मुदा परिवारक भार तँ ओकरे सबहक ऊपर ने पड़त। तँए केतेक भार कोन रूपे केकरा देल जाए, तेकर निर्णय करब साधारण बात नहियेँ अछि। मुदा नइ रहितो भार तँ ओकरे देब अछि। ओना, अखन अपनो जीबै छी आ पिता-माताक संग दादीसेहो हरिचरणक सोझामे छइहे,जइसँ कोनो काज जँ गरुगर बुझियो पड़तै तँ दोसर-तेसरसँ पुछि ओइ काजकेँ सही ढंगसँ कएलो तँ जाइए सकैए। जैठाम से नहि रहैए तैठाम ने काजक सफलतामे किछु-ने-किछु गड़बड़ी होइक सम्भावना सेहो रहिते अछि। ओना, मनुखक समाजिक जीवन ओहन अछिए जेकर जीवन धार[ii] समाजक धार होइत प्रवाहित होइए जइसँ देखैक, जनैक आ करैक सम्भावना सेहो रहिते अछि। हँ, जैठाम समाजिक जीवन नइ रहल, माने बेकतीगत जीवनधाराक धार ओइसँ भिन्न रहल तैठाम बेकती औआ-वौआ जाइते अछि। मुदा जैठाम बेकतीक जीवन धार समाजिक जीवन्त धाराक संग प्रवाहित होइए, तैठाम तँ किछु-ने-किछु सिखबो आ सम्हरैयोक उपाय रहिते छइ।

जहिना देवचरणक मनअपन पोताकभविसक दिशा निर्धारित करैमे ओझराएल छेलैन तहिना हरिचरणक मनमे सेहो बेर-बेर प्रश्न उठि रहल छल जे बाबा की कहता, की पुछता आकि की करैले कहता।खाएर जे कहता मुदा बुझब तँ सुनला पछातिये ने आ बुझला पछातिये ने ओकरा सम्हारबोक कोशिश करब। बिनु बुझल आकि बिनु विचारल काज करैमे किछु-ने-किछु ओहन विघ्न-बाधा एलापर समस्यामे लोक पड़िते अछि। जहिना नव जगह, माने बिनु देखल-जानल जगह वा बिनु बुझल-जानल काज, नव लोकक लेल अन्हराएल जकाँ रहिते अछि, मुदा वएह काज सफलतापूर्वक केला पछाइत जीवन-शक्तिमे तीव्रतो तँ अबिते अछि।

दिन बीतल। ओना, देवचरण अपन पत्नीसँ आ पुतोहक बीच परिवारिक आन-आन गप-सप्प करैथ, मुदा साँझुका बात-विचार करैक योजना अखन तक दुनूमे सँ किनको ने देवचरणे कहने छेलखिन आ ने हरिचरणे कहने छेलैन। तँए हरिचरणक दादियो आ माइयोक मनमे कोनो विचारक बिन्दु उठबे ने कएल छेलैन। ओना, जखन सभ एक्के परिवारमे छीआ परिवारेक जिनगीक बातो अछि, जे किछु-ने-किछु सभकेँ बुझलो छैन्हे, तैबीच साँझुका बैसारक जानकारियो देब ओते महत् नहियेँ रखैए, जेते आनक संग रहैए। जिनगीक नीक-बेजाए बातो आ काजोक तँ किछु-ने-किछु जानकारी रहने सुगमसँ विचारोकेँ बिकछाएब आ काजोकेँ फरिछाएब सहायक होइते अछि। मुदा ऐठाम तँ से नहि अछि। ऐठाम तँ परिवारिके विचारो छी आ काजो छीहे। हँ, जँ कोनो नव काजे आकि नव विचारे रहैत तखन सामान्य जिनगीसँ[iii] हटलो रहैत जइसँ किछु-ने-किछु नीक-बेजाइक सम्भावना रहबो करैत, मुदा सेहो तँ नहियेँ अछि।

साँझक आगमन भेला पछातियो, ने देवचरणेक मनमे कोनो तरहक उथल-पुथल छेलैन आ ने परिवारक आने-आन जनक बीच। सासु-पुतोहुकेँ बुझले ने छेलैन तँए हुनका दुनूक मनमेउथल-पुथलक कोनो सम्भावनो किए रहितैन। देवचरण तँ सहजे परिवारमे सहयोगीक रूपमे पोतापर नजैर गड़ौनहि छला तँए हिनका मनमे कोनो तरहक मलिनता किए रहितैन। हँ, हरिचरणक मनमे किछु-ने-किछु उथल-पुथल जरूर छल। बाबा की कहता की नहि..! बर्खाक पानिक बुलबुला जकाँ हरिचरणक मनमे विचार उठबो करै छेलै आ अपने फुटि-फुटि मेटेबो करै छेलइ।

अपन निर्धारित समयक हिसाबसँ किछु पहिनहि देवचरण दरबज्जापर बैस मने-मन विचारए लगला जे कोन रूपे हरिचरणकेँ बुझौल जाए। ओना, परिवार सभमे एहनो होइते अछि जे जे परिवारक सिरजन[iv] रहला ओ सबहक काजकेँ आँकि-आँकि फुटा-फुटा सभकेँ करैले कहिते छैथ, जइसँ परिवारक सम्मिलित काज रहितो एक-दोसराक बीच दूरी रहिते अछि, माने ई जे सभकेँ सभ काज नहियाँ बुझल रहल। ओना, एहेन भेलासँ एकटा एहेन विचार जगिते अछि जे आनक काज नहि बुझल रहने दोसरक मनमे उठि जाइए जे हमहींटा काज करै छी आ दोसर-तेसर बैसले रहैए, तँए परिवारक जँ सभकेँ सबहक काजक जानकारी रहल तँ सबहक मनमे एहेन विचारक आगमन भइये जाइए जे सभ अपन-अपन काजक पाछू लागल छैथ, जइसँ किनको मनमे काज नइ करैक शंकाक आगमन नहियेँ होइए। तैसंग ईहो लाभ तँ होइते अछि जे परिवारक सभ काज सबहक नजरियोपर रहल आ केकरो बैसल रहैक शंका नइ रहने सबहक प्रति सबहक मनमे प्रेमो बढ़ल।

देवचरण ई सोचि काजक निर्धारित समयसँ पहिने काजक पाछू लगि गेला जे जँ कोनो काज करैसँ पहिने ओइ काजक भूत-भविसपर नजैर दौड़ा देब तँ ओइ काजकेँ सफल होइक बेसी सम्भावना बनियेँ जाइए। जँ से नइ भेल तँ काजक बहुतो बिन्दुगप-सप्पक क्रममे नजैरपर नहियाँ चढ़ैए, जइसँ विचार केला पछातियो किछु-ने-किछु बिन्दु छुटल रहि गेने काजमे कमी होइते अछि।

देवचरणकेँ दरबज्जापर बैसल देख हरिचरण सेहो आबि कऽ बैसल। मुदा बाजल किछु ने।

हरिचरणकेँ चुपचाप बैसल देख देवचरणक मनमे जगलैन जे जखन दुनू गोरे काज करैक क्रममे उपस्थित भइये गेल छी, तखन जँ चुपचाप समयकेँ निकलए दिऐ सेहो नीक नहियेँ हएत। देवचरण बजला-

"बौआ, जखन दुनू गोरे काजक विचार करैले एकठाम बैस गेलौं तखन माइयो आ दादियोकेँ बजा लहुन।"

बाबाक आदेशमे बिना किछु जोड़-घटाउ केने हरिचरण आँगन जा दादियो आ माइयोकेँ कहलक। ओना, ओहो दुनू गोरे बिना किछु बजने-भुकने हरिचरणक संगे दरबज्जापर पहुँचली। राधाचरण सेहो परिवारक प्रमुखजनक सीढ़ीपर छलतँए ओकरो

रहब अनिवार्य होइतै मुदा ऊहि नइ रहने परिवारक गौण-पात्र बनि गेल अछि। होइतो अहिना छै जे जइ परिवारमे जे जन जेहेन ऊहिगर रहल ओ अपन ऊहिक हिसाबसँ परिवारक क्रियामे ओत्ते संलग्न भइये जाइए।

तीनू गोरेकेँ देख देवचरण बजला-

''बौआ, जइ परिवारमे अपना सभ छीओ परिवार एक्के गोरेक नहि, सबहक छी। तँए सभकेँ अपना-अपना उकितिये ऐ विचारकेँ नीक जकाँ मनमे रोपि अपना-अपनाकेँ ओइमे संलग्न रखबाके चाही। जँ से नइ हएत तँ किछु गोरेकेँ काजो आ जवाबदेहियोमे उदासीनता औत आ किछु गोरे जे अपन परिवारकेँ अपन बुझि सेवा करत ओ दोसरसँ अपनाकेँ महत्पूर्ण बुझबे करत। तँए सबहक बीच सबहक काजक जानकारी रहब जरूरी अछि।''

ओना, हरिचरण अछि तेरहे-चौदह बर्खक, मुदा देवचरणक विचारकेँ नीक जकाँ बुझि गेल। बाजल-

''बाबा, ई तँ भेल वैचारिक क्षेत्रक बात, मुदा बेवहारिक क्षेत्र तँ ऐसँ अलगो भऽ सकैए किने?''

हरिचरणक विचार सुनि अपन सहमत जतबैत देवचरण मुड़ी डोलबैत बजला-

''बेस बात बौआ कहलह। परिवार तँ काजक धुरी बना कऽ ने चलैए। तेही सबहक विचार करैले ने कहने छेलियह जे सभ कियो एकठाम बैस एक मतक रस्तासँ परिवारकेँ आगू दिस बढ़ाएब।''

देवचरणक विचार सुनि हुनक पत्नी सिंहेसरी बजली-

''हम दुनू सासु-पुतोहु स्त्रीगणे भेलौं, केतबो हएब तँ अपन घरे-अँगना आ खेते-पथार धरि हएब। तहिना हरिचरण सेहो बाले-बोध भेल। राधाचरणक कोनो ठेकाने ने अछि जे ओ की अछि आ की करत।''

पत्नीक विचार सुनि देवचरण मुस्की भरैत मुड़ी डोला-डोला मने-मन विचारए लगला। पत्नीक विचार सेल्होअना सत् अछि, मुदा सत् रहितो सोल्होअना उचित केना कहल जाएत? हँ, जइ परिवारमे पुरुख जीवित रहला, माने पुरुख प्रधान परिवारमे एहेन विचार सम्भव भइयो सकैए, मुदा जइ परिवारमे पुरुख नइ रहला तइ परिवारमे तँ महिलेक ने प्रधानता हएत। तैठाम हिनक विचार केना सम्भव भऽ सकत। मुदा अखन तँ गाम-समाजक विचार करए नहि बैसल छी, अखन तँ मात्र अपन परिवारक विचार करए बैसल छी, तँए अखन तँ पुरुखे प्रधान परिवार भेल। नीक हएत जे पहिने अपन परिवारक भूतक जानकारी संक्षेपमे सभकेँ दिऐ। जहिना कोनो धारक उद्‌गम स्थलसँबीचक प्रवाहित होइत धाराक धार अन्तिम कोनो अगम धारे वा समुद्रेमे समाहित होइए तहिना ने परिवारोक अछि। ओना, पहाड़क दोसर रूप अछि। ओ धरतीपर उठल रहैए, जेकरा चोटीपर चढ़ैमे बहुत अधिक भीरो होइए, मुदा ओइठामसँ पुन: निच्चाँ उतरैमे, माने धरतीपर अबैमे, चढ़ाइ काल जेहेन मेहनत भेल रहत तेहेन ढलानपर ढलकैत उतरैमे भीर नहियेँ होइए। जखन कि रस्ता दुनूक चढ़ैयो आ उतरैयोक एक्के रहैए। मुदा ऐठाम तँ परिवारक विचार करैक अछि। परिवारक रस्ता धारो आ पहाड़ोसँ भिन्न अछिए। किए तँ धारे-पहाड़ जकाँ परिवारोक गति-विधि तँ अछि नहि। ऐठाम मनुखक बीचक रस्ता अछि। जइमे समाजिक परिवेशक संग शासकीय परिवेश सेहो अछि। शासन तंत्रक अनुकूल परिवारक परिवेश बनैए। जँ शासन-तंत्र परिवार पक्षी रहल तँ सुगम रहल आ जँ शासन-तंत्र प्रतिकूल रहल तँ विपरीत परिवेश बनिते अछि। खाएर जे अछि जेतए अछि से तेतए रहह। ऐठाम तँ अपन बाप-दादाक निरमौल परिवार अछि, जेकर अपन इतिहास अछि। मुस्कियाइत देवचरण पत्नी दिस देखैत बजला-

''अहाँक विचार तँ नीक अछिए मुदा जखन सभ कियो मनुखवंशक मनुख छी, तखन देह-हाथ छीपलासँ थोड़े हएत।''

बजैक क्रममे देवचरण बाजि तँ गेला मुदा लगले मनमे उठए लगलैन जे अनेरे कोन विचार दिस भँसि गेलौं। अखन तँ हरिचरणकेँ परिवारक प्रमुख कर्त्ताक रूपमे ठाढ़ करैक अछि...।

बिच्चेमे हरिचरण बाजल-

''बाबा, अखन जइ विचारे सभ कियो एकठाम बैसलौं हेन, पहिने ओकर विचार करू, पछाइत समय रहलापर आरो-आरो बात-विचार करब। ने कियो आन छी आ ने आइये भरि समयो अछि।''

ओना, हरिचरणक विचारसँ दादीक मनमे कनी कुवाथ जरूर भेलैन। कुवाथक कारण छेलैन अपन विचारपर सँ नजैर हटाएब,मुदा बाल-बोध हरिचरणकेँ बुझि मुँह बन्ने रखली। जे बात देवचरण बुझि गेला। मुदा ओइ विचारकेँ पुन: जागृत नहि करैत अपन परिवारक विचार उठबैत बजला-

“बौआ हरि, साठि बर्खक परिवारिको जिनगीक आ शासनोक चढ़ाव-उतारक अनुभव अछि, जे तोरा नइ छह। तँए, संक्षेपमे पहिने ओ विचार भूमिका रूपमे जानि लेबबेसी नीक हेतह।”

जहिना असथिर भेल पोखैरक पानिमे आ प्रवाहित होइत धारक पानिमे हेलैक अलग-अलग लूरिक जरूरत होइ छै, माने पोखैरक हेलब जकाँ धारमे हेलब तँ डुमिये जाएब। किएक तँ प्रवाहित होइत धारक धारामे हेल कऽ पार करैमे दोहरी सावधानीक जरूरत होइ छइ। पहिल, धारक धारेमे ने भँसि जाए, आ दोसर पार करब तँ अछिए। जे पोखैरमे नइ होइए। पोखैरमे मात्र एकटा सावधानीक खगता रहैए, एक महारसँ दोसर महारपर जाएब। हरिचरण बाजल-

“बाबा, परिवारक जे पैछला धारा रहलमाने इतिहास, ओ तँ आब भूत बनि चुकल अछि, ओकरा तँ वर्तमानक नजैरसँ नहियेँ देखल जा सकैए, मुदा जहिना वर्तमान भूतपर ठाढ़ अछि आ भविस दिस बढ़ैले हियासि रहल अछि, तहिना ने ओकरा मजगूतीक संग पकड़ैयोक अछिए।”

ओना, परिवारमे हरिचरण बाले-बोधक श्रेणीमे अछिमुदा यएह बाल-बोध ने भविसमे परिवारक मेह रूपमे ठाढ़ हएत। जहिना भिनसुरका सुरुज देख लोक अनुमान करैए जे आजुक दिन केहेन हएत तहिना हरिचरणक बातकेँ सीमांकित करैत देवचरण बजला-

“बौआ हरि, परिवारमे दू रंगक सदस्य होइए, पहिल पुरुख आ दोसर महिला। अखन तक जे अपना सबहक परिवारक धारा रहल,ओइमे जहिना पुरुखक लेल घर-बहार जाइ-अबैले, करै-धड़ैले सगतैर खुजल रहैए तहिना महिलाक लेल सगतैर तँ बन्धन लगले अछि। पुरुखक अछैत जँ महिला परिवारसँ निकैल परिवारिक क्रिया-कलाप करैयो चाहती तँ परिवारक संग समाजोक लोक ऑंगुर बतेबे करतैन।”

बिच्चेमे हरिचरण बाजल-

“एकरा के काटत! एहेन तँ सभ दिन होइते आबि रहल अछि!”

पैछला विचारकेँ देवचरण सोल्होअना कबुल लेलैन, मुदा भूतक कबुल कएल विचारकेँ भविसमे केना कबुलनामा बनौल जाए,ऐठाम आबि अँटैक गेला। देवचरण एक दिस जखन पाछू दिस हिया कऽ देखए लगैथ तँ साफ देखा पड़ैन जे परिवारक जे पैत्रिक सम्पैत अछिओ तँ नष्ट भऽ गेल छल, मुदा परिवेश एहेन बनल जे ओ पैछला पीढ़िक अरजल सम्पैत पुन: परिवारमे जुड़ि गेल। तहिना आइ धरिक जे समाजिक राज-सत्ता रहल ओ गुलामीक रहल, माने विदेशी शासनक, जे मटियामेट भऽ पुन: स्वतंत्र रूपमे जीवित भऽ गेल। मुदा अपन जे जिनगी रहल तइमे आ आगूक जे हरिचरणक जिनगी हएत ऐमे विपरीत सम्बन्ध अछिए। तँए, पैछला जिनगीकेँ इतिहासक पन्नामे समैट ऐगला जिनगीक ने दिशा बोध करब जरूरी अछि...।

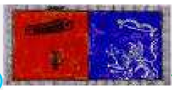
देवचरण बजला-

“बौआ हरि, अखन धरिक जे परिवारक इतिहास रहल ओ पंगुक रूपमे रहल। माने जेहेन जिनगीमे लोक स्वच्छन्द साँस लैत बिचड़ैएसे तँ नहियेँ रहल। तैयो अपन साठि सालक जिनगी कटि गेल। मुदा आब जखन अपना दिस तकै छीतँ बुझि पड़ैए जे देहमे ओहन शक्ति नहि अछिजेकर उपयोग करैत परिवारक गाड़ीकेँ आगू मुहेँ ससारब, तँए जाबे जीबै छीताबे जहाँ धरि सम्भव हएत से तँ करबे करब, मुदा...।”

'मुदा' कहि देवचरणकेँ चुप होइत देख हरिचरण उत्सुक होइत बाजल-

“तखन?”

देवचरण बजला-



“तखन यएह जे परिवारक जे पंगुपन रहल ओकरा पूर्ति करैत, ओइ पंगुपनकेँ मेटबैतजहिना चिड़ै अकासमे स्वच्छन्द जीवनक साँस लैत उड़ैए तहिना परिवारोकेँ बनाएब छह।”

देवचरणक विचार सुनि जेना सभकियो[v] पंगुपनक गम्भीरताकेँ बुझि गेल तहिना सभ सभ दिस नजैर दौड़बैत, गम्भीर होइतचुपचाप उठि-उठि अपन-अपन जीवन-क्रिया दिस बढ़ए लगल।

q
शब्द संख्या : 1853, तिथि : 30 मई 2018

जारी....

---

[i]परिवारिक जिनगीले-

[ii]मनुखक जिनगीक क्रिया

[iii]गतिशी जिनगीसँ

[iv]श्रेष्ठजन

[v]पत्नी, पुतोहु, आ पोता

जारी....

२

जगदीश प्रसाद मण्डल

दूटा लघुकथा-

‘मानसरोवर यात्रा’, ‘करतब’

मानसरोवर यात्रा

परिवारक सात भाँइक भैयारीमे वैज्ञानिक भाय माने जीतनलाल भाय जेठ छैथ, जे दिसम्बरमे सेवा निवृत्ति भऽ भाभा शोध संस्थानसँ गाम आबि गेला। बच्चेसँ प्रखर बुधिक रहने जीतनलाल भाय गामक स्कूलसँ एम.एस-सी.तक प्रथम स्थान पबैत रहला। ओना,शुरूमे माने हाइ स्कूलसँ कौलेज धरि मनमे यएह विचार रोपने छला जे एम.एस-सी.क पछाइत कौलेजमे

नोकरी करब, प्रोफेसर बनब। मुदा एम.एस-सी.क रिजल्ट निकैलते भाभा शोध संस्थानमे भेकेन्सी भेल, जीतनलाल भाय अप्लाइ केलैन आ सलेक्ट भऽ गेला।

अड़तीस बर्खक सेवाक पछाइत वैज्ञानिकजी 5 दिसम्बरकेँ संस्थानसँ सेवा निवृत्ति भेला। जुलाई मासक पहिल सप्ताह, आद्रा नक्षत्र काल्हिये समाप्त भेल। सालक अखन तकक जे मौसम रहल माने बरसातक, ओ अनिश्चित रहल। अनिश्चित भेल जे ऐगला समय माने बरसातक केहेन हएत तेकर अनुमान ठीक-ठीक नइ लागब। जहिना भिनसुरका सुर्ज देखलासँ लोक अनुमान तँ कइये लइ छैथ जे औझुका दिन केहेन हएत। तहिना सालक तीनू मौसमक सेहो अछि। तीन मौसम भेल जाड़, गरमी आ बरसात। कोनो मौसमक, पूर्व पक्ष माने चारि मासक मौसममे शुरूक जे एक-सवा मास होइए, ओकर सीख-लीख पकैड़ लोक अनुमान लगा लइ छैथ जे मौसमक ऐगला रूप केहेन हएत, से नइ भेल। किए तँ अखन तक जे समय बीतल छल ओ ने रौदियाहेक आभास दइ छल आ ने तेहेन विकराल बरसातेक। शुरू जेठमे एकटा नमहर बरखा भेल जइसँ किसान सभ अपन गरमाधानक बीआसँ लऽ कऽ अगहनी-धानक बीआ तक पाड़ि लेलैन। ओना,बीआ पाड़ला पछाइत केते गोरेक मुहसँ निकलल छेलैन जे ऐबेरक समय सवारी हएत जइसँ मौसमो आ समयो नीक रहत। जखन मौसम नीक रहत तखन उपजा-बाड़ी सेहो नीक हेबे करत। संजोगवश जेठ मासक बीच-बीचमे दूटा हाली बरखा भेबो कएल, जइसँ धानक बीआक उपज नीक रहल। शुरू अखाढ़मे माने आद्रा नक्षत्रक पहिल दिन नीक बरखा भेल, जइसँ तीन-चारि दिन धुरझार धनरोपनी चलल, एक चौथाइसँ बेसी खेत अबाद भऽ गेल। मुदा पोखैर-झाँखैर नहि भरल तइसँ केते गोरेक अनुमान ईहो हुअ लगल छेलैन जे जँ आद्रामे भूमि भरल नहि तखन रौदियाहे समय मानल जाएत। ओना, ढेनुआर नक्षत्र सभ पछुआएले अछि, तँए पानिसँ भूमि भरैक सम्भावना समाप्ते भऽ गेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। आद्रा नक्षत्रक उतारमे सेहो एकटा बरखा भेल जइसँ दू दिन रोपनी चलल, मुदा पोखैर-झाँखैर खालीक-खालिये रहि गेल। आद्राक शुरूक बरखामे जेतेक पानि पोखैरमे बेसियाएल छल ओ तेरह दिनक जेठुआ रौदमे सुखि कऽ कमियाइये गेल। ओना, आम-जामुनक सुभर पैदावार भेबे कएल अछि।

रेडियोओ-अखबारो सभसँ मान सरोवरक महात्मक भरपूर प्रचार शुरू भेल। गाम-घरक लोक तँ कम्मो मुदा महनथानो सबहक आ शहरो-बजारक लोक सभ आकर्षित भेबे केला। मानसरोवर जेबा-ले सभ तरहक सुविधो भइये गेल अछि। ओना, हवाई जहाजसँ लऽ कऽ हेलीकेप्टरआकिचरिचकिया गाड़ी सबहक रस्ताक बाबजूदो पएरे सेहो चलइ पड़ैए। मुदा से लोकक मनसँ घसैक गेल अछि। घसकबो केना ने करत, जैठामक विचारमे माघ सन जाड़क समयकेँ एक दिन बीतने लोकक मनमे बिसवास जगिते अछि जे 'गेल माघ उनतीस दिन बाँकी', तैठाम जँ आधासँ बेसी रस्ताक सवारीक सुविधा मानसरोवरक लेल भइये गेल अछि।तँए, धापे-धाप पहुँचब असान भइये गेल अछि...।

जीतनलाल भाय मनमे रोपि लेलैन जे ऐबेर मान सरोबरक यात्रा करबे करब। दूरक यात्रा अछि तँए जँ एकटा संगी भऽ जाएत तँ ओ नीक रहत।

सातो भाँइक भैयारीमे जीतनलाल भाय लगा पाँच भाँइ बाहरे-बाहर नोकरी करै छैथ, खाली हम दुनू भाँइ माने हम आ जीवनलाल भाय गाममे रहै छी। हमर कोनो हिसाबे ने अछि, सातो भाँइमे सभसँ छोट रहने छबो पढ़ल-लिखल भाइयो आ वृद्ध पिताजी सेहो पढ़बै-लिखबैपर धियान नै देलैन, अनठा देलैन, जइसँ नामो-गाम आ किताबो पढ़ब तँ सीख लेलौं, मुदा गीता-भागवत पढ़ैक लूरि नहि भेल। ओना, धरमागती पुछी तँ हुनका सबहक दोख नहियेँ छैन। किए तँ अधबेसूए अवस्थामे माइयो मरि गेली आ पिताजी सेहो बिमारीक फेड़मे पड़ि गेला जइसँ हमरा पढ़ै-लिखैपर धियान नहि दऽ सकला। ओना, जेठ भाए सभ सक्षम छला जइसँ पढ़ा-लिखा सकिते छला मुदा ओ सभ कान-बात ऐ दुआरे नइ देलैन जे जखन सभ भाँइ नोकरी करिते छी, नीक कमाइ अछिए तखन घरक ओगरवाहियो-ले आ मातो-पिताक टहल-टिकोरा-ले तँ आदमी चाहबे करी, तइले भने भैयारीमे सातम भाय- सेवालाल अछिए। जखन नोकरी-चाकरी नहियेँ करैक छै तखन अनेरे किए पनरह-बीस बरख तक स्कूल-कौलेज धाँगत...। तँए हम बौक-बकलेल रहिये गेलौं। ओना, हमरा सन ढेरो लोक गामोमे अछि आ देशोमे अछिए। दुनियाँक तँ कोनो हिसाबे नहि। ओना, जँ बुधिमान आ बौक-बकलेलक जनगणना ठीकसँ हुअए तँ एकोअना लोक बुधिमानक श्रेणीमे नइ औत, पनरहअनासँ बेसीए हमरे सन-सन लोकक अछि।

परसू वैज्ञानिक भाय मानसरोवरक यात्रापर निकलता। दूरक यात्रा, तँए एकटा संगीक खगता छैन्हे। ओना, अखन तक बहुतो यात्रा वैज्ञानिक भाय कऽ चुकल छैथआ सेदेशक संग दुनियोँक, मुदा तइ सभ यात्रामे पत्नी संग दइ छेलैन। मुदा ऐ यात्रामे जीतनलाल भाय पत्नीकेँ संग नहि लऽ जाए चाहै छैथ। नइ लऽ जाइक विचारक पाछू कारण छैन जे एक तँ उमेरोक हिसाबसँ, दोसर अपन तँ फुहराम शरीरो छैन आ सभ दिन जे लोहा-लक्कड़क बीच काज केलैन तइसँ देहमे ताकतो छैन्हे। मुदा भौजी तँ भरि दिन डेरामे रहि खेबो-पीबो खूब करै छेली आ टी.बी., कम्प्यूटरक खेल देखैत-देखैत अथबलो भइये गेल छैथ, माने केतेको बिमारी सेहो पोसि नेने छैथ तँए वैज्ञानिक भायक मनमे शंका छैन जे जँ पत्नीकेँ संग करब तँ अपन मदत कि हएत जे अपने भरि दिन हिनकर टहल-टिकारो करए पड़त, तँए नहियेँ लऽ जाएब नीक। हमरा, ओना हमर नाओंएसेवालाल छी मुदा आब ओते ऊहिये ने रहल जे मानसरोवर सन रस्ताकेँ पार करब। ओहन-ओहन रस्ताक ठेकाने रहत, आकि दिशांसे नइ लागत सेहो ठीक अछि। तँए, जाइने कऽ वैज्ञानिक भाय हमरा नहि कहलैन। हँ, मैझला भाय जीवनलाल भायजे गामेमे रहि विद्यालयमे नोकरी करै छैथ। माने गामसँ कोस भरिपर विद्यालय छैन। तहूमे संस्कृत महाविद्यालय,जेकर की स्थिति अछि से केकरोसँ छीपलो नहियेँ अछि। विद्यार्थीसँ बेसी शिक्षके छैथ। जीवनलाल भाय अपनउपस्थिति बना, एक-आध घन्टा संगी सभसँ गप-सप्प करै छैथ आ घुमि कऽ अबै छैथ। यएह हुनकर सभदिना रूटिंग छैन। प्रोफेसरक दरमाहा सेहो पबिते छैथ जइसँ परिवारोक भरण-पोषण नीक जकाँ होइते छैन। तँए, जीवनलाल भाय बेसी उपयुक्त रहतैन। वैज्ञानिक भायकेँ सेहो जीवनलाल उपयुक्त संगी बुझि पड़लैन। जीवनलालकेँ लगमे बजा वैज्ञानिक जीतनलाल भाय कहलखिन-

''बौआ, मानसरोवर जाइक विचार मनमे बहुत दिनसँ अछि मुदा समय नइ पबै छेलौं, तँए नहि गेल भेल। ऐबेर समय पेलौं हेन,जेबाक विचार भऽ गेल। दूरक यात्रा छी तँए जँ दुनू भाँइ संगे चलब तँ नीक रहत।''

मानसरोवरक जे आध्यात्मिक परिचय अछि ओ जीवनलाल भाय जनै छैथ, तँए जेबाक कोनो तेहेन जिज्ञासा मनमे नहि जगलैन। ओना, नवकबरिये उमेरमे माने तीसे-बत्तीस बर्खक अवस्थामे जीवनलाल भाय मानसरोवरक यात्रासँ भऽ आएल छैथ जइसँ रस्ताक दुर्गमता अखनो ओहिना मनमे नचै छैन। मुदा वैज्ञानिक भाइक मनमे किए एहेन विचार ऐ उमेरमे एलैन ओ मने-मन जीवनलाल भाय विचारए लगला। मानसरोवरक एहेन रस्ता अछि जैठाम जेबा-ले केतबो गाड़ी-सवारीक सुविधा किए ने भेल मुदा पएरे तँ ओहन रस्ता चलै पड़त जइमे माघो मासक शीतलहरीक जाड़सँ बेसी जाड़ अछि। तेतबे नहि, रस्तो तेहेन उभर-खाभर अछि जे केतए पिछैड़ कऽ खसब आकि ठेँस लागत तेकरो ठीक नहियेँ अछि। ओहन जगहपर जँ जीतनलाल भायकेँ जेबाके छेलैन तँ ओइ उमेरमे जइतैथ जइ उमेरमे सभ किछु बरदास करैक शक्ति देहमे छेलैन। आब जखन बुढ़ भेला हेन, साठि बर्खक उमेर भेलैन हेन तखन मानसरोवर जाइले तैयार भेला हेन। एकरा नेनमैत कहब की नहि? मरै बेरमे जँ बुधिक बखारीए माथमे घोंसिया जेतैन तँ ओकरा लइये कऽ की करता? जाबे नियार-भास करता तइ बिच्चेमे जँ बखारी टुटि कऽ खसि पड़तैन तखन? तहूमे रस्तेमे जँ केतौ मरि-हरि गेला तखन तँ सेहो ने पेब सकता जे पबैक विचार मनमे जोर मारने छैन! मुदा जेठ भाय होइक नाते की बाजब से तँ विचार जीवनलाल भाइक मनमे उठिये गेल छेलैन। ओना, मन निर्णित छेलैन जे कोनो हालतमे जेबाक नहि अछि। मुदा जेठ भाय तँ पिता तुल्य होइ छैथ, आदेशो नइ मानब सेहो केहेन हएत। तँए मुँह बन्न केने जीवनलाल भाय मने-मन विचारैत वैज्ञानिक भाइक आगूमे ठाढ़ छला।

जीवनलाल भायकेँ गुम-सुम ठाढ़ भेल देख वैज्ञानिक भाय दोहरबैत बजला-

''बौआ, किछु हँ-हूँ नहि बजलह?''

ओना वैज्ञानिको भायकेँ जीवनलालक गुम्मीक माने लगिते छेलैन, मुदा नइ बजैक माने नहियेँ भेल सेहो केना मानल जाए। तहिना जीवनो भाइक मनमे छेलैन्हे जे नइ जाएब कि जाएबसे तँ किछु ने बजलौं हेन। ओना, जीवन भाय मने-मन ईहो सोचि रहल छला जे एहेन-एहेन लोहा-लक्कड़क बीच रहैबलाकेँ झूठ बाजि ठकलो जा सकैए, मुदा छैथ तँ जेठ भाय, जँ बुझि जेता तखन अनेरे चान जकाँ मनमे पहाड़क करिया धब्बा बैस जेतैन। से नहि तँ पहिने गैंची माछ जकाँ थालमे नुकाइक कोशिश करी, जँ सुतैर गेल तँ बड़बढ़ियाँ, नहि तँ दोसर रस्ता धड़ब...। जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब!अखाढ़ मास चलि रहल अछि, गुरु पूर्णिमा आगूमे अछि, केते प्रेम आ मेहनतसँ आमक कलम लगौने छीसे तँ बुझले अछि। देखते छिऐ जे जहिना राइर, तहिना फैजली, तहिना मोहर ठाकुर अछि आ तहिना अम्रपाली सेहो बोनाएल अवस्थामे तरतर करैए, एकरा सभकेँ छोड़ि जाएब नीक हएत।"

जीवनलाल भाइक विचारमे वैज्ञानिक भाय जेना बहि गेला तहिना बोहियाइत बजला-

"मानसरोवर जाइमे बर बेसी तँ पनरह दिन लागत, तैबीच की सभ आम सठिये जाएतजे मन छह-पाँच करै छह?"

ओना, जीवनलाल भाइक मनमे उठि चुकल छेलैन जे वैज्ञानिक भाय भौतिक विज्ञान जनै छैथ, मुदा जीवन विज्ञान हमरा जकाँ थोड़े जनै छैथ जे हमर बात बुझता। भावातुर भऽ जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब, प्रश्न जँ आमे खाएबक रहैत तखन अहाँक विचार सोल्होअना मानै-जोकर छल। किए तँ अखन गाछेमे आम लागल अछि। जँ आठ दिनक पछाइत तोड़लो जाएत तैयो पनरह दिन आरो रहबे करत। मुदा से बात तँ अछि नहि।"

अपन विचारकेँ खण्डित होइत देख वैज्ञानिक भाय पुछलकैन-

"तखन की अछि?"

जीवनलाल भाइक मन मानि लेलकैन जे प्रश्नक ने उत्तर देब अछि। जेठ भाय रहितो तँ प्रश्नकर्त्ते ने भेला। आह्लादित भऽ जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब, जहिना वृन्दावनमे कृष्णक परोछ भेने राधिका सभ विरहाए लगै छेली, तइसँ की कम प्रेम हमर आमो आ आमक गाछोक प्रति अछि।"

जीवनलाल भाइक विचारमे वैज्ञानिक भाय वौआ गेला। पुन: प्रश्न केलैन-

"से की?"

सोलहन्नी गोटी लाल होइत देख जीवनलाल भाय बजला-

"जहियासँ आमक पीपही रोपलौं तहियेसँ सिनेहक संग प्रेमो आमो आ आमक गाछियो संग बनि गेल अछि। गाछक संग जुआन हारि गेल छी जे जाबे अपने जीबैत रहब ताबे तोरो जीबैत रखबौ! अपने मानसरोवर जाएब, जइमेकमसँ कम पनरह दिन लागतआ तइ बिच्चेमेजँ चोरे-चहार चोरा कऽ आम तोड़ि लिअए तखन ओकर रक्षा कऽ सकलिऐ? जखन चीजे विरहा जाएत तखन ओकरा संग जे प्रेमक वादा केने छिऐ से रहत?"

भौतिक जुगक भौतिकवादी वैज्ञानिक भाय- जिनक ज्ञान सेवा निवृत्तिक पछाइत जखन विज्ञानक रूपमे लतड़लैन तखन सज्ञानक बाट हुनका मनमे उठलैन। सेवा निवृत्तिक माने काजसँ मुक्त, अर्थात् हाथसँ काज चलि गेल वा छीना गेल। काजुल लोककेँ जखन हाथक काज छीना जाइए तखन अबैबला जिनगी मृतप्राय बनि जाइए।तँए, ओ अपना-जोकर काजक पाछू वौआए लगिते अछि। सएह वैज्ञानिक भायकेँ भेलैन। एक दिस ज्ञान एते प्रखर भऽ गेलैन जे दुनियाँक खोजी बनि गेला। दोसर दिस अपन ज्ञानकेँ विज्ञानक दिशामे बढ़ौलैनआतेसर दिस विज्ञान, समाज आ शास्त्रक बीचक खाधिमे तेना पड़ला जे मन बबलाकऽ मानसरोवरक यात्राक लहैरमे हेलए चाहि रहल छैन। गणितक गणना करैबला वैज्ञानिक भाय जीवन, समाज आ दुनियाँक जखन गणना करए लगै छैथ तँ हिसाबे गड़बड़ा जाइ छैन। जइसँ कोन हिसाबकेँ सही मानी आ कोन हिसाबकेँ गलत, अही गलत-सहीक बीच मन फँसि गेल छैन। अन्तत: जेकर एकेटा उपाय सुझि रहल छैन जे अपन आँखिक देखलकेँ सही मानब। तँए मानसरोवरक यात्रा मनमे गहींर तक धँसि गेल छैन...। वैज्ञानिक भाय बजला-

"बौआ जीवन, जेते आम नोकसान हेतह ततेक दाम हम दए देबह।"

वैज्ञानिक भाइक विचार सुनि जीवनलाल भायकेँ अपन विचारक रस्ता कटैत बुझि पड़लैन। मने-मन गर अँटबए लगला जे आब की करब। मुदा लगले एकटा जुक्ति फुरलैन। फुरलैन ई जे वैज्ञानिक भाय कि मानसरोवरकेँ शीतल, कोमल, पवित्र हृदय रूपी सरोवर थोड़े बुझि रहला अछि ओ तँ एकटा भौगौलिक स्थान बुझि रहला अछि। ओकरा देखबकेँ काज बुझि रहला अछि। काजकेँ तँ काजेसँ रोकल जा सकैए। से नहि तँ ओहने जब्बर काज जँ आगूमे दिऐन तँ जरूर मन मानि

जेतैन आ अपन छुट्टी भऽ जाएत। जखने अपन छुट्टी हएत तखने ने दुनू गोरे छुट्टा भऽ जाएब आ अपना-अपना मने अपन काज सम्हारब, पछाइत अपन विचारता जे केना करब...। जीवनलाल भाय बजला-

"भायसाहैब, अहाँ जखन गाम आएलो ने रही तहियेक काज आगूमे सिरचढ़ भऽ गेल अछि, की ओकरा छोड़ि देब उचित हएत?"

वैज्ञानिक भाइक मन कनी ठमकलैन। बजला-

"ओ तँ काज-काजपर निर्भर अछि। काजोक तँ अपन माप-तौल अछि। नमहर[i] काजक आगू छोट काजकेँ कम वजन भेल।"

जीवनलाल भाइक मनमे खुशी उपैक गेलैन। ओ मने-मन बुझि गेला जे जहिना सत् बातलत्ती जकाँ लतड़ल रहैए तहिना बहानाक लेल झूठोक लत्ती तँ अछिए। मुदा ठाँहि-पठाँहि झूठोक लत्तीकेँ लताड़बसँ नीक जे सामनजस करैत लताड़ी। जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब, अपनेक संग पूरैमे कनी असोकर्ज भऽ रहल अछि। ने तँ एक संग दू-दूटा महतपूर्ण कर्तव्य अछि तेकरासँ मुँह मोड़ब आकि मुँह घोकचाएब नीक थोड़े भेल?"

नीकक संग अधलो तँ लगले रहैए, वैज्ञानिक भाय सेहो जिनगी भरि यएह ने तर्क करैत सिद्धान्त मनमे रोपने छैथजे कोनो वस्तुक साक्षेप-निरपेक्ष दुनू होइए। यएह विचार मनमे जगि गेलैन। बजला-

"एकरा के नीक कहत?"

'एकरा के नीक कहत' सुनिते बाढ़िक पानिक पाहिपर चढ़ल रोहु माछ जकाँ जीवनलालकेँ बुझि पड़लैन। मुस्की दैत बजला-

"भाय साहैब, जिनगीक कोनो ठेकान अछि जे केते दिन सेवा करैक मौका भेटत। तखन तँ भेल जे जखने सेवा करैक गर लागए कि ओकरा करैत चली, निमाहैत चलीमुदातइमे अपना थोड़ेक खाँच भऽ रहल अछि।"

वैज्ञानिक भाय बजला-

"बौआ, की खाँच भऽ रहलह हेन?"

मनकेँ मसोसैत मुहकेँ चिकुरियबैत जीवनलाल भाय बजला-

"भाय साहैब, छह मास पहिलुके बात छी, एके दिसम्बरकेँ अपना सारिकेँ ऑपरेशन करबए डाक्टर ऐठाम गेल रही। पेटक भीतरक ऑपरेशन रहइ। बिमारीक नाओं बिसैर गेल छी। तेते भीड़ ओइ डाक्टर ऐठाम देखलिऐ, जे की कहूँ। छह-छह मासक नम्बर लगैए। हिनकर नम्बर चारिम दिनक छैन, आब अहीं जे कहब से करब।"

वैज्ञानिक भाइक मन मानि गेलैन जे अपने ने घर-दुआर, गाम-समाज छोड़ि बाहर रहलौं, मुदा जीवनलाल तँ सभ दिन गामेमे रहि आर्थिको उपारजन केलक आ समाजक सेवो केलक। तँए, ओकरो अपन जीवनो छै आ जीवनक गतिविधियो तँ छइहे। वैज्ञानिक भाइक मनमे धाँइ-दे खसलैन- केकरो जीवनमे बाधा उत्पन्न करब सभसँ पैघ अपराध छी। तहूमे जँ ऐ सालक (माने जनवरीक पछातिक) काज रहैत तँ ओकरो आगूओ बढ़ाएल जा सकै छल, जेना लोक सराधक (श्राधक)भोजो आ किरियो-कर्म बरखी दिन-ले रखि लइए। मुदा ई तँ जीवन-मृत्युसँ जुड़ल अछि। ओना, जीवन-मृत्युसँ जुड़ल अनेको प्रश्न जुड़ल अछि। मुदा जीवनक प्रति लोकोक तँ अपन-अपन नजैर अछिए। जहिना करोड़ो-अरबो लोक अछि तहिना करोड़ो-अरबो नजैर सेहो अछिए। कियो पानिसँ हल्लुक हवाकेँ आ कियो माटिसँ हल्लुक पानिकेँ तँ कियो पाथरसँ हल्लुक माटिकेँ बुझैए। मुदा अपन-अपन जगहपर सभ भारियो अछि हल्लुको अछिए। पानिक जँ समुद्र छी, माने पानियेँ समुद्र छी तहिना पाथरेक पहाड़ो छी, माने पहाड़े पाथरो छीहे। तही बीच नेझंझटो अछि आ मिलान सेहो अछिए। अफ्रीकाक जंगल कहियौ कि सहाराक मरूभूमि कहियौ आकि रामवन कहियौ कि वृन्दावनक कृष्णवन, सबहक बीच तँ जीवन चलिये रहल अछि..! वैज्ञानिक भाय

अपन विचारक अस्तित्वकेँ असथिर कइये ने पेब रहल छैथ। मनक ओजकेँ शरीरक ओजसँ मेल-मिलाप भइये ने रहल छैन। असोथकित होइत वैज्ञानिक भाय बजला-

“बौआ, मनमे जखन रोपि नेने छी जे मानसरोवर जेबे करब तखन तँ भेल जे एकटा संगी रहने कने नीक होइ छइ।”

वैज्ञानिक भाइक सहमैत विचार देख जीवनलाल भाय बजला-

“भाय साहैब, व्यक्तिगत हमर खगता नइ ने अछि, संगी चाही, तइले अहाँ चिन्ता जुनि करू। अखने हम गाम दिस जाइ छी,मानसरोवर चलैक हरविड़ो कऽ देबइ। पुरुख-पातर जँ संगी नहियोँ हेता तैयो दसटा जनीजाति संगी हेबे करती।”

ओना, जीवनलाल भाइक विचार सुनि वैज्ञानिक भाइक मन जुड़ेलैन, मुदा शंका ईहो भेलैन जे जँ दसटा जनीजाति संगी भऽ जाएत तखन दसोक हिसाब-बारी लगबैमे दस गुणा काज बढ़िये जाएत...।

सामंजस करैत वैज्ञानिक भाय बजला- “जँ दसटा भऽ जाथि तखन तँ सर्वोत्तम भेल। नहि तँ एकोटा जँ भऽ जाथि तैयो एक मानसरोवर कि जे सइयो मानसरोवर जाएब असान भऽ जाएत किने।”

जीवनलाल भाय बजला- “भाय साहैब, हम ते असगरे गेल रही, कहाँ केतौ भियौन लागल?”

'भियौन' सुनि वैज्ञानिक भाइक मन सुरखुरेलैन। सुरखुराइते मनमे उठलैन- नारदजीकेँ कोन संगी छेलैन जे चौदहो भुवन आ तीनू लोक घुमै छला..? नारदजीक घुमब मनमे अबिते वैज्ञानिक जीतन भाइक चेहरापर स्वीकारोक्तिक भाव झलकए लगलैन। जेकरा देखते जीवनलाल भाय बजला-

“अहाँ अपन तैयारी ठीक राखू संगी भेटबे करत। जखन चोरोकेँ संगी भेटै छै, झूठो बजनिहारकेँ संगी भेटै छै तखन सौध (शुद्ध) केँ किए ने संगी भेटत।”

q

शब्द संख्या : 2576, तिथि : 31 जुलाई 2018

करतब

सौन मासक पंचमी। भोरेसँ बाला-सुबाला चिकैन माटिक खोभारसँ माटि आनए विदा भेल। सबहक हाथमे एक-एकटा डोमराउ पथिया, जइमे छोट-पैघ चरि-चरिटा मौनी साजल, किएक तँकुल पाँच बासनक माटिक थुम्हा बनौत। पाँचो बासनक माटिकेँ स्वच्छ पवित्र जलसँ एकठाम सानि पाँचटा थुम्हा बनौल जाएत। ओना, समय निसचित नइ रहने कियो खोभार जाइक तैयारी करैत, तँ कियो रस्तामे जेबो करैत आ कियो-कियो खोभारमे माटि खुनि-खुनि अपन-अपन पथिया-मौनीमे सजेबो करैत, तँ कियो बासन भरि-भरि घरमुहाँ अबैत। संजोग नीक रहल जे ऐबेरक मौना पंचमियो आ सोमवारी व्रतक सोमो एक्के दिन पड़ल। काल्हि रबि छल, सौन मासक पहिल रबि, तँए बाबा विदेश्वरसँ लऽ कऽ कुशेश्वर बाबाक संग बैजनाथ बाबाक मन्दिरमे सेहो भरिपोख जलढरी भेल छल। ओना, जे सभ बैजनाथ आकि कुशेश्वर बाबा ऐठाम गेल छला ओ सभ तँ रस्तेमे छला मुदा जे सभ चण्डेश्वर, विदेश्वरआकिराजेश्वर इत्यादि लगक स्थान गेल छला ओ सभ काल्हिये घुमि-घुमि घर पहुँचला। आ

गाममे जे अजनबी बाबा छैथ ओ तँ गामेमे छैथ, तँए किरिण उगैसँ पहिनहि बहुत लोक जलढार कऽ आबि अपन-अपन जीवनक क्रियाक वृत्तिमे लगि चुकल छला।

दुखमोचन बाबाकेँ ऐ सभसँ माने पंचमीक थुम्हा, सोमवारी व्रत आ सौनक पहिल रबिसँ कोन मतलब छैन। ओ अपन किसानी जिनगीकेँ संगी बना संगे-संग चलि रहल छैथ। ओना, जमीनक छोट किसान छैथ- सीमांत किसान, मुदा जनसंख्यामे नमहर परिवार रहने जहिना दुखमोचन बाबाकेँ अपन परिवार भरिगर बुझि पड़ै छैन तहिना हल्लुको बुझिये पड़ै छैन। किएक तँ दुखमोचन बाबाक स्पष्ट सोच छैन जे मधुबनी जिलाक जमीन कि कोनो राजस्थानक जमीन थोड़े छी जे पचास-पचास बीघामे लोक सेरसोए-तोरीक खेती करत। एक तँ मिथिलाक माटि तहूमे मधुबनी जिलाक, ऐठाम तँ एक धुरक खेतीसँ मसल्ला आ पाँच कट्ठाक खेतीसँ सालो भरिक तेलक पुरती एक परिवारमे भऽ जाइ छै, तैठाम जँ राजस्थाने आकि गुजराते लोकक सेहन्ता करब से सोहान्त थोड़े हएत। किछु छी तँ मिथिलाक अंग मधुबनी जिला छी किने। मसल्ला आकि तेल पीब लोक कए दिन जीब सकैए, जीबैले तँ अन्न-पान चाही। सेरसो-तोरी खैहन थोड़े छी, ओ तँ तेलहन छी। खाएर जे छी, जेकर छी से अपन जानह, दुखमोचन बाबाकेँ कोन मतलब छैन। एक तँ किसानी जिनगी छैन तहूमे छोट आँट-पेटक, मुदा जे छैन से छैन, एते तँ आत्मशक्ति छैन्हे किने जे जैठाम एक-सबा कट्ठा जमीन आ एकटा गाए पोसि लोक गुरुआश्रम बना सकैए तैठाम तँ दुखमोचन बाबाकेँ बहुत छैन। कियो केकरो देखौंस करत तइसँ पहिने ने मनमे दुनूक आँट-पेट अपनो आ देखौंसो केनिहारक सेहो अजमा लेत। समयक हिसाबसँ दुखमोचन बाबा काज करए अपन खेत दिस विदा भेला।

आठ बजेक समय, चौबीस वर्षीय रेहना दुखमोचन बाबाक ऐठाम पहुँचल। भुलनी दादी आँगनेमे छेली। रेहनाकेँ देख भुलनी दादीक देह सिहैर उठलैन। मने-मन भगवानकेँ कोसैत विलाप केली- 'एहने तोहर किरदानी छह जे वेचारीक दिन हेरि लेलहक..!' मुदा मुहसँ किछु ने बजली। आँगनक मुँह लग रेहना ठाढ़ भेल आधा मुँह झँपने आ आधा उघारने बाजल-

"दादी, हम हिनके शरणमे एलिऐन हेन।"

'शरण'क माने तँ भुलनी दादी बुझि नहि पेली मुदा 'एलिऐन हेन' बुझि लगले बजली-

"की?"

ओना, भुलनी दादी अपन मनक लोक छथिए। अवगुण एतबे छैन जे दुख हुअ कि सुख, लगले बिसैर जाइ छैथ। बिसरबो की बिसरना जकाँ बिसरै छैथ, सोल्होअना बिसैर जाइ छैथ माने केतबो मन पाड़ि कहबैन तैयो ने मन पड़ै छैन। जे अपने तँ नहि मुदा परिवारोक सभ बुझै छैन आ टोलो-पड़ोसक। तँए, जिनका भुलनी दादीसँ काज रहल ओ कण्ठपर सवार भऽ अपन काज अगुआ लइते छैथ। ओना, भुलनी दादीक निर्विकार मन छैन, तँए जे कियो कोनो काजे अबै छैथ ओ अपने तनदेही भऽ पहिने अपन काज हथिया लइ छैथ, मुदा जे पछुएला ओ बिसरनमे उसरन भइये जेता।

भुलनी दादीक मुहसँ 'की' सुनि रेहनाक मनक पाँखि निरमए-फरकए लगल। निरैम कऽ फरैकते रेहनाक मन चकभौर लिअ लगल। एकाएक रेहना अपन सोल्होअना मुँह उघारि बाजल-

"दादी, हिनका रामझुमनीक खेती छैन।"

बिच्चेमे भुलनी दादी हड़बड़ाइत पुछलखिन-

"तीमन-ले लेबह?"

ओना, भुलनी दादीक बात सुनि रेहनाक मन मुस्कियाएल, मुदा मुँह दाबि बजली-

"नइ दादी, रोजगार करब तइले।"

'रोजगार' सुनि भुलनी दादी अपनाकेँ कारोबारी नहि मानि बजली-

"अखने बाबा खेत गेलखुन हेन, चलह हम कहबैन।"

ओना, दुखमोचन बाबाक नाओं सुनि रेहना सहमल जरूर मुदा भुलनी दादीक बात सुनि निधोख भऽ संगे विदा भेल।

पाँच कट्टा बरसाती रामझिमनी-खेती दुखमोचन बाबा केने छैथ। ओना, समयक किरदानीसँ खेती समयपर केलो पछाइत पनरह दिन पछुआ गेल छैन। बरसाती रामझिमनीकेँ समयपर पानिक पियास लगै छै किने, से बरखा नइ भेने बाढ़िमे कमी आबि गेल छेलैन। मुदा राति भरिक हेराएल राहीकेँ जखने भोरक भुरुकबाक भास होइए तखने ने ओकर चान चनैक-चनैक चमकौ लगैए से दुखमोचन बाबाकेँ भइये गेल छैन। खेतक बीचमे ठाढ़ दुखमोचन बाबा अपनो खेती हिया रहल छला आ ओइ सभ किसानपर मने-मन गरमा सेहो रहल छला जे जेसभ सिमान्त किसान अछि। जँ ओकर खेत ऊँचरस छै तँ पानिक ओरियान करि कऽ बरहमसिया खेती पकैड़ बरहमसिया किसान बनि जेबा चाही। तइले तरकारी खेती सेहो अछि आ फलो-फलहरीक संग पानोक खेती कएले जा सकैए आ नहि जँ गहींर खेत अछि तँ माछ-मखान इत्यादि करी। से सभ नहि करि जँ पैघ किसानक[ii] देखौंस करब तखन तबाही हेबे करत, जहिना खंजनकेँ हंसक चालि पकड़ने होइ छइ। तहीकाल खेतक आड़िपर अबैत पत्नियोँ आ रेहनोकेँ दुखमोचन बाबा देखलैन। देखते खेतसँ निकैल आड़िपर आबि बैसला।

फरिक्केसँभुलनी दादी दुखमोचन बाबाकेँ कहली- ''अहींक काज कनियाकेँ छै, तँए भेँट करए आएल अछि।''

झाँपल-तोपल भुलनी दादीक बात सुनि दुखमोचन बाबा झँपले-तोपल बजला- ''केहेन काज?''

काजो तँ काज छी, एकर कि कोनो आड़ि-मेड़ अछि। जँ ऐछो तँ कोशिकन्हाक बलुआहा माटिक आड़ि जकाँअछि, जे केतौ पएरे-पएर उड़ि जाइए, तँ केतौ पानिमे डुमल खेत जकाँ पएरे-पएर तेना किचैड़ जाइए जे कदबा-कदबा भेल रहैए, तँ केतौ जिनगीक धुरी बनि सेहो चलैए आ केतौ गप्पक काज बनि मुहेँ-मुँह टहलैत रहैए। खाएर जे जेतए अछिसेतेतए रहअ, ऐठाम भुलनी दादी, रेहना आ दुखमोचन बाबाक बीचक बात अछि। जहिना नचार आवेदक अपन आवेदनक अर्जी नचारक संग भोलाबाबाक दरबारमे नचारी गाबि-गाबि मर्जीक लेल लगबैए तहिना रेहना अपन अर्जी पेश करैत दुखमोचन बाबाकेँ कहलकैन-

''बाबा!हिनके दरबारमे आएल छिऐन, शरण दैथ वा भगा दैथ।''

महादेवी वर्माक 'ठुकरा दो या प्यार करो' जकाँ रेहनाक बात सुनि दुखमोचन बाबाक मन चकराए लगलैन। चकराइत मनमे विचार उठलैन- बीस-पचीस बर्खक औरतक माँग छी। अखन तक एतबो ने बुझि पेब रहलौं हेन जे गामक छी आ आकि आन गामक,तैबीच कोन सीमापर ठाढ़ भऽ किछु बाजब..? तइबिच्चेमे भुलनी दादीक मनकेँ सेहो रेहनाक बेथा-कथा धक्का मारलकैन। धक्का लगिते धकियाएल भुलनी दादी पतिकेँ कहलखिन- ''वेचारी दैवक डाँगसँ चुर-चुर भेल अछि तँए अपना ऐठाम आएल अछि।''

'दैवक डाँग' सुनि दुखमोचन बाबाक मनमे जेना अस्सी मनक बोझ पड़ि गेलैन। पड़बो केना ने करितैन। दैवक डाँग छी, कोन दैवक डाँग छी, से की कोनो एकेटा दैव छैथ। अपना सबहक हिसाबे चौरासी लाख देव छैथ आ समुद्रकातबला[iii] सबहक हिसाबे करोड़मे एकटा कम। मनकेँ असथिर करैत दुखमोचन बाबा विचारए लगला जे रूइयाँक विचौलिया[iv] जकाँ देव कोनोमे छिड़ियाएल अछि तँ कोनोमे जोगिया अंडी जकाँ एक्केठाम घोदियाएल अछि, तैठाम किछु भाँज पबैले बीचलाकेँ निकालि धुनि-धुनि कऽ पीर बना पहिने टौकरी आकि चरखामे काटब तखने ने सूत बनत, जइसँ डोरो बनाएब आ डोरासँ वस्त्रो बनाएब, तहिना ओही सूतसँ ने जनेउओ बनाएब आ जनेउ धारक सेहो बनाएब। जने-जन ने बहुजन आ ओही बहुजनमे ने इष्टो जन आ अनिष्ठो जनक बास अछि।

समगम होइत दुखमोचन बाबा रेहनाकेँ कहलैन-

''अखन तक नीक जकाँ अहाँकेँ चीन्हि नहि पेलौं, तँए पहिने अपन परिचय कहू पछाइत जे कहैक हुअए से कहब।''

जहिना शरीरमे कोनो घा-घोस रहने ओइमे चोट लगलासँ बेसी दर्द होइ छैतहिना दरदाएल मनमे सेहो होइए मुदा यएह छी मनुखक विवेकजेकरा बले लोक विचारि लइए जे जिनगीक सुगम बाट की छी आ दुर्गम बाट की छी। मुदा पोखरिक पानिमे जहिना समाढ़सँ कमल धरिक पैदाइस होइए तहिना केचली-कुमहीक नहि होइए सेहो केना नइ कहल जाएत जे पानिक ऊपरे-ऊपर अपन सिर पसारि भकरार गाछ बनि कमलो फूलसँ नमहर डंटीक बीच फूल फुला नइ चमकैए...।

असमंजसमे पड़ल दुखमोचन बाबाकेँ देख रेहनाक आँखिमे नोर भरि आएल। नोरसँ ढबकल नयन ज्योति रेहनाक बकार हरण कए रहल छल। मुदा जिनगीक व्याधाक वाणसँ बेधल हंस जकाँ हुकरैत रेहना बाजल-

''बाबा!अपन घर तँ आगि लगि जरिये गेल, मुदा परिवारो[v] आ समाजोक मुँह देख सभ सहैले तैयार छी, मुदा..?''

जहिना कोनो कथा-कहानीमे कथाकार वा कहानीकार अपन कथा वा कहानीक पूर्वांसेमे कथा वा कहानीक मर्मकेँ धर्म बुझि प्रतिपादित कए दइ छैथ जइसँ पाठक पवित्र मर्मक परिणाम बुझैले उत्सुक भऽ उठैए तहिना दुखमोचन बाबा उत्सुक भेल जा रहल छला मुदा मनेमे जखन तन-मन जागए लगैन कि जिनगीक खाधिमे विचार लसैक जाइन, जइसँ अपन मनक उद्‌गार व्यक्त नहि कए पबैथ। होइते अहिना छै जे मर्मभेदी वाणक गति जेतेक गाढ़ सियाहीक रंगसँ लिखलापर रोशनदार होइए ओते घटिया कहियौ कि उड़न्ती सियाहीसँ लिखलापर थोड़े रोशनदार होइए। तँएदुखमोचन बाबा रेहनाक जिनगीक संग जुड़ल बाधापर नजैर अँटकौने अपनाकेँ संयमित करैत रेहनाक 'मुदा'केँ पकैड़ बजला-

''मुदा की?''

अखन तक बाबाक श्रद्धाक विचारे रेहना अपन मुँहपर जे साड़ीक कोर रखने छल, तेकरा हटबैक विचार करए लगली कि बिच्चेमे दुखमोचन बाबाक नजैर पड़लैन। रेहनाक चेहराक मरचुही रूप देख दुखमोचन बाबा सिहैर गेला। मनमे उठलैन, बाप रे! ऐ उमेर मे जँ चेहराक रूप एहेन कुदरूप भऽ जाएत तखन ऐ जिनगीक रंग केहेन हएत? मुदा हजारो-लाखो जिनगीक रूप निहारनिहार दुखमोचन बाबाक मनक सिहरन एकाएक कमए लगलैन। किएक तँ दुनियोँक कि कोनो ओर-छोर अछि, ओ तँ अनन्त अछि। ओही अनन्तमे ने आनन्दसँ आनन्दकेँ पकैड़ कऽ आनबो अछि मुदा से तँ बाधा[vi] उपस्थिति भेला पछातिये हएत, जे लगले भाँजोपर चढ़ब तँ कठिन अछि। मनकेँ समटैत दुखमोचन बाबा पियासल बेटोही जकाँ रेहनाक आँखिपर अपन आँखिक ज्योति फेकलैन।

दुखमोचन बाबाक आँखिक ज्योति पबिते रेहनाक आँखिमे पानि पड़ि गेल। पानि पड़िते गुलावक कली जकाँ रेहनाक हृदय कलैश उठल-

''बाबा!गामक तँ यएह सभ ने सिरगर छैथ, हिनके सबहक सिरक परसादे ने हमहूँ सभ जिनगीक दर्शन करब।''

रेहनाक विचार जेना दुखमोचन बाबाक विचारकेँ बेध देलकैन। बेधल विचारमे दुखमोचन बाबाक मन गबाही देलकैन जे एका-एकी पुछब नीक नइ हएत, किए तँ बेथित मनक विचार करब कखन थित रहत आ कखन बेथित भऽ जाएत तेकर कोनो ठीक नहि अछि तँए किए ने अल्हा-रूदलक महाराइ जकाँ रेहनो-जिनगीक महराइ सुनि ली। मुदा तइले नीक हएत जे सोझे किए ने पुछिऐ जे अपना मनमे जे अछि से बाजि चलू, पछाइत जे सम्भव हएत तेकर जवाब देब आ जे सम्भव नहि हएत सेहो ठाँहि-पठाँहि कहि देब।

दुखमोचन बाबा बजला-

''पहिने अहाँ अपन सभ बात सुना दिअ, पछाइत बुझल...।''

रेहना दिल खोलि बाजए लगली-

''बाबा, गाममे सभकेँ बुझल छैन जे रेहनाक घरबला राजरोग[vii] सँ मरल। नइ उपाय भेल जे इलाज करैबतौं।''

पतिक मृत्युक चर्च सुनि दुखमोचन बाबाक मन चौंकलैन। ओना, हाथमेप्लास्टिकक चूड़ी देख सेहो नहि परखने छला जे रेहना विधबा अछि। लाहक चूड़ी ने लोक फोड़ि लइए, जे फुटैबला होइ छइ मुदा जे फुटैबला नइ अछि से केना फोड़त। मुदा ई भाँज लगि गेलैन जे रेहना गामेक छी...।दुखमोचन बाबा बजला-

''मुँह बन्न नइ करू, जे बजैक अछि से बाजि जाउ।''

जेना सुखमे अनेको संगी अपने-आप भेटै छै तेना दुखमे थोड़े भेटै छै, जे भेटबो करै छै ओइमे अदहासँ बेसी हँसैबला[viii]रहै छै आ अदहासँ बहुत कम हँसबैबला...।

रेहना बाजल-

"बाबा, जखन घरबला जीबै छल तखन दुनू परानी मिलि घर-सँ-बाहर धरिक काज सम्हारि लइ छेलौं, जइसँ तीनटा धियो-पूतो पोसाइ छल आ अपनो दुनू परानीक गुजर चलै छल, मुदा घरबलाकेँ मुइने दुख दोहरा गेल..!"

रेहनाक बात सुनि दुखमोचन बाबाकेँ जेना हृदयक उष्म साँस निकललैन। बजला-

"अखन तक केना खेपैत एलौं?"

दुखमोचन बाबाक प्रश्न सुनि रेहना थरथराए लगल, मुदा मनकेँ सक्कत करैत बाजल- "बाबा, हिनकासँ लाथ करबैन से ओहन लाथी हम नइ छी। सुख लोक बिसैर जाइ छै मुदा दुख ओहिना मन रहै छइ। पहिनौं घरबलाक संग चिमनीक ईंटो-पजेबो उघै छेलौं आ खेतो-पथारक काज करै छेलौं, तेतबे नहिघर-जोड़ैयामे सेहो मिसतिरी सभक संग ईंटो-मसल्लो उघै छेलौं, मुदा ओकरा सबहक चालि-चलैन देख मन मानि गेल जे ऐठाम आब बास नइ हएत।"

बिच्चेमे दुखमोचन बाबा बजला-

"तब?"

रेहना-

"जे दिन बीत गेल ओ तँ कटि गेल मुदा आगूक जिनगी समयक संग चलएसएह ने हिनका कहबैन?"

दुखमोचन बाबा बजला-

"अपना खेत अछि, जँ गुजर करै-जोकर[ix] दऽ दी तइसँ पार-घाट लागत?"

रेहना बाजल-

"जहिना करखन्नामे कोनो सामान बनैमे केतेको आइटम काज होइ छै, आ सभ आइटमक काज सभ तरहक करिन्दासँ लेल जाइ छैतहिना ने खेतियो अछि।"

रेहनाक बात सुनि दुखमोचन बाबाक मन मानि गेलैन जे खेतसँ पहिने उपजा हएत तखन ने ओकर निकास समाजक बीच हएत,तइले तँ एक आइटम काज भेल खेत उपजाएबआदोसर भेल उपजा कऽ बेचब। असगरुआ वेचारी केना सम्हारि पौत। मुदा ईहो तँ अछिए जे केकरो सोझे मुँहक असीरवाद देने तँ मुँहमे मुंगबा नइ भेटै छै, तइले हनुमानजी जकाँ नइ मुगरदन तँ मुगरियो भाँजहि पड़त...।

दुखमोचन बाबा बजला-

"अपन की मन अछि?"

'अपन मन' सुनितेरेहना विस्मित भऽ गेल। विस्मित होइते रेहना बदलए लगल। आब ओ रेहना नहि, जे पहिने छल। आब रेहना अर्द्धनारीश्वर बनए लगली। पुरुषत्वक प्रवेश रेहनाक तन-मनमे हुअ लगल।

रेहना बजली-

"बाबा, जाबे लोक जीबैए ताबैये ने धरम-करम निमाहैए। अखन ते हमहूँ तीनू बच्चाक माए बनि जीविते छी, तँए अपन करतब निमाहबे ने अछि।"

दुखमोचनो बाबाक मनक पट जेना खुजि गेलैन, बजला-

"पाँच कट्ठा रामझिगुनिक खेती अछि, अधा-अधाकेँ पाहि लगा जँ तोड़ब तँ सभ दिन करखन्ने जकाँ निकलत। ओकरा बेच कऽ जेतेसँ परिवार चलत से रखि लेब, बाँकी हमरा दऽ देब।"

दुखमोचन बाबाक बात सुनि रेहना मुस्किया उठली।

q

शब्द संख्या : 2132, तिथि : 04 अगस्त 2018

[i]भारी

[ii]अधिक जमीनबलाक

[iii]ऊनि-कुटि- त्रिपुरा

[iv]बीचक बीआ

[v]बाल-बच्चा

[vi]जिनगीमे बाधा

[vii]राजरोग भेल कठिन बिमारी, भारी बिमारी

[viii]केकरो कष्टसँ हँसैबला

[ix]गुजरकमाने दुनू ओते काजो आ ओते आमदनियोँ

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१. राहुल झा "आर.जे." -बटगवनी२. आशीष अनचिन्हार- दू टा गजल

१

राहुल झा "आर.जे."-बटगवनी

कदम पर बैसल माधव रे
देखत बृज के नारी
मंद मंद बंसी फुकत रे
नाचत गुणमति नारी

लाज भाव त्यागल रे
बिसरल नव साड़ी
फसल कदम पर आँचर रे
फाटल नव साड़ी

हरी मंद मुसकाबय रे
देखि फाटल नव साड़ी
रोकल कन्हैया जखन बंसी रे
साड़ी देखल सब नारी

साड़ी देख सब बिगरल रे
घर जायत कोना सब नारी
कहल गोविन्द जुइन डरु रे
हे बृज के नारी

आज अमावस दिन में रे
तोहे नय रहब उघारी
एहन अमावस होयत रे
दामिनी गिरत अन्हारी

लिखत राहुल दूय पद रे
सुनु गुणमति नारी
हरी संग किछु डर नहीं रे
इहे गोवर्धन गिरधारी

२

आशीष अनचिन्हार

दू टा गजल

1

हुनका लेल सिंदुर एलै हमरा लेल जहर
देखू नेह कोना भेलै हमरा लेल जहर

अमरित एकरा हम कोना ने मानू कहू से
अपने हाथें देने गेलै हमरा लेल जहर

जीवन धारने छै जहरक कर्जा तइँ तँ सखी
बहुते देर धरि घुरिएलै हमरा लेल जहर

खिस्सा सुनि कऽ किछु ने बजलै चुप्पे रहलै तखन
बहुते कनलै आ पछतेलै हमरा लेल जहर

मोनक बात कहने रहियै अपना लोकसँ आ
अनचिन्हार सेहो लेलै हमरा लेल जहर

सभ पाँतिमे 2221-22-22-2221-12 मात्राक्रम अछि। दोसर आ चारिम शेरक दूनू पाँतिमे एक-एकटा दीर्घकेँ लघु मानबाक छूट लेल गेल अछि।

2

मोन सभहँक अचंभित छलै
चोर ऐठाम मंडित छलै

काज हुनकर बिलंबित मुदा
साज तँ द्रुतबिलंबित छलै

हाथ जोड़ल बहुत भेटि गेल
मोन सभहँक विखंडित छलै

ठोर केनाहुतो चुप रहल
तथ्य रखबासँ वंचित छलै

दुख बला पाँतिमे देखि लिअ
सुख बहुत रास टंकित छलै

दर्द बाँटब सहज नै बंधु
दर्द मोनक अखंडित छलै

सभ पाँतिमे 2122-122-12 मात्राक्रम अछि। तेसर शेरक पहिल पाँतिक अंतिम लघु छूटक तौरपर अछि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

कविप्रीतम कुमार निषादक

किछु कविता

किछु कविता

हँसनी-खेलनी

हँसनी-खेलनी आगु आऊ
कननी-खिजनी पाछु जाऊ।

मिथिलाक चिन्ता त्यागैत मैथिल
नव आशा केर दीप जराऊ।। हँसनी खेलनी...।

घर-आँगन दुअरा सुत्थड़ कए
गौंआँ-गौंधियाक मीत बनू
नेना-भुटकाक नव जिनगी लेल
करम योगी श्रमजीत बनू
ज्ञानी गुणी सपूत जनक भऽ
गामे गाम उपदेश सुनाऊ।।
हँसनी-खेलनी...।

शिक्षा औ संस्कारक रक्षण
दायित्त्वक संग कर्त्तव्य करू।
दारू नशा दहेज कुवृत्तिकेँ
त्यागि लोक दुर्भाग्य हरू।।
तहिना बाल-विवाह कुग्रह केर
कालग्राससँ गाम बचाऊ।।
हँसनी-खेलनी...।

राजनीतिकेँ धरम-करम संग
विश्व देश औ प्रान्त चलए
मुदा दुष्टपतिकेँ कटुनीति
नवतुरकेँ सौभाग्य छलए
ताहिसँ ईर्ष्या द्वेष औ लालचसँ
भटकल नव पीढ़ीकेँ बँचाऊ
हँसनी-खेलनी...।

एखनुक धरम धकेलू सन्तक
अजब-गजब लीला चमकल
यज्ञ समारोह उत्सव मंचसँ

भजन प्रवचनमे छल छमकल
जिनगी लोक नियमरत प्रीतम
ढोंगसँ घर-कुटुम्ब बचाऊ
हँसनी-खेलनी...।
¦

हिस्सा-बखड़ा

अजब-गजब भेल हिस्सा-बखड़ा
सुख लपकए सभ दु:ख दए ककरा
बुझनुकहो सभ देखबए नखरा
साँच नै मानत बूझत फकरा...।। 0।।

जिनगीक हँसी-खुशी भेल हम्मर
श्रम-दु:ख भोगथि माऽए बाप बम्मर
शौक-सेहन्ताक सेज आडम्बर
मरम-दरद सभ जानै दिगम्बर
दु:ख जोगथि जैँ श्रम पूजक छथि- 2
तेकरे सेज बिछाओन अखरा...।। 1।।

लोक-समाजोक रीतिअजब भेल
ज्ञान धरम विपरीत तरफ गेल
करमयोगी सन्तन अपयश लेल
कलह कुचाइल गाम-घर भरि गेल
गाइर गरव्वैल माइर मरव्वैल- 2
छाड़लकपटीक जल्ला-मकड़ा...।। 2।।

करमचारी-हाकिम आओर नेता
चोरनुक्की कए घूस कमेता
कोर्ट-कचहरी-थाना-संड़ेता
बेबस जनकेँ कष्ट बढ़ेता
छल-बल देखैत प्रीतमकलपए- 2
नेता-प्रशासनसेवत ककरा...।। 3।।
¦

हम नारी छी..!

हम नारी छी..! सुकुमारी छी, सुखकारी छी...।
मातृशक्ति जगसृष्टि संगिनी
लोक-पुरुष-श्रम प्रण प्यारी छी...। हम नारी...।। 0।।

वेद-पुराण-उपनिषद ग्रंथ सभ
आदि शक्ति अकानैए
ऋृषि-मुनी-कवि-साहित्य सापूत
हमरो सुयश बखानैए
सावित्री-अनुसूया-अहल्या
सीता सन दुखियारी छी...। हम नारी...।। 1।।

इतिहास औ भूगोल वृत्ति संग
जननी जन्मभूमि हम छी
अर्द्धनारीश्वरकेँ हम अंशिनी
ममत त्रिवेणीक संगम छी
प्रणय पर्व संग वामा उर्वशी
जकाँ दैव मनोहारी छी...। हम नारी...।। 2।।

युग परिवेश समाज बदलितेँ

हमरो नव नव रूप देलक
लक्ष्मीवाई-पद्मावती केँ
आभा कीर्त्ति कुरूप केलक
सावित्रीवाइफूले रजिया-
बेगम इन्दिरा प्यारी छी...। हम नारी...।। 3।।

ज्ञान-विज्ञानसँ हमहूँ सजलहुँ
गार्गी-मैत्रेयी भारती भऽ एलौं
नभ साकेतीनि-कल्पना प्रण लऽ
सफल सुनीताविलियम्स भेलौं
निरुपमापाण्डेय एवरेस्ट यात्रिणी
केर प्रण पालनहारी छी...। हम नारी...।। 4।।

एखनुक युग केर केहन सराप अछि
गामे-गाम सनकी बमकए
निशाखोर दारू लए उमकए
दहेजक दैत्य सेहो रमकए
तैं माऽए केर गर्भहिमे बेटीक
भ्रूण पलैत लाचारी छी...
हम नारी...।। 5।।

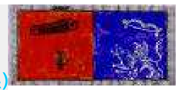
एहि युगमे स्त्री-स्तित्वक
मर्यादा अछि घिना रहल
चकरचाइल छलिया धनपति जन
विज्ञापन तन बना रहल
प्रीतम कलम बखानए नारीक
प्रण श्रम दुनियाँदारी छी...
हम नारी...।। 6।।
¦

हमरा के मारलक गै?

माऽए गै..! हमरा के मारलक गै??
तोहर कोइखक भ्रूण स्वरूपे
विधना जे अनलक गै...
माऽए गै हमरा के मारलक...
कएलैँ शौक-सेहन्ताक खेला
बनलौं पापक हमहीं झमेला
दुन्नू पराणीक दुर्मति कोप सँ
गरभ जँचा हमरे सँ डेरेला
सुन निष्ठुर दम्पति सम्भोगी
दुर्र! कोन पापी जँचलक गै...
माऽए गै हमरा के मारलक गै...।।1।।

तोँ जेना अएलैँ हमहूँ अबितौं
तोरे जकाँ एहि लोककेँ देखितौं
ब्रह्माण्डकेँ सृष्टिक साधन भऽ
हमहूँ जुग-जग गुण यश पबितौं
बेटी-बुझि उपचार बहन्ने
प्राणकेँ छिनलक गैऽऽ
माऽए गै... हमरा के मारलक गै...।।2।।

देख दिन-दिन हम घटल जाइ छी
दहेज तराजूपर जोखाइ छी।
चतुर बधिक बाजहु नहि दैए
अच्छैति औरदे हम जरि जाइ छी
काँचे उमेरमे दण्ड समाने


मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

कोना कऽ बियाहलक गै
माऽए गै हमरा के मालक गै...।। 3।।

समझ-सिखावए देश-सुशासन
लोक पूत शुभचिन्तक भाषण
कहै प्रीतम सम्हरू जगवासी
कन्याक अस्तित्त्व अछि मरणासन्न
ठोहि पारैए गर्भक बेटी
विधना पठौलक गै
माऽए गै हमरा के...।। 4।।
¦

ओ, के छथिन्ह?

ओ, के छथिन्ह
कने हमरो चिन्हऽ तँ दियऽ
ओ, किछु कहि रहल छथि
से हमरो सुनऽ तँ दियऽ
हुनकर गप्प दू टप्पी
शान्तचित्तसँ गुनऽ तँ दियऽ
ओ के छथिन्ह...।। 0।।

हुनक मोनमे किछु भड़ाँस छन्हि
एहि लोकक संस्कारसँ
जे, गौंआँ-समाज, घर-परिवार
वा रिश्तेदार संगे
सदिखन धर्म सम्प्रदाय
स्वार्थ ईर्ष्या द्वेष आओर
विषकुम्भी कलश लऽ जीवन यज्ञकेँ
विषाह बनाबऽमे अगुआ बनैए

तैं- हुनक भड़ाँस अनुचित नहि
तैं हिनक सहयोगमे
अलच्छा लोक सभकेँ
बिढ़नी-बिसपिपरी जकाँ
हमरो कनेँ बीन्हऽ दियऽ
ओ, के छथिन्ह
हमरो चिन्ह दियऽ...
ओ, के छथिन्ह...।।1।।

लागैए जेना, हुनका मोनमे
बहुतो संकल्प अछि
जे, आगत भविष्यक
सार्थक विकल्प अछि
हुनकर योजनामे
सेवा.... स्नेह... सहयोग...
वा सहिष्णुताक... कर्मोन्मुखी....
समर्पण भाव अछि
आवऽ वाला पीढ़ीक लेल
प्रागैतिहासिक अयनामे
गुणात्मक कार्य कौशलक
प्रतिबिम्ब अछि
तैं, फुसराहैट जुनि करू
आ एकाग्र होऊ
हुनकर दूटप्पीपर
हे यौ, देखू नैँ
हमरो मोन उमकैत अछि
जे, च्योट्टहिं हुनकर
अनुगामी बनि जाइ
हुनके जकाँ... एहि देश समाजक
संवेदना औ तृषा हेतु

संजीवनी रस तत्त्वकेँ
रोगियाहा शासक प्रशासक
वा चुप्पा लोकक लेल
त्रासदीक तृषा रसकेँ
कलजुगहा-कौलहापर रिन्हऽ दियऽ
ओ, के छथिन्ह
कने हमरो चिन्हऽ दियऽ...।।
ओ, के छथिन्ह...।। 2।।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

राकेश प्रेमचन्द्र‘पीसी’
पीसीके पाँच हाइकु

सासुर घर
सञ्जीवनक गाछ
अनूना पानि

अंग्रेजी बैध
छागर भोग लिला
घरैया रोग

प्रेमक मोह
शिवजी बम भोला
उलट फेर

जय श्री राम
संसार लेनदेन
भोजन गृह

हारक भोज

जीत पित्त लडाई
जन विधान

परिचयः
पूरा नामःराकेश प्रसाद चौधरी
जलेश्वर नगरपालिका ६
पत्रकार एवं अनुसन्धानकर्ता
प्रकाशित : खिचडी कविता संग्रह एवं फुटकर कथा, कविता, लेख ।
अप्रकाशित : फुलगाछ कविता संग्रह

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.अनुवादक डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु अनुदित काव्य (मूल रजनी छाबड़ा- हिन्दी) २. कवि डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु कविता

१

अनुवादक डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु अनुदित काव्य (मूल रजनी छाबड़ा- हिन्दी)
(PAGHALAIT HIMKHAND

Maithili translation of 'PaighalteHimkhand'
An Anthology of Hindi Poems by Rajni Chhabra from Hindi into Maithili by Dr. Sheo Kumar Prasad.)

केहेन भटकब

सगर धरणीक

सभ कोण

आइ ने कालिह

फुलेबे करतै

तखन काँटबला बाटसँ

ejournal 'विदेह' २५६ म अंक १५ अगस्त २०१८ (वर्ष ११ मास १२८ अंक २५६) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

किएक भटकब?

सुनै छी
काँटोमे छै
फूल फुलेबाक चलैन। q

बेमन जिनगी

अचानक जखन लागए लगए
बेमन जिनगी,
ठमैक जाय
एकाएक उल्लास,
तँ बुझि ली
हम बनि रहल छी कथा।

बीतल कथा बनैसँ
नीक अछि
इन्द्रधनुषक अन्तिम कोरसँ
लाल रंग लऽ
जिनगीकेँ पुनि
आसक रंगमे रंगि
आयास आ बिसबासक
दीप बारि ली। q

हिमखंड

पघलै छै बरफक पहाड़

ठिठुरलो सिनेहकेँ,
मधुआएल
बिसबासक
रौद तँ
दऽ कऽ देखियौ! q

ई केहन सत्तैर

कखनहुँ तऽ नेहक दू बुन्न
दऽ जाएत छै सिन्धु सन तोष।

कखनहुँ समुद्रो
पियास नहि मेटा पबैत छै।

नै जानि पियासक ई केहन
सत्तैर आ नाता छै! q

बन्न ठोर

बन्नो ठोरक
सेहो अपन जिह्वा होइत छै
गोट-गोट खिस्सा
आँखिये कहि दैत छै।

ई बुझि सकैत अछि
एसगरे नेहसँ भरल हृदय

सगर संसार
एहि बातसँ अनभिज्ञ
रहैत छै। q

केना बिसैर सकै छी?

हम बिसैर सकै छी हुनका
जे हमरा संग
हमर सुखमे
साझी भऽ ठहक्का लगौने छथि।

मुदा हम किन्नहुँ बिसैर सकै छी हुनका
जे हमर दुखक संग
बिनु कहने नोर
बहेने छथि? q

घरक पाग

वृद्धजन छथि
घरक पाग
के नकारत
एहि सत्यकेँ
कोनो टा सभ्य समाज।

ओ छथि घर-आँगनक बरक गाछ,
सुकुमार लतासन भविषक खारही

हुनकेसँ लटपटाइत
पाबि सकैत अछि अधार
बढ़ौने रहि सकैत छथि लिलसा।

अनुभवक बोझ अतिभारी
तहूसँ दोहरी भेल छैन डाँर।

किछु कड़ू किछु खटगर मिठगर अनुभव
दोहराबैत चुप भऽ
सोनसन रौदमे लैत खुमारी।

अनुभवक ओ खान संजोगने
टकटकी लगा ताकि रहल छथि
अपन हिस्सा केर विरानी।

पुतोहु बेटा केर सभ किछु भेटैन
घर-बाहर संग किट्टी-पाटी
बच्चा पढ़ैले जाइ छैन
पाठशाला वा होस्टलमे
तैयो डर एकान्त बासमे
बिगाड़ि देतैन ई दादा-दादी।

घरक अन्हरिया कोणमे
समेटल खाट-पलंग सन
आकुल-व्याकुल मनक
किनका सुनेता बेथा।

संस्कार नहि घरक बात ई
केना निकालता बाहर
वृद्धाश्रमसं बाँचल छथि ओ

बँचबैत घरक लाज।

अपननहि घर अवहेलित
आइ अछि
घरक ऊँचका पाग।

जेठ नागरिक दिवसपर
बेटा-पुतोहुक संग
पाबि मान केर मंच
क्षण भरिक खुशी पाबि,
पुनि सन्हिया जाइ छथि
अपन हिस्साक कोणमे
बनि बितलाहा काल्हि।

बितलाहा काल्हि आ आजुक आइ
जँ मिलि सकए एकसंग
विकासक बाटपर
बढ़ि सकैत अछि अपन समाज। q

खेलौना सन

हे भगवान!
सभ घरमे
खेलौना सन
बच्चा दियौ
आ बच्चे सन खेलौना।

सुखक नीन

आ बिछौना सेहो दियौ
नेहक छाँह
तैसंग सुन्नर सपना दियौ।

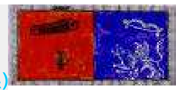
किल-किलाइत रहए
खिल-खिलाइत रहए
आँखिमे ने कहियो
नोर भरए दियौ। q

घर आओर मकान

जाहि नगरमे
हमर घर
हमरा जतए तेज आ दाना भेटल
वएह हमरा लेल
स्वर्ग सन
असरा अछि।

जाहि शहरमे
हमर मकान
आ जीबाक समान
ओतहि जीबाक सुख
आ एसगरुआ जिनगीक ठेकान अछि। q

एहेन कोन जीयब



एहेन कोन जीयब
कि जीयब
एकटा लचारी लगए।

किएक ने करी एहेन
किछु काज
कि हमरा मुइला पछाइत
ई संसार
हमरा बिनु
अधखड़ू लगए। q

बहए दियौ जिनगीकेँ

दर्शनक फेरिमे
जुनि ओझराउ विचारकेँ
शब्दक मकड़जालमे
जुनि ओझराउ चालिकेँ।

बहए दियौ जिनगीकेँ
विमल अबाध धार सन
कहए दियौ मनकेँ भाव
सोझ सहज कविता सन। q

२

कवि डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु कविता

मनोरथ

सभ दिन बीतल जिनका संगे
ओ सभ कोसो दूर बसैथ

मन रहितो हम पहँच ने पाबी
मनमे बलू नजीक रहैथ।

ओ दिन आब फेर घूरि ने औतै
नेहक फाँस अछि कूहि रहल
जे जतए छी चाहैत छी औहिना
क्यो कतबो बलु दूर रहथि। q

वेलेनटाईनक बात

जेहने तोँ छेँ तेहने सेंए छौ
दुनू छेँ बुड़बक,
सभ कोइ वेलेनटाईन मनेलकै
तोँ रहलेँ अलबट्ट।

एकटा कोढ़ही तोड़ि कऽ लऽ आन
साँएक दहिन हाथ,
कहिहैन हेप्पी वेलेनटाईनजी
बुझलहिन खह्रकट्ट। q

बसंत

आबए बसंत गाबए बसंत
मन मधुकरकेँ फुसलाबए बसंत
अलिकुल उड़ैत गाबैत बसंत
टिकुलिक पाँखिपर उड़ैत बसंत
आबए बसंत...।

आमक पल्लव लागल बसंत
मधुमाछिक मन उड़बैत बसंत
सरिसबक हँसैत पियर पियर
फूलोक संग हिलसैत बसंत
आबए बसंत...।

हर्षित बसंत पुलकित बसंत
पल्लव पल्लव मंजरित बसंत
हरियर-पियर धरणी जननी
सबके मनमे सिहकैत बसंत
आबए बसंत गाबए बसंत। q

बसंती भोर

बसंती भोर
सिहकैत ठोर
गाबैत अछि
नाचैत अछि
ता धिन्ना
ता धिन्ना
धिन्न धिन्ना
मनक मोर। q

कर्मक बाट

चल रे मनुआँ कर्मक बाट
कर्म बिना किछु मिलए ने जगमे
कर्मे बिकतए जगकेर हाट।

सुरुजो चान नित्तहुँ उगए
बाट बटोही तहिना
हमहूँ किएक ने पकड़ी बाट।
चल रे मनुआँ...।

रोग बियादि नित्त लगले रहतए
झगड़ो-झंझट लगले रहतै
हम किएक बैठब बिन काज।
चल रे मनुआँ...।

कर्मेसँ संसार चलै छै
चुट्टी पिपरी जीवो-जन्तू
सभ चलै छै करमे बाट
चल रे मनुआँ कर्मक बाट...। q

बिसबास

शरम भरमसँ जीबि ली
कलयुग अछि अतिकाल

बिना केने किछु
मिलत की
केने भेटत तत्तकाल।

खूब गुलछर्डा उड़ा लेलहुँ
जा छल तनमे शक्ति,
तीन पनक आब
अन्त अछि
करबाक अछि आब भक्ति।

हम छी प्रेमी प्रेम केर
प्रेम बिना सभ सून

टाका कैंचा की करब
आँखि लेब जब मुइन।

करजा लऽ कऽ नहि मरी
मनमे अछि अभिलाष।
पाँच लोक मिलि जारि देत
अछि एतबा बिसवास। q

थकावैट

रतुका जागल नीनक मातल
एखनहु भासैत देह
नव वर्षमे नव-नव चिन्तन
नव-नव देखल भेष।

राजनीति केर कपट कोरमे
क्यो नहि रहता चैन
के अछि गुरु के अछि चेला
किनको अछि नहि मानि।

बहुत कठिन अछि लंगर झंगर
झुझुआएल अछि मऽन
बात करब आब नहि अछि सम्भव
थाकि गेल सभ तन। q

गुलाब

लाल-पियर देह संग मनमे उमंग छौ
वाह रे गुलाब तोहर केहन सुगंध छौ।

काँटसँ देह भरल तैयो हँसैत छैँ

केहन छौ मन सुन्नर सभ कियो चाहैत छौ।
वाह रे...।

हावाक संग संग झूमैत रह अहिना
शीत रौद वात घाम तोरा लेल एक छौ।
वाह रे...।

तोरा सन मन धन केकरा मिलैत छै
तोरा तँ देख देख दुनियाँ ललैत छौ।
वाह रे...।

अहिना तँ मनुषोक जिनगी मिलैत छै
सुख दुखक पाटमे सभ ओझराएल छौ
वाह रे गुलाब तोहर केहन सुगंध छौ। q

अपन

चिन्हल रेह
अप्पन गेह
सिनेहक मेह
घुप अन्हरियोमे
भेटिये जाइत छैक। q

अगहन पूष

कखनहुँ अगहन कखनहु पूष
भेल नेवान फेर भेल पुषौंठ
कखनहुँ चूड़ा गूड़ विशेष
कखनहूँ बगिया लाई सनेस
मन हुए तँ पबितो जाउ
नहि तँ दिनक दिन

जलखै खाउ। q

जुआनिक बोखार

साँझ भेल ओझल भेल
जहादोक मस्तूल
संगहि छै डुमए लेल
सुरजो अन्हारमे,
सभ किछ डुमि जेतै
साँझक विलासमे
जेना जाइ छै डुमि सभ किछु
जुआनिक बोखारमे। q

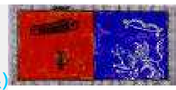
ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

आगाँक अंक

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल



दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ २०१८ मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

Videha_15_01_2018

Videha_01_01_2018

Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/

विदेह सम्मान: *सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA


सिद्धिरस्तु